ज्येष्ठ अंक

Pre paid upto HP/48/SML (upto 31-12-2026) RNI NO. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

वैसाख-ज्येष्ठ, युगाब्द 5126, मई 2024

लोकतंत्र का महापर्व

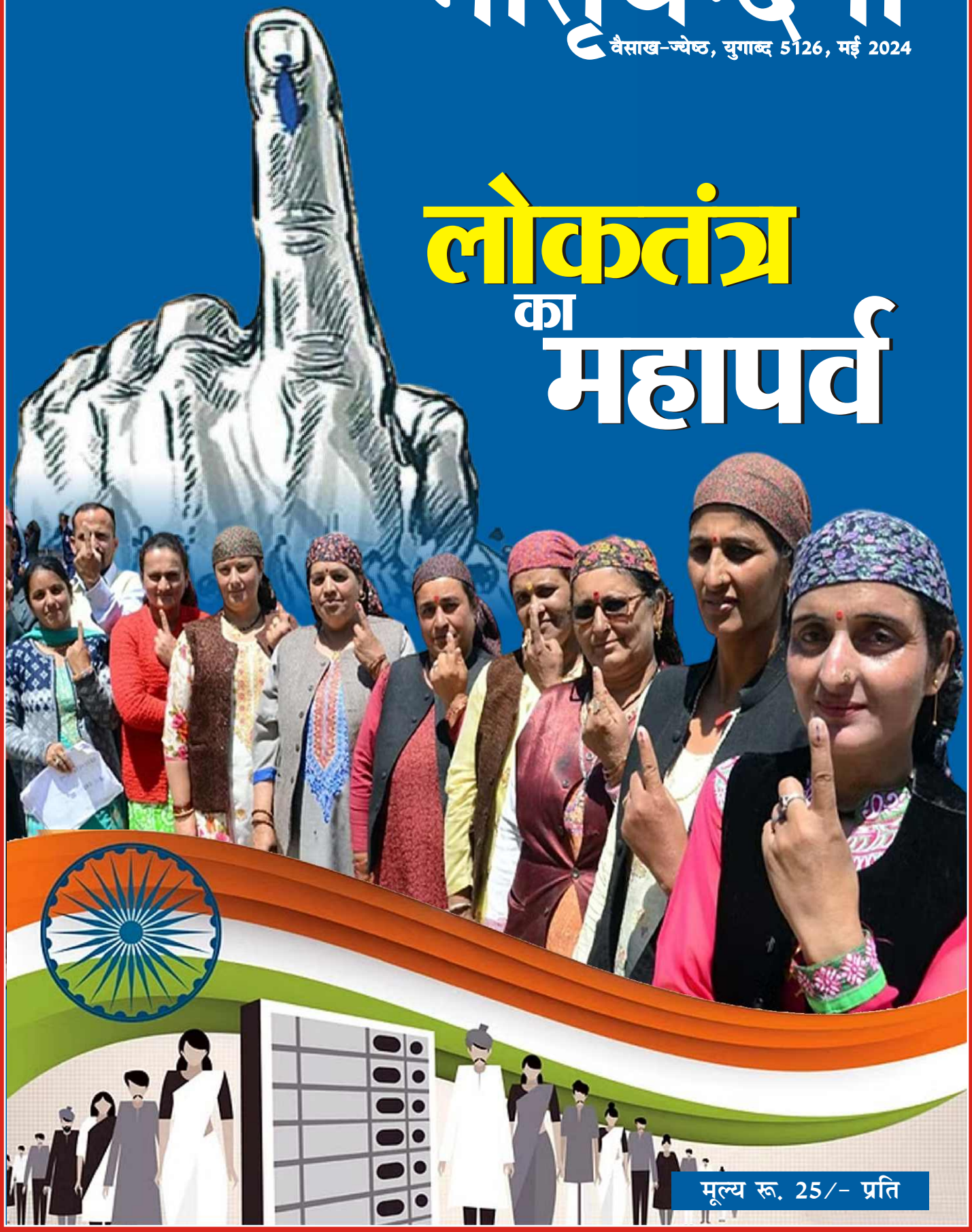

मूल्य रू. 25/- प्रति

हिमाचल में 1 जून को मतदान

भारत भक्ति का आह्वान, देशहित में हो शत प्रतिशत मतदान

लोकसभा चुनाव भारत के उज्जवल भविष्य हेतु चुनाव है

अत : पहले सोचें, समझें, पहचान करें और फिर मतदान करें

किसे करें मतदान.....?

1. देश भक्तों का सम्मान करने वाले विचार को या फिर देश-द्रोही कानून को निरस्त कर देशद्रोहियों का सम्मान करने वालों को।
2. आतंकवादियों को शत्रु देश में घुस कर मारने वालों को या फिर आतंकवाद को आश्रय देने वालों को।
3. ईमानदार, परिश्रमी, बेदाग छवि की सरकार चलाने वालों या घोटालों पर घोटाले कर देश को लूटने वालों को।
4. देशहित में निर्णय लेकर दुनिया में भारत का मान बढ़ाने वालों तथा विश्व को योग व आयुर्वेद का ज्ञान देने वालों को या फिर अपने स्वार्थ के लिए लोक लुभावन प्रलोभन देने वालों तथा मुफ्तखोरी को बढ़ावा देने वालों को।
5. अपने देश को दुनियां में सर्वश्रेष्ठ, आत्मनिर्भर, स्वच्छ, विकसित तथा भ्रष्टाचारमुक्त बनाने के लिए अनथक परिश्रम करने वाले विचार को या अपने पापों और भ्रष्टाचार के भय से जेल यात्रा के डर से इकट्ठे होने वालों को।
6. मातृशक्ति का सम्मान करने वाले विचार को या मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक और हलाला के नरक में धकेलने वालों को।
7. सेना का सम्मान करने वाले विचार को या फिर बार-बार प्रमाण पूछ कर सेना का मनोबल गिराने वालों को।
8. भारतीय संस्कृति का सम्मान एवं संरक्षण करने वाले और भारतीय पुरातात्विक धरोहर का संरक्षण करने वाले संकल्प को या अपनी संस्कृति का अपमान कर विदेशी संस्कृति को बढ़ावा देने वालों को।
9. आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य एवं विज्ञान के क्षेत्र में भारत को दुनिया में महाशक्ति के रूप में खड़ा करने वाले विचार को या दुनिया के डर से देश को दब्बू बनाने वालों को।
10. समाज को सत्ता स्वार्थ के लिए अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण, जाति, धर्म के आधार पर बांटने वालों को या सम्पूर्ण समाज का एक समान विकास करने वाले विचार तथा सामाजिक समरसता के भाव को सुदृढ़ करने वालों को।
11. घुसपैठियों को देश से बाहर खदेड़ने वाले विचार को या वोट की खातिर घुसपैठ को प्रोत्साहन और आश्रय देने वालों को।
12. भारत की एकात्मता के लिए काम करने वालों को या एक देश में दो विधान, दो प्रधान, दो निशान का राग अलापने एवं देश को तोड़ने वालों के समर्थन में उपवास और धरने पर बैठने वालों को।
13. विश्व में भारत का सम्मान बढ़ाने वाले विचार को या विदेशों में देश की कमियां उजागर करने वाले विचार को।
14. अंतरिक्ष में भारत का परचम लहराने वाले विचार को या धरातल पर धराशायी होने वाले विचार को।
15. धारा 370 और 35-ए को निरस्त करने वाले विचार को अथवा उसे पुन : लागू करने वाले विचार को।
16. राममंदिर निर्माण, काशी विश्वनाथ परिसर तथा अन्य धार्मिक स्थलों को भव्यता प्रदान करने वाले विचार को या राम के अस्तित्व को ही नकारने वाले विचार को।
17. हिमाचल को वन्दे भारत रेल, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान बिलासपुर, अटल मेडिकल कालेज नेरचौक तथा राष्ट्रीय उच्च मार्ग देने की सुविधाएं देकर चहुंमुखी विकास करने वाली राष्ट्रवादी सोच को अथवा विकास के नाम पर बजट के अभाव का ढिंढोरा पीटने वालों को।

देश मेरा, मैं देश के लिए, मेरा वोट देश के लिए

आप का वोट कीमती है, इसलिए मतदान जरूर करें

लोकतंत्र के महापर्व में सभी अपनी भागीदारी करें सुनिश्चित

लोकतंत्र के महापर्व - हिमाचल में 1 जून को मतदान

मातृवन्दना संस्थान का प्रकाशन

मातृवन्दना

वर्ष: 32 अंक : 05 | वैशाख-ज्येष्ठ, कलियुगाब्द 5126, मई 2024

प.पु. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी 19 अप्रैल 2024 को नागपुर में मतदान के पश्चात् मीडिया को दिए गए वक्तव्य में सभी से राष्ट्रहित में मतदान करने की अपील करते हुए

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक
डॉ. कर्म सिंह, वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल
मीनाक्षी सूद, डॉ. उमेश मौदगिल, डॉ. जय कर्ण, डॉ. सपना चंदेल, हितेन्द्र शर्मा

वितरण प्रमुख
जय सिंह ठाकुर

पत्रिका प्रमुख / सह प्रमुख
डॉ. राजेश शर्मा / डॉ. मंगतराम

कार्यालय
मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला, हि.प्र., दूरभाष : 0177-2836990
E-mail: matrivandanashimla@gmail.com
Web.: www.matrivandana.org

प्रकाशक एवं मुद्रक : कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेज-9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित। **संपादक : डॉ. दयानंद शर्मा**

मासिक शुल्क	₹25
वार्षिक शुल्क	₹150
आजीवन शुल्क	₹1500

वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका मे छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरुरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

संपादकीय	लोकतंत्र का महापर्व	5
चिंतन	समरसता रणनीति नहीं...	6
आवरण	लोकतंत्र का सजग प्रहरी	7
महिला जगत्	राष्ट्रसेवा को समर्पित...	12
संगठनम्	श्रीराम मंदिर से राष्ट्रीय पुनरुत्थान...	14
देश प्रदेश	भारतीय सेना को मिली...	17
स्वजागरण	जन्मभूमि मंदिर में श्रीरामलला...	18
देवभूमि	हिमाचल में चुनाव	20
विविध	सनातन पर चोट क्यों?...	23
कृषि	हिमाचल में फूलों से लदे कचनार	24
काव्य जगत्	कब तक गुड़िया...	25
स्वास्थ्य	चूल्हे से चौराहे तक खान-पान...	26
समसामयिकी	सारा भारत मेरा परिवार...	27
घूमती कलम	विश्व पटल पर नए भारत...	29
विश्व दर्शन	भारतीय अर्थव्यवस्था में हो रहे...	31
युवा पथ	किशोरावस्था में नशे की लत..	32
प्रतिक्रिया	डॉ. भीमराव अम्बेडकर...	33
बाल जगत्	शुद्ध अंत:करण ही असल तीर्थ	34

पाठकीय...

महोदय,

मातृवन्दना मासिक पत्रिका का जनवरी 2024 का अंक पढ़ने को मिला। पूर्व की भांति छपी तमाम सामग्री ज्ञानवर्द्धक एवं मनोरंजक लगी। खास तौर पर सम्पादकीय 'अनुच्छेद 370 की समाप्ति पर सर्वोच्च न्यायालय की मोहर', 'शिवाजी महाराज की सबसे बड़ी विजय', 'रसोई में भोजन बनाना छोड़ने का दुष्परिणाम जरूर समझें' महिला त्याग की मूर्ति व समर्पण की पराकाष्ठा-नेहा चौहान। इसके अलावा 'कांगड़ा जनपद का लोहड़ी का त्यौहार: रमेश चन्द्र मस्ताना', 'पूरा विश्व एक परिवार:भागवत', काव्य जगत में 'प्रभु श्रीराम के चरणों में : डॉ. कर्म सिंह', घूमती कलम में काले धन की नकदी में साहू बने सरताज:हितेन्द्र शर्मा, प्रतिक्रिया में 'हिमाचल में नशाखोरी का फैलता जाल चिंताजनक', युवा पथ समेत बाल जगत् की सामग्री पढ़ कर बेहद रुचिकर लगी। कृपया आगे भी इसी तरह मातृवन्दना के अंक नियमित तौर पर भेजकर कृतार्थ करें।

भीम सिंह परदेसी, महादेव मंडी, हि.प्र.

महोदय,

मातृवंदना के सदस्यता अभियान के दौरान मातृ वंदना मासिक पत्रिका का मार्च-अप्रैल श्री राम जन्मभूमि मंदिर विशेषांक प्राप्त हुआ। पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर प्राण प्रतिष्ठा के दौरान श्री रामलला के प्रथम दर्शन का चित्र पुण्य लाभ अर्जित करने का सौभाग्य प्रदान करता हैं। इसी आवरण पृष्ठ पर श्री राम मंदिर की भव्य झलक के साथ श्री रघुनाथ जी की कुल्लू दशहरा के अवसर की शोभायात्रा की झांकी का सुंदर चित्र और अयोध्या से कुल्लू पधारे श्री राम जी का सुंदर विग्रह रामभक्तों के मन को अत्यंत प्रसन्नता देने वाला है। यह अंक इस दृष्टि से भी ऐतिहासिक बन पड़ा है कि इस अंक में श्री राम जन्मभूमि आंदोलन का इतिहास, सदियों का संघर्ष और कार सेवकों के बलिदान के स्वर्णिम इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। इस पत्रिका के माध्यम से विगत 500 वर्षों के इतिहास को जानने का मौका मिलता है और उससे यह आभास होता है कि कई पीढ़ियों के संघर्ष के बाद अयोध्या में भगवान श्री राम की जन्मभूमि के पावन स्थल पर दिव्य श्री राम मंदिर का शिलान्यास और प्राण प्रतिष्ठा हो सकी है। वास्तव में यह हमारी पीढ़ी के लिए एक ऐतिहासिक अवसर है कि हम प्रत्यक्ष में प्राण प्रतिष्ठा के विश्वव्यापी उल्लास, पूजा अर्चना और भव्य कार्यक्रम के साक्षी बन सके हैं। मातृ वंदना पत्रिका का संपादक मंडल और सभी लेखक इस अंक के लिए बधाई के पात्र हैं। भविष्य में भी यह प्रयास जारी रहना चाहिए ताकि मासिक पत्रिका के साथ-साथ वार्षिक विशेषांक की यह परंपरा बनी रहे। **- राजेंद्रा शर्मा हरदासपुरा चंबा, हि.प्र.**

महोदय,

श्री राम जन्मभूमि मंदिर विशेषांक मातृवंदना का एक का सफल और सार्थक प्रयास है। इस पत्रिका के माध्यम से श्री राम मंदिर आंदोलन, हिमाचल में कार सेवकों का योगदान, अयोध्या के इतिहास, संस्कृति और हिमाचल प्रदेश के लोक साहित्य में रामायण की प्रासंगिकता आदि विभिन्न विषयों पर उपयोगी सामग्री का संकलन प्रसंशनीय है। इस दृष्टि से यह वार्षिक विशेषांक सुंदर बन पड़ा है। पत्रिका के संपादक मंडल का अनुभव और सफल प्रयास फलित होता हुआ प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। यह पत्रिका राम मंदिर निर्माण में साधु संतों, महात्माओं, राजनेताओं, संस्थानों के योगदान को रेखांकित करती है। इसके साथ-साथ न्याय प्रक्रिया के विभिन्न चरणों में प्राप्त होने वाली सफलता और न्यायालय के सर्वसम्मत निर्णय की भी इस पत्रिका में जानकारी मिलती है।

भव्य राम मंदिर निर्माण के उद्घाटन और प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पूरे देश में एक अलौकिक और भक्तिमय वातावरण रहा है, जिसको मातृवंदना के इस विशेषांक में चिरंजीवी बनाए रखने के लिए उपयोगी सामग्री को शामिल किया गया है। राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के भव्य कार्यक्रम की तस्वीर आंखों के सामने दिखाई देने लगती है। इस ऐतिहासिक क्षण को मातृ वंदना में संचित करने का प्रयास सराहनीय है। पत्रिका के संपादक मंडल और सभी संबंधित जनों को हार्दिक बधाई।

-शकुंतला देवी नवांशहर पंजाब

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें
0177-2836990 7650000990
ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com
सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को होली पर्व एवं बाबा भीमराव अम्बेडकर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस मई 2024)

गुरु अर्जुनदेव जयंती	2 मई
रविन्द्रनाथ जयंती	7 मई
सूरदास जयंती	12 मई
सीता नवमी	17 मई
नरसिंह जयंती	21 मई
आद्य शंकराचार्य जयंती	22 मई
नारद जयंती	24 मई
वीर सावरकर जयंती	29 मई

संपादकीय

डॉ. दयानंद शर्मा
सम्पादक, मातृवन्दना

लोकतंत्र का महापर्व

देश में नववर्ष के प्रारंभ में ही लोकतंत्र का चुनावी महापर्व शुरु हो चुका है। लोकतंत्र उस शासन व्यवस्था का नाम है जिसमें जनता द्वारा चुनी हुई सरकार हो। चुनी हुई सरकार लोकतंत्र के लिए आवश्यक है। लोकतंत्र एक चिंतन शैली, एक मनोविज्ञान और समग्र राष्ट्र जीवन को सुखी और सफल बनाने की एक आदर्श युक्ति है। लोकतंत्र की मूलधारणा में जनता का कल्याण, उत्त्थान और जनहित की भावना है। भारतीय लोकतंत्र की नींव सत्य, अहिंसा, समाजसेवा, राष्ट्र की अखण्डता, सम्प्रदाय निरपेक्षता तथा सर्वांगीण विकास के संकल्प पर रखी गई थी। हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र हैं। चुनाव लोकतंत्र के सूत्रधार हैं, ये जनता को अपना प्रतिनिधि चुनने का अवसर प्रदान करते हैं। यह मात्र एक माध्यम है, जो इस बात का निर्धारण करता है कि जनता किसे शासन का उत्तरदायित्व सौंपना चाहती है। लोकतंत्रीय विचारधारा का सही अर्थ समझने के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि लोकतंत्र की आत्मा और शरीर पृथक्-पृथक् हैं। चुनाव प्रक्रिया वास्तव में लोकतंत्र का शरीर है। लोकतंत्र की आत्मा का सम्बन्ध लोकतंत्रीय शासन व्यवस्था के मूल उद्देश्यों, उसके सार एवं उनकी पूर्ति हेतु अपनाये जाने वाले उपायों के पृष्ठ में छिपी भावना से है। यह भावना जुड़ी है ऐसी शासन व्यवस्था से जिसमें गरीब से गरीब, दुर्बल से दुर्बल व्यक्ति को भी उतने ही अवसर प्राप्त हों, जितने अमीर से अमीर और सबल से सबल व्यक्ति को मिलते हैं। लोकतंत्र का आधारभूत तत्त्व अधिक से अधिक व्यक्तियों का अधिकतम कल्याण है।

विश्व में सबसे बड़े लोकतंत्र के सुदृढ़स्वरूप की आधारशिला यहां की स्वस्थ एवं निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया है। हमारे संविधान में यह व्यवस्था है कि हर पांच वर्ष बाद केन्द्र व राज्य सरकारों को चुनाव द्वारा जनता का विश्वासमत प्राप्त करना होता है। चुनाव के इस महापर्व में पक्ष-विपक्ष एवं क्षेत्रीय दल अपने वैचारिक, सैद्धांतिक पक्ष को मतदाताओं के समक्ष रखकर, देश के विकास हेतु किये गये तथा चयनित होकर किए जाने वाले कार्यों एवं भावी योजनाओं का विवरण प्रस्तुत कर उन्हें प्रभावित एवं आकर्षित करने का प्रयास करते हैं। चुनाव आयोग द्वारा निर्धारित आचार संहिता का अनुपालन प्रत्येक दल को करना पड़ता है। दोषी पाये जाने पर चुनाव से भी बहिष्कृत किया जा सकता है। अब चुनाव प्रक्रिया में उत्तरोत्तर संवेदनशीलता एवं अनुशासन का ह्रास दृष्टिगत हो रहा है। दलगत राजनीति के दल-दल में जब चुनावी लहरों का बवंडर घूमने लगता है तो पक्ष और विपक्ष आरोपों-प्रत्यारोपों का कीचड़ एक-दूसरे पर उछालना शुरू कर देते हैं। उनकी बातों में कहां कितनी सच्चाई होती है, कोई नहीं जानता। इस चुनाव में कांग्रेस और वामपंथी जैसे राष्ट्रीय दल प्रधानमंत्री मोदी के समक्ष स्वयं को बौना समझते हुए अन्य क्षेत्रीय दलों के साथ चुनाव पूर्व गठबन्धन कर सत्तासीन भाजपा को सत्ता से हटाने के लिए नित नये चुनावी हथकंडे अपना रहे हैं। बेरोजगारी, महंगाई के मुद्दों के साथ-साथ ई.डी./सी.बी.आई. जैसी संस्थाओं के दुरुपयोग को मुद्दा बनाकर प्रधानमंत्री मोदी को तानाशाह घोषित कर रहे हैं। उनका यह भी आरोप है कि केजरीवाल, हेमंत सोरेन जैसे बड़े नेताओं को इसलिए जेल में डाला जा रहा है, ताकि वह चुनाव प्रचार में भाग न ले सके। जबकि उनको जेल भेजना एक कानूनी प्रक्रिया है। दूसरी ओर ज्यों-ज्यों चुनाव नजदीक आ रहे हैं, विपक्षी दलों में बिखराव शुरू हो गया है। बड़े-बड़े नेता भी कांग्रेस को छोड़ कर जहां उन्हें अपना भविष्य सुरक्षित दिख रहा उन दलों से जुड़ते जा रहे हैं। वस्तुत: सच्चाई यह है कि डूबते जहाज में कौन सवार होना चाहता है। सम्पूर्ण विश्व जानता है कि देश का नेतृत्व जिस नेता के हाथ में है, वह न केवल भारत के अपितु विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता बन चुके हैं। सन् 2014 से सत्ता संभालने वाले प्रधानमंत्री ने अपने कार्यकाल में देश के विकास में कई कीर्तिमान स्थापित किये हैं।

सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ सबसे कमजोर तबके तक समान रूप से पहुंचाने में ही लोकतांत्रिक व्यवस्था की सार्थकता सिद्ध होती है, जिसे केंद्र सरकार पूर्ण करती हुई दिखाई देती है। करोड़ों की संख्या में बेघरों को घर बनाकर देना, प्रत्येक घर के लिए शौचालय निर्माण, 80 करोड़ गरीब लोगों को मुफ्त राशन और मुफ्त गैस कनेक्शन, 5 लाख रूपए तक के ईलाज के लिए आयुष्मान योजना, घर-घर तक पानी का नल आदि ढेर सारी योजनाएं हैं जो गरीबी रेखा से नीचे जी रहे लोगों के लिए वरदान सिद्ध हो रही हैं।

केंद्र सरकार के विगत कार्यकाल में राष्ट्रीय स्तर पर चुनाव पूर्व संकल्प पत्र के आधार पर लिए गए निर्णयों में अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण, 370 अनुच्छेद और 35-ए की समाप्ति, 33 प्रतिशत सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित करना, तीन तलाक पर नियंत्रण, सी.ए.ए. (नागरिक संशोधन बिल) को लागू करना केंद्र सरकार की विश्वसनीयता को बढ़ाता है।

विश्व स्तर पर भारत की छवि में न केवल सुधार हुआ है अपितु भारत महाशक्ति के रूप में उभर कर सामने आ रहा है और तीव्र गति से बढ़ती हुई विश्व की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। सशक्त विदेश नीति, सशक्त सैन्य बल, अन्तरिक्ष अभियानों की सफलता, कोविड काल में सभी भारतीयों के लिए वैक्सीन निर्माण एवं उसकी उपलब्धता तथा अन्य देशों को भी वैक्सीन एवं अतिरिक्त सहायता प्रदान करना, जी-20 की अध्यक्षता तथा जी-20 के शिखर सम्मेलन का सफलतम आयोजन आदि ऐसे कार्य हैं, जिनके कारण विश्व भारत का लोहा मानने लगा है। स्टार्ट अप, मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, देश में आधारभूत ढांचे (भवन, राजमार्ग, रेलवे ट्रैक आदि) में अप्रत्याशित वृद्धि तथा कर व्यवस्था में सुधार से भारत विश्व की तीसरी बड़ी आर्थिक शक्ति बन सकता है। यदि इस चुनाव में राष्ट्रहित में कार्य करने वाले राष्ट्रवादी दल को भारतीय जनमत का पूर्ण समर्थन प्राप्त होता है। विकासोन्मुख एवं बहुमत विचार वाली सुस्थिर सरकार ही विकसित भारत की कल्पना को साकार कर सकती है।

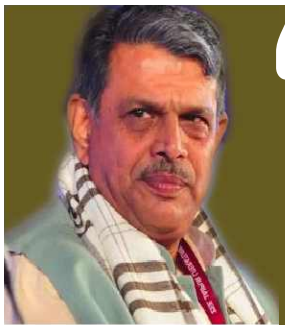

'समरसता'

रणनीति नहीं, निष्ठा का विषय है - संघ

सम्पूर्ण समाज को जोड़कर सामाजिक परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ने का संघ का संकल्प

सामाजिक समरसता यह संघ की रणनीति का हिस्सा नहीं है, वरन् यह निष्ठा का विषय है। सामाजिक परिवर्तन समाज की सज्जन-शक्तियों के एकत्रीकरण और सामूहिक प्रयास से होगा। सम्पूर्ण समाज को जोडक़र सामाजिक परिवर्तन की दिशा में आगे बढऩे का संघ का संकल्प है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पुनर्निर्वाचित सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने प्रतिनिधि सभा स्थल में आयोजित प्रेस वार्ता में यह जानकारी दी।

सरकार्यवाह जी ने जोर देकर कहा कि रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा की ऐतिहासिक घटना से समाज की सक्रिय भागीदारी का व्यापक अनुभव सबने किया है। नागपुर में चल रही त्रि-दिवसीय अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में दत्तात्रेय होसबोले जी का सर्वसम्मति से अगले तीन वर्ष (2024-2027) के लिए सरकार्यवाह के रूप में निर्वाचन हुआ। आज प्रतिनिधि सभा स्थल के महर्षि दयानंद सरस्वती परिसर में आयोजित प्रेस वार्ता में अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर जी ने उनके निर्वाचन की जानकारी देकर उनका अभिनंदन किया। प्रेस वार्ता में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए सरकार्यवाह जी ने कहा -

- समाज में इसके संदर्भ में कोई भी वैमनस्य, अलगाव, बिखराव या एकता के विपरीत कोई बात न हो। इसके प्रति समाज जागृत रहे। संघ का कार्य देशव्यापी राष्ट्रीय अभियान है।
- चुनाव देश के लोकतंत्र का महापर्व है। देश में लोकतंत्र और एकता को अधिक मजबूत करना और प्रगति की गति को बनाए रखना आवश्यक है। संघ के स्वयंसेवक सौ प्रतिशत मतदान के लिए समाज में जन-जागरण करेंगे।
- हम सब एक समाज, एक राष्ट्र के लोग हैं। आगामी 2025 विजयादशमी से पूर्ण नगर, पूर्ण मंडल तथा पूर्ण खण्डों में दैनिक शाखा तथा साप्ताहिक मिलन का लक्ष्य पूरा होगा।
- संघ के कार्य का प्रभाव आज समाज में दिख भी रहा है। संघ के प्रति समाज की इस आत्मीयता के चलते उसके प्रति कृतज्ञता का भाव है। संपूर्ण समाज संगठित हो, यही संघ का स्वप्न है।
- पर्यावरण की रक्षा, सामाजिक समरसता, ये किसी एक संगठन का अभियान नहीं, वरन् पूरे समाज का है। देश में अनेक छोटे गांवों में ऊँच-नीच और छुआछूत दिखाई देती है। शहरों में इसका प्रभाव बहुत कम है। अत: समरसता का भाव होना चाहिए।
- गांव के तालाब, मन्दिर और श्मशान को लेकर समाज में कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए।
- सन्देश खाली के अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा मिले, इसके लिए पीडित महिलाओं के प्रतिनिधिमंडल ने भारत के राष्ट्रपति से निवेदन किया है। संघ के सभी कार्यकर्त्ता व प्रेरित संगठन हर स्तर पर सक्रिय रूप से साथ खड़े हैं।
- हम माइनॉरिटिज्म पॉलिटिक्स का विरोध करते हैं। द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरु जी के काल से लेकर अब तक के सभी सर संघ चालकों ने मुस्लिम और ईसाई नेताओं से संवाद कर समन्वय बनाने का काम किया है।
- पिछले दिनों मणिपुर में कुकी और मैतेयी समुदायों के बीच हुए संघर्ष में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने समन्वय की प्रभावी भूमिका निभाकर समाज में सौहार्द स्थापित किया है।

अक्टूबर 1947 में, भारत के आज़ाद होने के तुरंत बाद, पाकिस्तानी सेना कश्मीर की सीमा तक पहुँच गई थी। राजनीतिक नेताओं की सारी कोशिशें नाकाम हो चुकी थीं। समय बीत रहा था। इन स्थितियों में सरदार पटेल ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख एमएस गोलवलकर जी को एक संदेश भेजा, जिसमें उनसे अनुरोध किया गया कि वे अपने प्रभाव का उपयोग करके महाराजा पर भारत में विलय के लिए दबाव डालें। 'गुरुजी', जैसा कि उन्हें प्यार से बुलाया जाता था, ने सभी कार्यक्रम रद्द कर दिए और इस नाजुक मामले को सुलझाने के लिए नागपुर से श्रीनगर पहुंचे। गुरुजी और महाराजा हरि सिंह के बीच एक बैठक आयोजित की गई। राष्ट्रीय सम्मान के मुद्दे पर यह ऐतिहासिक बैठक सफलतापूर्वक समाप्त हुई, जिसके बाद महाराजा ने विलय का प्रस्ताव दिल्ली भेजा और गुरुजी ने जम्मू-कश्मीर में आरएसएस कार्यकर्ताओं को राष्ट्र की अखंडता के लिए आखिरी बूंद तक अपना खून बहाने का निर्देश दिया। हमारी सेना के साथ-साथ इन गुमनाम नायकों के महत्वपूर्ण योगदान के कारण, हम कश्मीर को पाकिस्तान के चंगुल से बचाने और अपने राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा और संरक्षण करने में सक्षम हुए।

विभाजन के दौरान आरएसएस कार्यकर्त्ताओं द्वारा किए गए बलिदान और भारत की रक्षा में उनका योगदान भारत के इतिहास में विशेष उल्लेख के योग्य है। चाहे वह स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जुलूस निकालकर पूरे माहौल को उत्साहित करना हो, या पाकिस्तान की सैन्य गतिविधियों और संभावित कश्मीर आक्रमण के बारे में जानकारी एकत्र करना हो, या यहां तक कि प्रसिद्ध 'कोटली के शहीद' की घटना जहां स्वयंसेवकों की वीरता ने उन्हें साबित कर दिया कि वे अपनी मातृभूमि के सम्मान की रक्षा के लिए अपने प्राण भी न्यौछावर करने को तैयार हैं।

1962 में भारत-चीन युद्ध के दौरान आरएसएस का योगदान अतुलनीय था। उस कठिन समय में सेना के साथ-साथ स्थानीय लोगों की मदद करने के लिए देश भर से स्वयंसेवक भारत के उत्तर-पूर्व में एकत्र हुए। उनके समर्पित योगदान को पूरे देश ने तब पहचाना जब तत्कालीन प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने एक विशेष संकेत के रूप में आरएसएस को 1963 के भारतीय गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया।

विभाजन के दौरान, जब नेहरू के लिए रक्तपात रोकना बेहद मुश्किल हो रहा था, तब आरएसएस ने ही पाकिस्तान से आए शरणार्थियों के लिए 3,000 से अधिक राहत शिविर आयोजित करने में मदद की थी। 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान, तत्कालीन प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री के अनुरोध पर, आरएसएस के स्वयंसेवकों ने देश में कानून और व्यवस्था को सफलतापूर्वक बनाए रखा और कहा जाता है कि वे रक्तदान करने वालों में अग्रणी थे। जब पाकिस्तानी जम्मू-कश्मीर पर कब्ज़ा करने की कोशिश कर रहे थे, तो यह समर्पित और बलिदानी स्वयंसेवक ही थे जिन्होंने हवाई पट्टियों से बर्फ साफ़ की और हवाई क्षेत्रों की मरम्मत की ताकि भारतीय वायु सेना अपने विमान उतार सके। इसके अलावा, बहुत से लोग नहीं जानते कि आरएसएस ने पुर्तगाली कब्जे से दादरा और नगर हवेली की मुक्ति में भी सक्रिय रूप से भाग लिया था। जाने-माने पत्रकार खुशवंत सिंह, जो अन्यथा खुले तौर पर आरएसएस के आलोचक थे, ने इस तथ्य को स्वीकार किया कि 1984 के भीषण सिख विरोधी दंगों में जब हत्यारे दिल्ली में सिखों को मारने के लिए उत्पात मचा रहे थे, तब बड़ी संख्या में सिखों की मदद करने में आरएसएस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। तमिलनाडु सुनामी, गुजरात भूकंप, आंध्र प्रदेश और उत्तराखंड बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाएं हों, या भोपाल गैस त्रासदी या हाल ही में असम दंगे जैसी मानव निर्मित आपदाएं हों, आरएसएस के स्वयंसेवक जरूरतमंद लोगों तक पहुंचने वाले पहले व्यक्ति होते हैं।

राष्ट्र के प्रति उनकी नि:स्वार्थ सेवा और राष्ट्र निर्माण में अपार योगदान के बावजूद, आरएसएस को एक असहिष्णु, चरमपंथी समूह के रूप में पेश किया जाता है। आरएसएस को कोसना फैशन बन गया है। वर्ष 1948 में महात्मा गांधी की हत्या के बाद, आरएसएस के कई प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया और इसे एक संगठन के रूप में प्रतिबंधित कर दिया गया। गांधी की हत्या की साजिश की जांच के लिए एक आयोग का गठन किया गया और इसकी रिपोर्ट 1970 में भारत के गृह मंत्रालय द्वारा प्रकाशित की गई। 'जस्टिस कपूर आयोग' ने कहा कि आरएसएस महात्मा गांधी की हत्या के लिए जिम्मेदार नहीं था। मूल रूप से, आरएसएस एक हिंदू समर्थक संगठन है, और हिंदू समर्थक होने का मतलब यह नहीं है कि यह मुस्लिम विरोधी या ईसाई विरोधी है। वास्तव में आरएसएस का मूल संस्थापक सिद्धांत 'वसुधा एव कुटुंबुकम्' है - पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में देखने का दृष्टिकोण। इस दृष्टिकोण के मार्गदर्शक सिद्धांत सामाजिक-आर्थिक कल्याण और विकास के लिए राष्ट्र की स्वैच्छिक सेवा हैं। एक स्वयंसेवक का मजबूत चरित्र, राष्ट्रवाद, निस्वार्थ सेवा और अनुशासन के गुणों को विकसित करने से बनता है, ये तीनों ही समाज के उत्थान और 'सब का साथ, सबका विकास' के मार्ग पर चलने में समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। आरएसएस के संगठन से निकले अटल बिहारी वाजपेयी और नरेन्द्र मोदी इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है जिनका सर्वस्व मातृभूमि के लिए समर्पित है। ◆◆◆

भारत
एक प्राचीन लोकतंत्र की विरासत

... ऋषि कुमार भारद्वाज

वेद, वैदिक, पौराणिक साहित्य, स्मृति शास्त्र, रामायण महाभारत एवं गीता में लोकतांत्रिक प्रणाली का उल्लेख लोकमत की प्राचीनता का प्रमाण है। राजा के अधीन सभा, सभा के अधीन राजा और राजा तथा मंत्री परिषद् दोनों ही प्रजा के अधीन स्वामी दयानंद की यह मान्यता भारतीय लोक तंत्र के स्वरूप का प्रमाण है। भारत न केवल विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र तथा लोकतंत्र की जननी एवं भारत की आत्मा है। वह आम भारतीयों की सांसों और संस्कारों में रचा-बसा है। भारत में लोकतांत्रिक मूल्य समन्वय एवं सह-अस्तित्व पर आधारित प्राचीन एवं सनातन सांस्कृतिक विचार-प्रवाह एवं जीवन-दर्शन है। इस देश में लोकतंत्र केवल शासन की एक प्रणाली मात्र नहीं, बल्कि वह सहस्त्राब्दियों के अनुभव और इतिहास से सिंचित-निर्मित भेद में एकत्व और विरुद्धों में सामंजस्य देखने वाली जीवन-शैली व दृष्टि है। श्रुति, स्मृति, पुराण, इतिहास, महाकाव्य आदि ग्रंथों में विश, जन, प्रजा, गण, कुल, ग्राम, जनपद, सभा, समिति, परिषद, संघ, निकाय जैसे अनेक शब्दों एवं संस्थाओं के उल्लेख मिलते हैं, जिनसे पुष्टि होती है कि उस समय भारत में लोकतंत्र का अस्तित्व था। वैदिक वाङ्मय पर दृष्टि डालने से दो प्रकार की गणतंत्रात्मक व्यवस्थाएँ सामने आती हैं, एक जिसमें राजा निर्वाचित किया जाता था और दूसरा जिसमें राज्य की शक्ति सभा या परिषद में निहित होती थी। इसे राजाधीन एवं गणाधीन शासन-तंत्र कहा जा सकता है। वैदिक राजा का निर्वाचन समिति में एकत्रित होने वाले लोगों द्वारा किया जाता था। समिति सार्वजनिक कार्यों को संपादित करने वाली संस्थाओं में सर्वप्रमुख थी। यह जनसामान्य का प्रतिनिधित्व करती थी। परिचर्चा और पारस्परिक सम्मति से निर्णय लिए जाते थे। वहीं सभा समिति के अधीन कार्य करती थी। इसमें वृद्ध एवं अनुभवी लोगों का विशेष स्थान प्राप्त होता था। यह चयनित लोगों की स्थायी संस्था थी। ब्राह्मण ग्रंथों में वर्णित राज्याभिषेक के आरंभ से अंत तक के कार्य-व्यवहार से स्पष्ट होता है कि राजा को राजपद प्राप्त करने से पूर्व राष्ट्र के विभिन्न अंगों की अनुमति प्राप्त करनी पड़ती थी, वह राष्ट्र के भिन्न-भिन्न स्थानों की मिट्टी, जल, वर्ण, वायु, पर्वत और संपूर्ण प्रजा का प्रतिनिधित्व करता था। उसका निरंकुश होना संभव नहीं था। उसे मंत्रिपरिषद के परामर्श, स्वीकृति और प्रजा के कल्याण की भावना से कार्य संपादित करना होता था। यहाँ तक कि उसके पुनर्निर्वाचन की भी निश्चित प्रक्रिया और व्यवस्था थी। उल्लेखनीय है कि समिति और सभा की सदस्यता जन्म के बजाय कर्म पर आधारित थी। नीति, सैन्य एवं सार्वजनिक हितों से जुड़े महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर विमर्श एवं नियमन हेतु विद्वत्-सभा का भी उल्लेख मिलता है, जिसका प्रयोग ऋग्वेद में किया गया है।

रामायण और महाभारत में भी अनेक ऐसे प्रसंग हैं, जिनसे विदित होता है कि राजा निर्णय-प्रक्रिया में प्रजा के मत, जनपद-प्रतिनिधियों एवं अमात्य मंडल के परामर्श को विशेष महत्त्व प्रदान करता था। राजा दशरथ और कुलगुरु वशिष्ठ भावी राजा राम को यह उपदेश देते दिखते हैं कि प्रजा के हिताहित की निरंतर चिंता, मंत्रियों-सेनापतियों-अधिकारियों से सतत विचार-विमर्श राजा के प्रमुख कर्त्तव्य होते हैं। रामायण के बालकांड के सातवें सर्ग में राजा दशरथ के यशस्वी होने का कारण राज्य के प्रमुख कार्यों में उनके मंत्रिमंडल की सहभागिता है, जिसमें आठ मंत्री होते थे। महाभारत के शांति पर्व में गणराज्यों की विशेषताओं का विस्तृत विवरण मिलता है।

बौद्ध एवं जैन ग्रंथों से भी ज्ञात होता है कि भगवान महावीर एवं भगवान बुद्ध के काल में भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में अनेक गणराज्य विद्यमान थे। इनमें वैशाली के लिच्छवी, कपिलवस्तु के शाक्य, सुमसुमार पर्वत के भग्ग, केसपुत्त के कालाम, रामगाम के कोलिय, कुशीनारा के मल्ल, पावा के मल्ल, पिप्पलिवन के मोरिय, मिथिला के विदेह इन गणराज्यों की सर्वोच्च शक्ति एक गणसभा या संस्थागार में निहित होती थी, जो लगभग आज के संसद जैसी होती थी। गण की कार्यपालिका का अध्यक्ष एक निर्वाचित पदाधिकारी होता था, जिसे उस गणराज्य का प्रमुख नायक या राजा कहा जाता था।

पाणिनी ने भी संघ को राजतंत्र से भिन्न बताते हुए गण को संघ का पर्याय बताया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी दो प्रकार के संघ राज्यों का उल्लेख मिलता है। मनु स्मृति में लोकतंत्र के विविध आयाम वर्णित है। सिकंदर के आक्रमण के समय पंजाब और सिंध में कई गणराज्य थे, जो राजतंत्रों से भिन्न थे। मेगस्थनीज ने भी अपने यात्रा-वृत्तांत में लिखा है कि उस समय भारत के अनेक प्रांतों-नगरों में गणतंत्रात्मक शासन प्रचलित था। इसी प्रकार तमिलनाडु में दसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में परांतक चोल प्रथम के शासन-काल में उत्कीर्णित कांचीपुरम के उत्तरमेरूर के शिलालेखों से तत्कालीन लोकतांत्रिक व्यवस्था के विविध आयामों एवं कार्य-पद्धत्तियों की विस्तृत एवं प्रामाणिक जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।

अत एव निश्चय से कहा जा सकता है कि भारत में लोकतंत्र की एक प्राचीन और अटूट संस्कृति मौजूद रही है। सर्वसम्मति निर्माण, खुला संवाद और स्वतंत्र विचार-विमर्श से भारत के नागरिक भारत को लोकतंत्र की जननी मानते हैं। भारत न लोगों की आकांक्षाओं को पूरा कर रहा है, बल्कि विश्व को विश्वास भी उपलब्ध करा रहा है कि लोकतंत्र ही राष्ट्र को सशक्त बनाता है। वर्तमान में भारत लोकतांत्रिक प्रक्रिया से मतदान द्वारा अपनी सरकार का गठन करता है। भले ही कुछ विकृतियां भी पनपती जा रही है, परंतु लोकतंत्र की मजबूत जड़ों को हिला नहीं सकती। ◆◆◆

लेखक हिमाचल केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला में राजनीति विज्ञान विभाग के शोधार्थी हैं।

निष्पक्ष चुनाव के लिए पहल

चुनाव आयोग द्वारा जारी सी-विजिल एप्प से आचार संहिता उल्लंघन की शिकायत की जा सकती है और कार्रवाई को ट्रैक किया जा सकता है।

तकनीक का देश के चुनाव में किस प्रकार सही दिशा में प्रयोग हो, इसके लिए चुनाव आयोग लगातार नई पहल कर रहा है। इस बार जिला निर्वाचन अधिकारियों के माध्यम से देश भर के हर जिला में सी-विजिल एप के बारे में आम लोगों को जागरूक करने के अभियान व्यापक स्तर पर चलाए जा रहे हैं, ताकि आदर्श चुनाव संहिता का उल्लंघन कम से कम हो सके। चुनाव में तकनीक के बेहतर उपयोग का सबसे सटीक उदाहरण भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी सी-विजिल मोबाइल एप्प है। अभी पहले चरण के मतदान होने में दो सप्ताह से अधिक समय बाकी है, लेकिन सी-विजिल एप्प पर आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन की शिकायतें लगातार आ रही हैं। 16 मार्च को मुख्य चुनाव आयुक्त ने देश भर में लोकसभा और आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, ओडिशा और सिक्किम विधानसभाओं सहित अन्य राज्यों के विधानसभाओं में खाली सीटों के उपचुनाव कार्यक्रम की घोषणा की थी। मात्र 13 दिनों में सी-विजिल पर 79,000 से अधिक शिकायतें आई हैं, जिसमें 99 प्रतिशत से अधिक शिकायतों का समाधान करने का दावा भी निर्वाचन आयोग द्वारा किया गया है। उपरोक्त 99 प्रतिशत शिकायतों में से लगभग 89 प्रतिशत शिकायतों का हल 100 मिनट के भीतर किया गया है, जो सी-विजिल एप्प की खासियत को दर्शाता है। चुनाव आयोग द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, अभी प्राप्त 58,500 से अधिक शिकायतें अवैध होर्डिंग्स और बैनरों के विरुद्ध प्राप्त हुई हैं। इसके अलावा, 1400 से अधिक शिकायतें पैसे, उपहार और शराब वितरण से संबंधित थीं। लगभग 2,500 शिकायतें संपति के विरूपण से संबंधित हैं। आग्नेयास्त्रों के प्रदर्शन और भयादोहण से संबंधित 535 शिकायतों में से 529 शिकायतों का समाधान पहले ही किया जा चुका है।

उम्मीद है कि निर्वाचन आयोग की यह पहल आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन करने वालों पर निगरानी के लिए कारगर कदम साबित होगी। बता दें कि वर्तमान में आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन संबंधी शिकायतें करने और उसे ट्रैक करने के लिए द्रुत सूचना चैनल की कमी है। आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन की रिपोर्ट में देरी के परिणामस्वरूप निर्वाचन आयुक्त के उडन् दस्ते, जिन्हें आदर्श आचार संहिता को लागू करने का कार्य सौंपा गया है, अक्सर अपराधियों का पता नहीं लगा पाते हैं। इसके अलावा, चित्र या वीडियो के रूप में किसी भी छेड़छाड़ रहित साक्ष्य की कमी घटना घटने के उपरांत शिकायत की सत्यता स्थापित करने में एक बड़ी बाधा थी।

आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन के बारे में इस सी-विजिल एप्प के जरिये कोई भी आम व्यक्ति शिकायत कर सकता है। इसमें शिकायतकर्ता की पहचान पूरी तरह गुप्त रखने का भी प्रावधान है। शिकायत दर्ज करने से पहले आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन करने वाली गतिविधि की केवल एक तस्वीर या दो मिनट का वीडियो बनाकर उसके बारे में संक्षिप्त जानकारी देनी होती है। शिकायत के साथ कैप्चर की गई जीआईएस जानकारी स्वत- इसे संबंधित जिला नियंत्रण कक्ष को भेज दी जाती है, जिससे फ्लाइंग स्कक्वॉड को कुछ ही मिनटों में घटनास्थल पर भेज दिया जाता है। जैसे ही शिकायत सी-विजिल एप्प पर भेजी जाती है, शिकायतकर्ता को एक यूनिक आईडी प्राप्त होती है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने मोबाइल पर शिकायत को ट्रैक कर सकता है। एक साथ काम करने वाले तीन कारक सी-विजिल को सफल बना रहे हैं।

''लोकतंत्र में मतदान करने का सभी नागरिकों को संवैधानिक अधिकार है। समस्त जन अपने मत का उपयोग निर्भीकता एवं निष्पक्षता से करते हुए राष्ट्रहित में लोकतंत्र को सशक्त बनाने में अपना योगदान दें''

उपयोगकर्ता वास्तविक समय में ऑडियो, फोटो या वीडियो कैप्चर करते हैं और शिकायतों के प्रति समयबद्ध अनुक्रिया के लिए 100 मिनट की गणना शुरू हो जाती है। जैसे ही उपयोगकर्ता उल्लंघन की रिपोर्ट करने के लिए सी- विजिल में अपना कैमरा चालू करता है, एप्प स्वचालित रूप से जियो-टैगिंग सुविधा सक्षम कर देता है। इसका मतलब यह है कि उडन् दस्ते रिपोर्ट किए गए उल्लंघन का सटीक लोकेशन जान सकते हैं। लोगों द्वारा खींचे गए इमेंज को न्यायालय में साक्ष्य के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। कोई व्यक्ति गुमनाम रूप से भी शिकायतें दर्ज करा सकता है। जाहिर है, तकनीक के उपयोग से न केवल पूरी चुनाव प्रक्रिया को स्वतंत्र एवं निष्पक्ष बनाया जा सकता है, बल्कि सभी दलों एवं प्रत्याशियों के लिए समान व्यवस्था कायम की जा सकती है। चुनाव को सुचारू ढंग से संपन्न कराने से लोकतंत्र की मजबूती सुनिश्चित होती है।◆◆◆

मतदान के प्रति मतदाता की जागरुकता

चेतन कौशल

लोकतांत्रिक देश भारत में 18 वर्ष से ऊपर के हर किशोर/युवा को संवैधानिक रूप से अपना मतदान करने का अधिकार प्राप्त है। निर्वाचन काल में वह मतदाता बनकर अपने मतदान से अपनी पसंद के प्रत्याशी की हो रही हार को भी अपने एक मत से उसकी जीत में परिवर्तित कर सकता है, ऐसी अपार क्षमता रखने वाले उसके मत को बहुमूल्य कहा जाता है। 1996 में माननीय अटल विहारी वाजपेयी जी की केन्द्रीय सरकार थी जिसे मात्र एक मत कम मिलने के कारण हार का सामना करना पड़ा था। मतदाता जागरुक होना चाहिए ताकि जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए मजबूत लोकतंत्र की स्थापना को बल मिल सके।

मताधिकार का प्रयोग : छब्बीस जनवरी 1950 के दिन भारत में भारत के संविधान को स्वीकृति मिली थी। उसे पूर्ण रूप से लागू किया गया था। तब से लेकर अब तक मतदाता के द्वारा मतदान करने का अपना बहुत बड़ा महत्व है। मतदाता मतदान करके अपनी पसंद का प्रत्याशी चुनता है। उसके द्वारा चुना हुआ प्रत्याशी अन्य क्षेत्रों से चुने गये प्रत्याशियों के साथ आगे चलकर स्थानीय निकाय/ग्राम पंचायत, पंचायत समिति, नगर पालिका, जिला परिषद् का ही नहीं, अपितु विधानसभा और लोकसभा के गठन में भी सहभागी बनता है और नई सरकार बनाता है। इस व्यवस्था की प्रक्रिया से सरकार द्वारा जो योजनायें बनाई जाती हैं, उन्हें साकार करने हेतु प्रारंभ किये गये जनहित विकास कार्यों का लाभ व सुविधाएँ जन-जन तक पहुंचाई जाती हैं। इसलिए मतदाता को अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करना चाहिए-क्योंकि यह केवल अधिकार ही नहीं, उसका कर्तव्य भी है।

गोपनीयता : देश में राजनीति से संबंधित वर्तमान में अनेकों विचारधाराएं विद्यमान हैं। निर्वाचन की व्यार चलते समय भारतीय राजनेता/राजनीतिक दल जनता को अपनी ओर आकर्षित करने हेतु मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी, मुफ्त धन-मदिरा-मांस, मासिक युवा बेरोजगारी भत्ता, रोजगार देने, गरीबी दूर करने, सुशासन देने जैसे लुभावने तरह-तरह के प्रलोभन दिखाते हैं, उन्हें तो मात्र किसी तरह सत्ता की प्राप्ति करनी होती है। जनहित, देशहित किसने, कब देखा है? निर्वाचन काल में उनके द्वारा किए जाने वाली घोषणाएं/वायदे अथवा किए जाने वाले कार्य मात्र जनता को प्रलोभन दिखाकर मूर्ख बनाना होता है।

मतदान के दो प्रकार : मतदान का पहला प्रकार सबसे अच्छा चुनाव वह होता है जो निर्विरोध एवं सर्वसम्मति से सम्पन्न होता है। इसमें प्रतिस्पर्धा के लिए कोई स्थान नहीं होता है और दूसरा जो मतपेटी में प्रत्याशी के समर्थन में उसके चुनाव चिन्ह पर अपनी ओर से चिन्हित की गई पर्ची डालकर या ईवीएम मशीन से किसी मनचाहे प्रत्याशी के पक्ष में, चुनाव चिन्ह का बटन दबाकर अपना समर्थन प्रकट किया जाता है। मतदाता के द्वारा सदैव बिना किसी भय, बिना किसी दबाव, बिना किसी लोभ, अपनी इच्छा और पसंद के सर्वकल्याणकारी विचारधारा को मध्यनजर रखते हुए, बिना किसी व्यक्ति को बताये अपना गुप्त मतदान करना चाहिए। मतदाता के पास अपना बहुमूल्य मत होता है जिससे वह समाज विरोधी विचारधारा को हराकर, राष्ट्रवादी विचारधारा को विजय दिला सकता है। अपने प्रत्याशी को आगे भेज सकता है और उससे एक अच्छी सरकार की आशा भी कर सकता है।

अब सभी नर-नारी, युवा और वृद्ध शत-प्रतिशत मतदान करने की प्रतिज्ञा करें। कोई भी 18 वर्ष की आयु से ऊपर वाला युवा जो वैधानिक दृष्टि से मतदान करने का अधिकारी बन चुका है, मतदान से वंचित नहीं रहना चाहिए। ◆◆◆

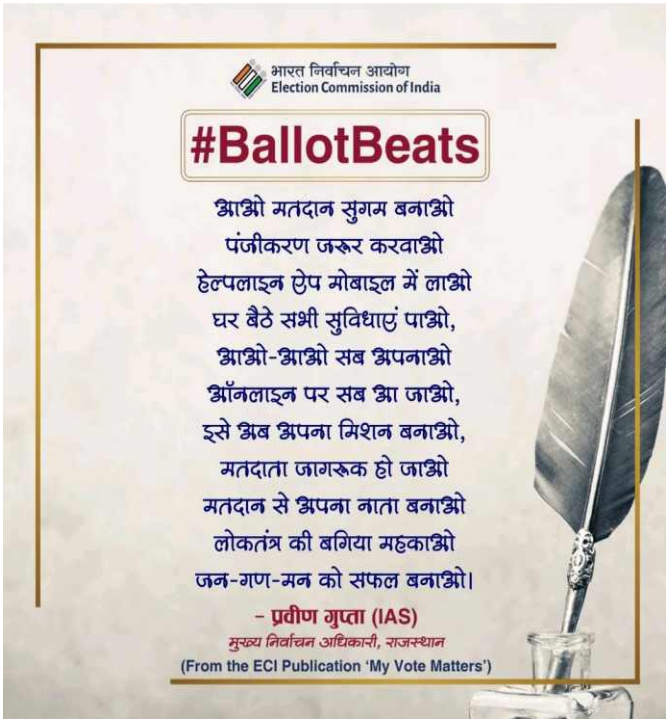

सत्ता लाभ के लिए मुफ्तखोरी की राजनीति नुकसानदायक

... डॉ. अवनीश कुमार

देश-प्रदेश में आजकल चुनावी माहौल है। चुनाव नजदीक आते ही सभी राजनीतिक पार्टियां मतदाताओं को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रलोभन देना शुरु कर देती हैं। यह आकर्षक प्रलोभन समाज के कुछ लक्षित वर्गों को ध्यान में रखते हुए उनके उत्थान के लिए समर्पित होने चाहिएं, जिससे समाज में समता का भाव बढ़ेए वं समाज के जरूरतमंद वर्गों को इसका लाभ मिल सकें। परंतु पिछले कुछ वर्षों में राजनीतिक पार्टियों ने मुफ्तखोरी की नई कुप्रथा हमारे समाज में पैदा कर दी है। अक्सर सत्ता प्राप्ति एवं सत्ता लाभ के लिए यह राजनीतिक दल मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए मुफ्त के उपहार देने की घोषणाएं करने लगे हैं जैसे कि मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी, सरकारी बसों में किराया माफ या फिर मुफ्त के उपहार जैसे कि लैपटॉप, मोबाइल फोन, महिलाओं को राशि देना इत्यादि। कुछ राजनीतिक दल तो युवाओं एवं महिलाओं का वोट प्राप्त करने के लिए उन्हें प्रतिमाह कुछ राशि भेंट स्वरूप उनके बैंक खातों में डालने के वादे करने से भी परहेज नहीं कर रहे हैं। यह सब चीजें हमारे सामाजिक जीवन के लिए खतरनाक हैं। एक ओर जहां मुफ्तखोरी से राज्यों पर आर्थिक बोझ बढ़ता है, वहीं हमारे समाज का युवा आर्थिक रूप से कमजोर होता है। उसे बैठकर मुफ्त का खाने की आदत लग जाती है और वह कभी भी स्वावलंबी नहीं बन पाता है। जिंदगी भर वह राजनेताओं के झंडे उठाने लायक ही रह जाता है। राजनेता भी अपने लाभ के लिए ऐसे लोगों का भरपूर शोषण करते हैं। इस तरह से अपंग बने हुए लोग कभी भी सशक्त समाज का निर्माण नहीं कर पाएंगे और इससे सशक्त राष्ट्र भी कमजोर पड़ना शुरू हो जाते हैं। अंत में आर्थिक संकट का सामना भी करना पड़ता है। ऐसे कई उदाहरण हमारे पड़ोसी देशों में देखने को मिलते हैं।

यह पैसा टैक्स देने वाले लोगों का है जिसका प्रयोग राजनीतिक पार्टियां अपने निजी प्रचार और वोट बैंक के लिए कर रही हैं। इससे सामाजिक सुधार, रोजगार, नए उद्यमों का सृजन, गरीब एवं किसानों का उत्थान जैसी प्राथमिकताएं कभी मुर्तरूप नहीं ले पाती हैं।

देश में चुनाव जीतने के लिए मुफ्त की योजनाएं चलाने में जहां क्षेत्रीय दल सबसे आगे हैं वहीं राष्ट्रीय राजनीतिक दल भी पीछे नहीं हैं। मुफ्त योजना की प्रथा सबसे पहले तमिलनाडु की तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमती जयललिता ने अपने प्रदेश में कई प्रकार की मुफ्त योजनाएं चलाकर की थी, जिसमें मुफ्त साड़ी, प्रेशर कुकर, वाशिंग मशीन, टेलीविजन सेट आदि का वादा किया था। वहीं वर्ष 2015 में दिल्ली विधानसभा चुनावों में आम आदमी पार्टी ने दिल्ली के मतदाताओं को मुफ्त बिजली, पानी, बस यात्रा आदि का वादा करके यह चुनाव जीता था। वहीं पंजाब में 300 यूनिट बिजली मुफ्त देने की बात की थी।हिमाचल की बात करें तो पूर्व में सत्ता में रहते हुए भाजपा ने भी देखा-देखी में मुफ्त बिजली देने की घोषणा कर दी। बस किराया में छूट की घोषणा कर दी। इसी प्रकार हिमाचल में कांग्रेस पार्टी ने भी महिलाओं एवं बेरोजगारों को हर माह 1500 रुपए देने का वादा किया और दे नहीं पाए। ऐसे कई राज्य हैं जहां राजनीतिक दल लोगों के वोट को सुरक्षित करने के लिए मुफ्त की योजनाओं का वादा करते हैं ताकि चुनाव में अपनी जीत पक्की कर सकें। परंतु बजट कहां से आएगा, यह चिंता किसी को नहीं।

अर्थव्यवस्थाएं व राज्य की आर्थिक स्थिति को दरकिनार करते हुए राजनीतिक पार्टियां ऐसी घोषणाएं क्यों करती हैं? सार्वजनिक संसाधन किसी को भी मुफ्त में उपलब्ध क्यों कराए जाने चाहिए? क्या टैक्स देने वाले लोगों से आने वाले राजस्व को मनमर्जी से खर्च करने का अधिकार सरकारों को होना चाहिए? वह भी ऐसी स्थिति में जब राज्यों पर कई हजार करोड़ का बोझ हो एवं राजस्व आमदनी के संसाधन भी कम हो। जन्म से लेकर मृत्यु तक सब मुफ्त में अगर बांटा जाएगा तो फिर कोई काम क्यों करेगा? मुफ्त बांटने की संस्कृति से देश का विकास कैसे होगा? यह मुफ्त की चीजें बांटना कोई भी पार्टी या नेता अपनी जेब से नहीं देता है। यह सब टैक्स देने वाले लोगों से प्राप्त राजस्व से दिया जाता है जबकि राज्य सरकार का राजस्व राज्य की प्रगति एवं उन्नति के लिए खर्च किया जाना चाहिए। ऐसी स्थिति में हम लोगों को आश्रित एवं परजीवी बनाया जा रहा है। हम एक जिम्मेदार आत्मनिर्भर सशक्त नागरिक कैसे बनेंगे?

हम सभी जानते हैं कि समाज के कुछ लक्षित वर्गों के लिए राज्य सरकारों द्वारा लोक कल्याणकारी योजनाएं भी शुरु की जाती हैं। मुफ्त की रेवड़ियां एवं लोक कल्याणकारी योजनाओं के मध्य के अंतर को समझते हुए इनमें संतुलन बनाए रखना बहुत जरूरी है। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने अपने संबोधन में रेवड़ी संस्कृति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा था कि यह मुफ्तखोरी की संस्कृति देश की आधारभूत संरचना के विकास में सबसे बड़ा अवरोध है। माननीय उच्च न्यायालय ने भी इस संबंध में कहा था कि इस तरह की मुफ्तखोरी की कुप्रथाएं सरकारों के लिए ऐसी परिस्थिति पैदा कर सकती हैं कि सरकारी खजाना खाली होने की वजह से आम जनता को भी मूलभूत सुविधाओं से वंचित होना पड़ सकता है। इसका सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था, परिस्थिति एवं उन्नति पर पड़ेगा। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्र की स्थिति खराब होगी। इस अनैतिक राजनीति पर अंकुश लगाने के लिए आम जनमानस विशेषकर युवाओं को आगे आकर ऐसे प्रलोभनों का बहिष्कार करना पड़ेगा। यही हमारा सामाजिक दायित्व है।◆◆◆

राष्ट्रसेवा को समर्पित
महारानी अहिल्याबाई होलकर

... डॉ. सुनीता देवी जसवाल

भारत भूमि की कोख में अनेकों ऐसी वीरांगनाओं ने जन्म लिया जिन्होंने मातृभूमि के प्रति निस्वार्थ भाव से अपना कर्तव्य को निभाते हुए सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। उनका जीवंत व्यक्तित्व आज भी उनके विशिष्ट कार्यों से प्रेरणा प्रदान करता है। ऐसी दिव्य विभूतियां में महारानी अहिल्याबाई होल्कर का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है।

अहिल्याबाई होलकर 31 मई 1725 को जन्मी तथा 13 अगस्त 1795 को उनका परलोक गमन हुआ। मराठा साम्राज्य की प्रसिद्ध महारानी तथा इतिहास-प्रसिद्ध सूबेदार मल्हारराव होलकर के पुत्र खण्डे राव की धर्मपत्नी थीं। उन्होने माहेश्वर को राजधानी बनाकर शासन किया। अहिल्याबाई का जन्म चौंडी नामक गाँव में हुआ, जो आजकल महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के जामखेड में पड़ता है। दस-बारह वर्ष की आयु में उनका विवाह हुआ और उन्नतीस वर्ष की अवस्था में विधवा हो गईं। जब बयालीस-तैंतालीस वर्ष की थीं, पुत्र माले राव का देहान्त हो गया। जब अहिल्याबाई की आयु बासठ वर्ष की थी, दौहित्र नत्थू चल बसा। चार वर्ष पीछे दामाद यशवन्त राव फणसे न रहे और इनकी पुत्री मुक्ताबाई सती हो गई। एक -एक करके अपने प्रिय जनों को खोने के बाद भी उन्होंने शासन और लोक सेवा के प्रति अपना कर्तव्य निभाने का प्राण जारी रखा। अहिल्याबाई ने अपने राज्य में एक अच्छा शासन स्थापित किया। आत्म-प्रतिष्ठा के झूठे मोह का त्याग करके सदा न्याय करने का प्रयत्न करके मरते दम तक पूना के न्यायाधीश रामशास्त्री और उनके पीछे झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की परंपरा को कायम रखा।अपने जीवनकाल में ही इन्हें जनता 'देवी' कहने लगी थी।जब चारों ओर गड़बड़ मची हुई थी। शासन और व्यवस्था के नाम पर घोर अत्याचार हो रहे थे। प्रजाजन- साधारण गृहस्थ, किसान मजदूर-अत्यन्त हीन अवस्था में सिसक रहे थे। उनका एकमात्र सहारा-धर्म-अन्धविश्वासों, भय,संत्रासों और रूढ़ियों की जकड़ में कसा जा रहा था, न्याय में न शक्ति रही थी, न विश्वास, ऐसे काल की उन विकट परिस्थितियों में अहिल्याबाई ने जो कुछ किया वह चिरस्मरणीय एवं आदर्श है, तभी उन्हें सबसे सम्मान मिला। आज भी अहिल्याबाई के सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक एवं लोकोपकारी कार्यों को आदरपूर्वक याद किया जाता है।

अहिल्याबाई ने अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भारत-भर के प्रसिद्ध तीर्थों और स्थानों में मन्दिर बनवाए, घाट बँधवाए, कुओं और बावड़ियों का निर्माण किया, मार्ग बनवाए-काशी विश्वनाथ में शिवलिंग को स्थापित किया, भूखों के लिए अन्नसत्र, प्यासों के लिए प्याऊ बनवाए, मन्दिरों में विद्वानों की नियुक्तियां करके धार्मिक और आध्यात्मिक मनन-चिन्तन और प्रवचन हेतु व्यवस्था की।

इन्दौर में प्रतिवर्ष भाद्रपद कृष्णा चतुर्दशी के दिन अहिल्योत्सव होता चला आया है। अहिल्याबाई जब 6 महीने के लिये पूरे भारत की यात्रा पर गई तो ग्राम उबदी के पास स्थित कस्बे अकावल्या के पाटीदार को राजकाज सौंप गई, जो हमेशा वहाँ जाया करते थे। इन कार्यों में अहिल्याबाई ने काफी खर्च किया और सेना नए ढंग पर संगठित नहीं की। तुकोजी होलकर की सेना को उत्तरी अभियानों में अर्थसंकट सहना पड़ा, कहीं-कहीं यह आरोप भी है। इन मन्दिरों को हिन्दू धर्म की बाहरी चौंकियाँ तथा धर्म एवं संस्कृति का केंद्र बतलाया है। अहिल्याबाई अँधेरे में प्रकाश की किरण के समान थीं, जिसे अँधेरा बार-बार ग्रसने की चेष्टा करता रहा। अपने उत्कृष्ट विचारों एवं नैतिक आचरण के चलते ही समाज में उन्हें देवी का दर्जा मिला। मल्हार राव के भाई-बन्दों में तुकोजीराव होल्कर एक विश्वासपात्र युवक थे। मल्हारराव ने उन्हें भी सदा अपने साथ में रखा था और राजकाज के लिए तैयार कर लिया था। अहिल्याबाई ने इन्हें अपना सेनापति बनाया और चौथ वसूल करने का काम उन्हें सौंप दिया। अहिल्याबाई का उन पर इतना प्रेम और विश्वास था कि वह भी उन्हें पुत्र जैसा मानती थीं। राज्य की चिन्ता का भार और उस पर प्राणों से भी प्यारे आत्मीय लोगों का वियोग। इस सारे शोक-भार को अहिल्याबाई लंबे समय तक नहीं संभल सकीं और 13 अगस्त सन् 1795 को उनकी जीवन-लीला समाप्त हो गई। अहिल्याबाई के निधन के बाद महाराजा तुकोजी राव ने राज्य की शासन व्यवस्था को संभाला और उनके सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय सेवाकार्यों को संरक्षण तथा विस्तार प्रदान किया। वर्तमान में अहिल्याबाई होलकर के नाम पर अनेक योजनाएं संस्थान छात्रवृत्तियां तथा अन्य सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा यह वर्ष अहिल्याबाई के विशिष्ट योगदान को आंकते हुए मनाए जाने का निर्णय लिया गया है। ऐसे अवसर पर उनके द्वारा किए गए कारों का स्मरण करते हुए उनके विशिष्ट गुणों को आदर्श रूप में अपनाए जाने का प्रयास उनकी सेवाओं के प्रति सच्चा सम्मान होगा।◆◆◆

लेखिका हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यरलस के हिंदी विभाग में सहायक आचार्य हैं।

लोकतंत्र में वोट की कीमत

...डॉ. जय नारायण कश्यप

भारत में लोकसभा का चुनाव हो रहा है। इस राष्ट्रव्यापी चुनाव के माध्यम से केंद्र में सरकार का गठन होना है। नई सरकार बनेगी, प्रधानमंत्री और मंत्री परिषद का चुनाव होगा। विभिन्न समितियां बनेगी। विभिन्न क्षेत्रों से सांसद चुनकर आएंगे। ये सभी मिलकर देश के लिए नए कानून बनाएंगे। सरकार का संचालन करेंगे। विभिन्न योजनाओं के माध्यम से जनता के कल्याण के लिए कार्यक्रम चलाए जाएंगे। सरकार बहुमत से चुनी जाएगी। ऐसे में राष्ट्र के हित में यही रहता है कि सरकार टिकाऊ हो। और देश की तरक्की के लिए कुछ करने का विचार रखती हो। क्योंकि लोकतंत्र तो लोकतंत्र है। यहां वोटों की संख्या के आधार पर सरकार बनती है। जिसके पास ज्यादा वोट, उसकी जीत। और जिसके पास बहुमत, उसकी सरकार। जिसके पास अल्पमत वह विपक्ष में। और जिसको जनता ने नकार दिया वह थक हार कर अपने घर बैठ जाता है, अगले पांच साल के इंतजार में। लोकतंत्र में चुनाव कुछ ऐसा ही है,जैसे एक हॉस्टल की कहानी बहुत प्रचलित है।

एक होस्टल कैंटीन में रोज़-रोज़ के नाश्ते में खिचड़ी बनाए जाने परेशान कुछ छात्रों ने होस्टल वार्डन से शिकायत की और हर रोज बदल-बदल के नया और ताजा नाश्ता देने को कहा। हास्टल के 100 में से सिर्फ 25 छात्र ऐसे थे, जिनको खिचड़ी बहुत पसंद थी और वे छात्र चाहते थे, कि खिचड़ी तो रोज़ ही बननी चाहिए । बाकी के 75 छात्र परिवर्तन चाहते थे। वार्डन ने सभी छात्रों से वोट करके नाश्ता तय करने को कहा। उन 25 छात्रों ने, जिनको खिचड़ी बहुत पसंद थी, सिर्फ खिचड़ी के लिए वोट किया। बाकी बचे 75 लोगों का आपस में कोई तालमेल नहीं था। वे सब अपनी-अपनी पसंद पर अड़े हुए थे। और उन्होंने अपनी बुद्धि एवम् विवेक से अपनी रुचि के अनुसार वोट दिया। उनमें से 20 ने डोसा चुना, 15 ने आचार दहीं परांठा, 15 ने ब्रेड बटर, 15 ने छोले भटूरे और 10 ने नाश्ते में नूडल्स खाने के लिए वोट किया। वोटों की गिनती होने पर 25 वोट से खिचड़ी पसंद करने वाले छात्र जीत गए। उनको बहुमत मिल गया और बाकी के 75 संख्या में अधिक होने पर आपस में बंट गए। एकता नहीं हो सकी। और हार का सामना करना पड़ा। बहुमत में रहते हुए भी अल्पमत में विभाजित हो गए। इसलिए उस कैंटीन में आज भी 75 छात्रों को रोज़ खिचड़ी ही खानी पड़ती हैं। क्योंकि बहुमत खिचड़ी पसंद करने वाले 25 छात्रों का रहा, जो छात्र बहुमत में, एकजुट रहे। कुछ ऐसा ही है हमारा लोकतंत्र। किसी की पसंद बेहतर ही क्यों न हो, निर्णय बहुमत का होता है। बहुमत में मुंडियां गिनी जाती हैं। वोट तो एक अमीर और गरीब का बराबर होता है। भले ही अमीर की सोच में देश के बारे में अधिक जानकारी हो सकती है, लेकिन लोकतंत्र में गरीब की सोच भी बराबर का हक रखती है। क्योंकि उसके वोट का भी बराबर का मूल्य है। यही लोकतंत्र की खूबसूरती है। हां, यह भी कहा जा सकता है कि कई बार बहुमत का निर्णय समाज एवं देश के हित में नहीं हो सकता है परंतु उसे ज्यादा समय तक टाला तो नहीं जा सकता। पंचायत, विधानसभा, संसद, राज्यसभा सभी जगह बहुमत से ही निर्णय होता है। कोई भी नियम कानून बनाने के लिए या संविधान में संशोधन करने और कोई नया मसौदा कानून के तौर पर प्रस्तुत करके पारित करवाने के लिए बहुमत जरूरी होता है। बहुमत न होने पर बहुत सारे महत्वपूर्ण कानून के मसौदे कई वर्षों तक दबे पड़े रहते हैं। हमारे देश का यह दुर्भाग्य है कि कुछ लोग मतदान नहीं करते हैं और कुछ किसी दूसरे के कहने पर अथवा दबाव में वोट करते हैं। कुछ जाति मजहब के नाम पर नफा नुकसान जाने बिना किसी के कहने से वोट करते हैं। कुछ लोग इतने समझदार हो जाते हैं कि वे किसी को पसंद ही नहीं करते हैं और इस समाज की सब सुख सुविधाओं को भोगने का हक रखते हुए भी वोट नहीं करते हैं। वोट देने के लिए घर से बाहर नहीं निकलते है। क्योंकि देश का निर्णय वोट से होगा। सरकार वोटों के आधार पर बनेगी। जनमत संग्रह से ही सरकार और नेतृत्व का चुनाव हो पाएगा। इसलिए सभी नागरिकों को वोट अवश्य करना चाहिए। वोट किसी के दबाव में नहीं, अपनी समझ से देना चाहिए। कौन राजनीतिक पार्टी, कौन नेता क्या विचार रखता है, उसने अब तक समाज सेवा के लिए क्या कार्य किया है, वर्तमान में उसका आचरण एवं सेवाभाव कैसा है और भविष्य के लिए उसकी योजनाएं क्या हैं। वह केवल अपना और अपने परिवार का भला चाहता है या राष्ट्र के लिए कुछ करने की सोच रखता है। इन बातों पर अवश्य विचार किया जाना चाहिए। क्योंकि आपका एक वोट देश के भविष्य को तय करने में प्रमुख भूमिका निभा सकता है। इसलिए देश हित में मतदान जरूर करें। ◆◆◆

हिमाचल में लड़कियां कब होंगी सुरक्षित?

पालमपुर के बस अड्डे पर खुलेआम, दिनदहाड़े एक युवक ने लड़की पर दराट से हमला बोला और उस लड़की को काफी गहरी चोटें लगीं। प्रत्यक्षदर्शी कुछ युवकों ने हिम्मत करके उस हमलावर युवक को दबोच लिया। उसके हाथ से दराट भी छीन लिया और घायल लड़की को अस्पताल में इलाज के लिए पहुंचा दिया। इधर सोशल मीडिया पर इस घटना का दर्दनाक वीडियो वायरल होने लगा। इस दुखद, अमानवीय और दहशत फैलाने वाली घटना के कई रूप सामने आए, जो समाज की नींद उड़ाने के लिए काफी हैं। यहां कानून व्यवस्था का किसी को कोई डर फिक्र नहीं है। क्या जिंदा रहने पर वह इस हादसे को भूल पाएगी? वह एक सामान्य जीवन जी पाएगी या जीवन भर इस दुर्घटना को याद करके पल-पल तड़पने के लिए मजबूर होकर जीने के लिए विवश हो जाएगी। आज यह हादसा एक लड़की के साथ हुआ है। कल किसी और के साथ भी यह घटना घट सकती है। इसलिए आज जरूरत है कठोर दंड की, ताकि इन असामाजिक तत्वों एवं दरिंदों को कड़ी से कड़ी सजा मिले और भविष्य में कोई भी इस तरह की घटना को अंजाम देने का साहस न कर पाए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में पारित प्रस्ताव

श्रीराममन्दिर से राष्ट्रीय पुनरुत्थान की ओर

पौष शुक्ल द्वादशी, युगाब्द 5125 (22 जनवरी 2024) को श्रीरामजन्मभूमि पर श्रीरामलला के विग्रह की भव्य-दिव्य प्राण प्रतिष्ठा विश्व इतिहास का एक अलौकिक एवं स्वर्णिम पृष्ठ है। हिन्दू समाज के सैकड़ों वर्षों के सतत् संघर्ष एवं बलिदान, पूज्य संतों और महापुरुषों के मार्गदर्शन में चले राष्ट्रव्यापी आंदोलन तथा समाज के विभिन्न घटकों के सामूहिक संकल्प के परिणामस्वरुप संघर्षकाल के एक दीर्घ अध्याय का सुखद समाधान हुआ। इस पवित्र दिवस को जीवन में साक्षात् देखने के शुभ अवसर के पीछे शोधकर्ताओं, पुरातत्त्वविदों, विचारकों, विधिवेत्ताओं, संचार माध्यमों, बलिदानी कारसेवकों सहित आंदोलनरत समस्त हिन्दू समाज तथा शासन-प्रशासन का महत्त्वपूर्ण योगदान विशेष उल्लेखनीय है। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा इस संघर्ष में जीवन अर्पण करनेवाले सभी हुतात्माओं के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उपर्युक्त सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती है। श्रीराममन्दिर में अभिमंत्रित अक्षत वितरण अभियान में समाज के समस्त वर्गों की सक्रिय सहभागिता रही। लाखों रामभक्तों ने सभी नगरों और अधिकांश गाँवों में करोड़ों परिवारों से संपर्क किया। 22 जनवरी 2024 को भारत ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में अद्भुत आयोजन किए गए। गली-गली और गाँव-गाँव में स्वप्रेरणा से निकली शोभायात्राओं, घर-घर में आयोजित दीपोत्सवों तथा लहराती भगवा पताकाओं और मंदिरों-धर्मस्थलों में हुए संकीर्तनों आदि के आयोजनों ने समाज में एक नवीन ऊर्जा का संचार किया। श्री अयोध्या धाम में प्राणप्रतिष्ठा के दिन देश के धार्मिक, राजनैतिक एवं समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के शीर्ष नेतृत्व तथा सभी मत-पंथ-सम्प्रदाय के पूजनीय संतवृंद की गरिमामयी उपस्थिति थी। यह इस बात की द्योतक है कि श्रीराम के आदर्शों के अनुरूप समरस, सुगठित राष्ट्रजीवन खड़ा करने का वातावरण बन गया है। यह भारत के पुनरुत्थान के गौरवशाली अध्याय के प्रारंभ का संकेत भी है। श्रीरामजन्मभूमि पर रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से परकीयों के शासन और संघर्षकाल में आई आत्मविश्वास की कमी और आत्मविस्मृति से समाज बाहर आ रहा है। सम्पूर्ण समाज हिंदुत्व के भाव से ओतप्रोत होकर अपने 'स्व' को जानने तथा उसके आधार पर जीने के लिए तत्पर हो रहा है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जीवन हमें सामाजिक दायित्वों के प्रति प्रतिबद्ध रहते हुए समाज व राष्ट्र के लिए त्याग करने की प्रेरणा देता है। उनकी शासन पद्धति 'रामराज्य' के नाम से विश्व इतिहास में प्रतिष्ठित हुई, जिसके आदर्श सार्वभौमिक व सार्वकालिक हैं। जीवन मूल्यों का क्षरण, मानवीय संवेदनाओं में आई कमी, विस्तारवाद के कारण बढ़ती हिंसा व क्रूरता आदि चुनौतियों का सामना करने हेतु रामराज्य की संकल्पना सम्पूर्ण विश्व के लिए आज भी अनुकरणीय है। प्रतिनिधि सभा का यह सुविचारित मत है कि सम्पूर्ण समाज अपने जीवन में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्शों को प्रतिष्ठित करने का संकल्प ले, जिससे राममंदिर के पुनर्निर्माण का उद्देश्य सार्थक होगा। श्रीराम के जीवन में परिलक्षित त्याग, प्रेम, न्याय, शौर्य, सद्भाव एवं निष्पक्षता आदि धर्म के शाश्वत मूल्यों को आज समाज में पुन: प्रतिष्ठित करना आवश्यक है। सभी प्रकार के परस्पर वैमनस्य और भेदों को समाप्त कर समरसता से युक्त पुरुषार्थी समाज का निर्माण करना ही श्रीराम की वास्तविक आराधना होगी।

अ.भा.प्र. सभा समस्त भारतीयों का आह्वान करती है कि बंधुत्वभाव से युक्त, कर्तव्यनिष्ठ, मूल्याधारित और सामाजिक न्याय की सुनिश्चितता करनेवाले समर्थ भारत का निर्माण करें, जिसके आधार पर वह एक सर्वकल्याणकारी वैश्विक व्यवस्था का निर्माण करने में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर सकेगा।◆◆◆

पांच सदियों तक चला राम जन्मभूमि आंदोलन : शिव प्रताप

मातृवंदना संस्थान शिमला द्वारा मातृवन्दना पत्रिका के श्रीराम जन्मभूमि विशेषांक एवं कारसेवक सम्मान समारोह का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। इस अवससर पर मातृवन्दना पत्रिका के संग्रहणीय विशेषांक के विमोचन के साथ हिमाचल के 100 कार सेवकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि हिमाचल प्रदेश राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संघचालक प्रो. वीर सिंह रांगड़ा, मा. विभाग अध्यक्ष राज कुमार वर्मा एवं प्रांत सद्भावना प्रमुख जितेन्द्र जी बतौर मुख्य वक्ता रहे। मातृवन्दना संस्थान के अध्यक्ष अजय सूद, प्रांत प्रचार प्रमुख श्री प्रताप सिंह समयाल, संपादक डॉ. दयानंद शर्मा, सह संपादक डॉ. कर्म सिंह भी विशेष रूप से मौजूद रहे। पत्रिका के सम्पादक डॉ. दयानंद शर्मा ने मातृवन्दना विशेषांक राम जन्मभूमि मंदिर की विषयवस्तु का वर्णन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने कहा कि राम की मर्यादाएं सर्वोच्च आदर्श हैं, इसीलिए सदियों के उतार-चढ़ाव के बाद भी भगवान राम के प्रति भारत सहित विश्व की विभिन्न संस्कृतियों में उनके प्रति श्रद्धाभाव बना हुआ है। पांच सदियों तक चले आंदोलन द्वारा इस कलंक को मिटाकर प्राण प्रतिष्ठा के बाद एक नए राष्ट्र का अभ्युदय हुआ है। उन्होंने कहा कि मातृवंदना पत्रिका का देवभूमि हिमाचल प्रदेश की पारंपरिक लोक संस्कृति कला भाषा और साहित्य के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रचार प्रसार में विशिष्ट योगदान रहा है। इस तरह की पत्रिका का अलग महत्व होता है और इससे हम अपने गौरवशाली इतिहास, अतीत एवं संस्कृति के बारे में ज्ञान अर्जित करते हैं।

मातृवन्दना पत्रिका पाठकों के लिए सम-सामयिक विषयों पर महत्वपूर्ण आलेख प्रकाशित कर रही है। पत्रिका का यह विशेषांक श्री राम जन्मभूमि और भगवान श्री राम को समर्पित किया गया है, जो कि एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रांत सद्भावना प्रमुख श्रीमान् जितेन्द्र जी ने कहा कि पुस्तकों और पत्र पत्रिकाओं तथा विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित साहित्य का अपना विशिष्ट महत्व है। क्योंकि इनमें हमें अपने इतिहास, धर्म, दर्शन, संस्कृति, जनजीवन और परंपराओं का बोध होता है। पत्रिकाओं के माध्यम से हम सामाजिक विषयों पर जानकारी के साथ-साथ पढने की आदत को भी बढा पाने में समर्थ होते हैं। वर्तमान में इस तरह की पुस्तकों और पत्र पत्रिकाओं का नितांत अभाव है, जिन्हें ड्राइंग रूम में सबके सामने रखा जा सके और परिवार में हर आयु वर्ग का व्यक्ति उनको पढ़ सके। ऐसी पत्रिकाओं को महत्व दिया जाना चाहिए जिनसे जीवन के निर्माण में तथा आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिलती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा इस वर्ष श्री राम जन्मभूमि मंदिर पर एक आकर्षक और स्तरीय अंक प्रकाशित करके इसमें राम जन्मभूमि आंदोलन के इतिहास, न्याय प्रक्रिया और प्राण प्रतिष्ठा तथा इस समग्र आंदोलन में हिमाचल प्रदेश के कार्यकर्ताओं, स्वयंसेवकों तथा कारसेवकों को स्थान दिया गया है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि साईं

इंजीनियरिंग के संस्थापक सदस्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि मातृवंदना का रामजन्म भूमि विशेषांक और वार्षिक कैलेंडर हमारी सांस्कृतिक विरासत का दर्पण है। ◆◆◆

सेवाभाव एवं राष्ट्रहित मजदूर संघ का लक्ष्य

भारतीय मजदूर संघ हिमाचल प्रदेश की कार्यसमिति की दो दिवसीय बैठक संघ के प्रदेशाध्यक्ष मदन राणा की अध्यक्षता में दाड़लाघाट में संपन्न हुई। इसमें अखिल भारतीय उप महामंत्री श्रीमान सुरेंद्र पांडेय जी, उत्तर क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री पवन कुमार जी, मातृ संगठन से प्रांत प्रचारक व पालक अधिकारी श्री संजय कुमार जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

बैठक का संचालन करते हुए प्रदेश महामंत्री यशपाल हेटा ने पिछली बैठक की कार्यवाही प्रस्तुत की। बैठक में जिलाधिवेशन के लिए 07 से 09 जून की तिथियां तय की गई। इस अवसर पर श्रीमान पवन कुमार ने भा.म.सं. के 70 वर्ष में प्रवेश होने पर आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रम बारे कार्यकर्ताओं को जानकारी दी। इसके अलावा अखिल भारतीय उप महामंत्री श्रीमान सुरेंद्र पांडेय जी ने प्रदेश भा.म.सं. को गुणवत्ता की दृष्टि से अन्य राज्यों की अपेक्षा श्रेष्ठ माना। उन्होंने कहा कि एल-20 में भामसं ने पहली बार अध्यक्षता की। आज 21 देशों के श्रम संगठन भारतीय मजदूर संघ की ओर देख रहे हैं। भारतीय मजदूर संघ की कार्यसमिति की बैठक में अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रांत प्रचारक व पालक अधिकारी श्रीमान् संजय कुमार ने कहा कि संगठन से जुड़ा हर व्यक्ति एक कार्यकर्ता है, जो एक विचार लेकर लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता है। हमें अपने जीवन के उद्देश्य को सामने रखकर पूर्ण समर्पण भाव से उसे हासिल करने का प्रयास करना चाहिए। इस दृष्टि से देशहित सर्वोपरि होना चाहिए। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में प्रत्येक नागरिक को मतदान का अधिकार है और सभी को निष्पक्षता से राष्ट्रहित में मतदान के लिए आगे आना चाहिए।

संघ का कार्य

व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण कार्य करना है - अरुण कुमार जी

वर्ष प्रतिपदा, हिन्दू साम्राज्य दिवस एवं विजयादशमी की बताई महत्ता

बिलासपुर (हिमाचल प्रदेश) - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह अरुण कुमार जी ने बिलासपुर नगर के स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय नव वर्ष परंपरा व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के निर्माण, संगठन एवं सौहार्द का प्रतीक है। सृष्टि के प्रारंभ से करोड़ों वर्षों का मानवीय संस्कृति का इतिहास, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारंभ होता है। इसे भारतीय संस्कृति में विविध रूपों में मनाए जाने की परंपरा है। जनजीवन में प्रचलित व्यवस्थाएं और परंपराएं मानव जीवन के निर्माण के लिए अनुकूलता प्रदान करती हैं, जिससे सभ्य, संगठित समाज और राष्ट्र का निर्माण हो सके तथा विश्व बंधुत्व की भावना को भी मजबूत किया जा सके। भारत की नव वर्ष परंपरा विज्ञान और व्यवहार तथा सौरमंडल की गति पर आधारित है जो धर्म, दर्शन, संस्कृति एवं लोक व्यवहार के माध्यम से व्यक्ति से राष्ट्र का निर्माण करती है। सह सरकार्यवाह जी नववर्ष (विक्रम संवत् 2081) के अवसर पर बिलासपुर में आयोजित वर्ष प्रतिपदा उत्सव में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी के चित्र पर पुष्प अर्पित करने के बाद कहा कि संघ का कार्य व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण का है। इसके लिए संस्कार को माध्यम बनाया जाता है और संस्कार को मजबूत बनाए रखने के लिए उसका बार-बार अभ्यास किया जाना आवश्यक होता है, ताकि अन्य सामाजिक बुराइयां अच्छे संस्कार को कमजोर न बना दें और व्यक्ति का चारित्रिक तथा सामाजिक पतन न हो।

उन्होंने तीन विषयों वर्ष प्रतिपदा, हिन्दू साम्राज्य दिवस एवं विजयादशमी पर विचार रखे। उन्होंने वर्ष प्रतिपदा को समाज के लिए गौरव का प्रतीक बताते हुए कहा कि वर्ष प्रतिपदा का दिन हमारे पराक्रमी महापुरूषों को स्मरण करने का भी अवसर रहता है। हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव, धर्म की जय और खुशी का प्रतीक है। इस दिवस को समृद्धि, सम्मान और एकता के रूप में मनाते हुए हिन्दू साम्राज्य के गौरवशाली भारतीय इतिहास के साथ हमारा जुड़ाव होता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक रूप से हम अपनी राष्ट्रीय अस्मिता के गौरव को पहचानने का प्रयास करते हैं। इसी तरह विजयादशमी का पर्व हमारे जीवन में शौर्य तथा अधर्म पर धर्म की जीत का प्रतीक है। विजयादशमी पर्व संघ स्थापना दिवस के रूप में हिन्दू जनमानस में सामाजिक सौहार्द, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय भावना को सुदृढ़ बनाने का मार्ग प्रशस्त करता है. इसलिए भारत की परंपराओं, संस्कारों और हिन्दू साम्राज्य की अखंडता के प्रति समर्पण भाव का संचार करने वाले पर्व का हिन्दू जनमानस में विशेष महत्व है। इस अवसर पर हिमाचल प्रांत के प्रांत संघचालक वीर सिंह रांगड़ा जी, नगर संघचालक सुरेंद्र जी सहित अन्य पदाधिकारी-कार्यकर्त्ता, स्वयंसेवक उपस्थित रहे।◆◆◆

हमीरपुर में भारत रत्न बाबा साहब आम्बेडकर के योगदान को किया याद

ठाकुर राम सिंह स्मृति न्यास टिप्पर, हमीरपुर द्वारा डॉ भीमराव आंबेडकर जी की जयंती के अवसर पर सभी ने बाबा साहब आंबेडकर जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। इस अवसर पर न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक शर्मा जी, उपाध्यक्ष श्री राजेंद्र जी, अरविन्द जी सचिव सहित अन्य सैकड़ों सामाजिक कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे। इस समारोह का आयोजन डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की जयंती के अवसर पर बहुत ही सामाजिक और संवेदनशील कदम है। इस संदर्भ में, ठाकुर राम सिंह स्मृति न्यास टिप्पर, हमीरपुर के सभी सदस्यों ने अपने समृद्ध सामाजिक समुदाय के साथ मिलकर डॉ. आंबेडकर जी को याद किया। इस अवसर पर सभी उपस्थित सामाजिक कार्यकर्त्ताओं का समर्थन एक महत्वपूर्ण संदेश है, जो समाज में समानता और न्याय की प्रोत्साहना करता है। इस प्रकार के समारोह समाज में एकता और समरसता को बढ़ावा देते हैं, जो हमारे समाज के विकास में महत्वपूर्ण हैं।◆◆◆

भारतीय सेना को मिली आकाशतीर प्रणाली

जमीन से लेकर हवा तक सीमा की हिफाजत करना होगा आसान

प्रोजेक्ट आकाशतीर एक स्वचालित वायु रक्षा नियंत्रण और रिपोर्टिंग प्रणाली है। इसमें सेंसर व रडार का नेटवर्क है, जो दुश्मन के विमान, जेट, हेलिकॉप्टर, ड्रोन व मिसाइलों के बारे में तुरंत अलर्ट जारी करते हैं।

भारतीय सेना की वायु रक्षा कोर को गुरुवार को आकाशतीर परियोजना के तहत कमांड और कंट्रोल सिस्टम मिला। इस प्रणाली की मदद से देश की जमीन से लेकर आसमान तक की हिफाजत सेना के लिए आसान हो जाएगी। इसे भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) ने विकसित किया है। रक्षा मंत्रालय ने पिछले बीईएल के साथ इस प्रणाली के विकास के लिए 1982 करोड़ रुपये का समझौता किया था। सूत्रों ने यह जानकारी दी। यह एक स्वचालित वायु रक्षा नियंत्रण और रिपोर्टिंग प्रणाली है। इसमें सेंसर व रडार का नेटवर्क है, जो दुश्मन के विमान, जेट, हेलिकॉप्टर, ड्रोन व मिसाइलों के बारे में तुरंत अलर्ट जारी करते हैं। इसके अलावा इस प्रणाली से मिले अलर्ट के आधार पर जमीन से हवा और सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें और रॉकेट्स को जोड़ा जा सकता है। इसके अलर्ट सेना और वायुसेना दोनों को मिलते हैं, जिससे दुश्मन के हमले के खिलाफ त्वरित प्रतिक्रिया देना आसान हो जाता है।

आकाशतीर प्रणाली खासतौर पर कम समय में ऊंचाई वाले इलाकों में हवाई जोखिमों की निगरानी को आसान बनाती है। आकाशतीर के संचालन के लिए भारतीय सेना का अपना सैटेलाइट काम करता है। इसे भारतीय सेना के भविष्य के इंटिग्रेटेड वॉर रूम का हिस्सा माना जा रहा है, जिसका इस्तेमाल तीनों सेनाएं मिलकर करेंगी। इस प्रणाली में जमीन पर भारतीय सेना और वायुसेना के रडार्स तैनात किए गए हैं। यह प्रणाली खासतौर पर सेना को वायुसेना से जोडने में मददगार होगी, क्योंकि वायुसेना के पास तो पहले से ही इस तरह का नेटवर्क एएफनेट है। इस प्रणाली के तहत सेना अलर्ट मिलते ही दुश्मन निशाने पर जमीन से हमला करेगी, अगर यह हमला असफल रहा, तो वायु सेना तुरंत मोर्चा संभाल लेगी।

इसके अलावा इसका एक बड़ा फायदा यह होगा कि युद्ध की स्थिति में यह प्रणाली सेना को अपनी ही वायु सेना के विमानों व मिसाइलों को गलती से निशाना बनाने से बचाने में मददगार साबित होगी। इसके अलावा विवादित हवाई क्षेत्र में मित्रवत् विमानों की सुरक्षा भी इसके जरिये की जा सकेगी।◆◆◆

चम्बा का ऐतिहासिक सूही मेला

हिमाचल प्रदेश में जल संकट से प्रजा की रक्षा करने के लिए अनेकों बलिदानों की गाथाएं प्रचलित हैं। ऐसी ही एक लोक गाथा चंबा की महारानी सुनयना के बलिदान की भी इतिहास में अमर है। सूही माता की पालकी राजमहल से मढ़ व फिर बलिदान स्थल मंलूणा व बाद में राजमहल वापिस पहुँचती है और तीन दिवसीय सूही माता का मेला संपन्न होता है। यह चंबा का एक ऐसा मेला है जहां केवल महिलाएं और बच्चे ही भाग लेते हैं। यहा मेला चंबा की रानी सुनयना के बलिदान की अमर गाथा को समर्पित है। मेले के दौरान लोकगीत पिंदडी, बसोआ गीत, घुरेही गीत व नृत्य की तो भरमार रहती ही है। साथ ही साथ घरों में स्थानीय पकवान व मेले में खट्टे पकोड़ू, पापड़ आदि विशेष रूप से खाये व खिलाए जाने की परम्परा है। छठी शताब्दी में चंबा की रानी सुनयना ने प्रजा की प्यास बुझाने के लिए जिंदा जमीन में समाधि ली। इसका विवरण साहिल बर्मन के पुत्र युगाकर बर्मन के एक ताम्रलेख में भी मिलता है। जिसमें बताया गया है कि चंबा नगर की स्थापना के समय वहां पर पानी की विकट समस्या थी। इस समस्या के समाधान के लिए राजा के आदेश पर नगर से करीब दो मील दूर सरोथा नाला से नगर तक कूहल द्वारा पानी लाने के लिए कूहल का निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया पर कर्मचारियों के प्रयासों के बावजूद इसमें पानी नहीं आया। गाथा के अनुसार एक रात राजा को स्वप्न में आकाशवाणी सुनाई दी जिसमें कहा गया कि कूहल में तभी पानी आएगा जब पानी के मूल स्रोत पर राज परिवार से किसी की बलि दी जाएगी। राजा इस स्वप्न को लेकर काफी परेशान रहने लगा, रानी सुनयना ने राजा से परेशानी की वजह पूछी तो उसने स्वप्न की सारी बात बता दी। लिहाजा रानी ने खुशी से प्रजा की खातिर अपना बलिदान देने की बात कही, राजा और प्रजा नहीं चाहती थे कि रानी पानी की खातिर अपना बलिदान दें, लेकिन रानी ने अपना हठ नहीं छोड़ा और जनहित में जिंदा समाधि लेने के लिए तैयार हो गई। कहा जाता है कि जैसे जैसे समाधि में मिट्टी भरने लगी, कूहल में भी पानी चढने लग पड़ा। इस तरह चंबा नगर में पानी आ गया और राजा साहिल बर्मन ने रानी की स्मृति में नगर के ऊपर बहती कूहल के किनारे रानी की समाधि बना दी। इस समाधि पर रानी की स्मृति में एक पत्थर की प्रतिमा विराजमान है, जिसे आज भी चंबा के लोग विशेषकर औरतें अत्यन्त श्रद्धा से पूजती हैं। प्रति वर्ष रानी की याद में 15 चैत्र से पहली बैशाखी तक मेले का आयोजन किया जाता है जिसे सूही मेला कहते हैं। इस मेले में केवल स्त्रियां और बच्चे ही जाते हैं। महिलाएं रानी की प्रशंसा में लोकगीत घुरेही गाती हैं जिसमें विशेष रूप से रानी के बलिदान की गाथा गाई जाती है और समाधि तथा प्रतिमा पर फूलों व धूप, नेवैद्य से पूजा अर्चना की जाती है।◆◆◆

जन्मभूमि मंदिर में श्री रामलला का सूर्य तिलक

500 वर्षों के बाद लंबे संघर्ष के बाद भव्य, दिव्य राम जन्मभूमि मंदिर में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होने के बाद पहली राम नवमी पर भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का सूर्य तिलक होना एक ऐतिहासिक घटना बन गई। पूरे विश्व के रामभक्तों ने इस अलौकिक दृश्य का आनंद लिया। राम जन्मभूमि मंदिर में यह पहली रामनवमी थी। इसलिए असंख्य राम भक्त श्रद्धालुओं ने रामलला के दिव्य दर्शन करने तथा पूजा अर्चना करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

अयोध्या में बने राम मंदिर में पहली बार रामनवमी के दिन रामलला का सूर्य अभिषेक किया गया। दोपहर 12 बजकर 16 मिनट पर सूर्य की पहली किरण रामलला के मस्तक पर पड़ी और इस अलौकिक दृश्य को करोड़ों लोगों ने देखा। सनातन धर्म और ज्योतिष में सूर्य का विशेष स्थान है। सूर्य की पहली किरण से मंदिर का अभिषेक होना बहुत शुभ माना जाता है। सूर्य को ऊर्जा का स्रोत और ग्रहों का राजा माना जाता है। ऐसे में जब देवता अपनी पहली किरण से भगवान का अभिषेक करते हैं तो उस आराधना में और देवत्व का भाव जाग जाता है। इस परिकल्पना को सूर्य किरण अभिषेक कहा जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार त्रेता युग में भगवान राम का जन्म हुआ था और भगवान राम प्रतिदिन सुबह सूर्यदेव को जल अर्पित करते थे। श्रीराम जन्म से सूर्यवंशी थे और उनके कुल देवता सूर्यदेव हैं। मान्यता है कि चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को दोपहर 12 बजे श्रीराम का जन्म हुआ था। उस समय सूर्य अपने पूर्ण प्रभाव में थे। सनातन धर्म के अनुसार उगते हुए सूर्यदेव को अर्घ्य देने, दर्शन व पूजा करने से बल, तेज व आरोग्य की प्राप्ति होती है। राम नवमी पर पूजा के लिए शुभ मुहूर्त सुबह 11 बजकर 05 मिनट से दोपहर 1 बजकर 35 मिनट तक रहा। अयोध्या में राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा के बाद पहली राम नवमी पर रामलला का सूर्य तिलक किया गया। राम नवमी पर पीली और गुलाबी पोशाक पहने रामलला भव्य मंदिर में विराजमान रहे और आज असंख्य भक्तों ने पूजा-अर्चना की। सूर्य तिलक के साथ भगवान रामलला का जन्मोत्सव शुरू हुआ। सुबह से रामलला की पूजा-आराधना का क्रम जारी रहा। आज के खास दिन रामलला ने स्वर्ण आभूषण और रत्न से जड़ित पोशाक पहनकर राम भक्तों को दर्शन दिए।

रामलला के मस्तक जब सूर्य की किरणें पड़ी तो पूरा दृश्य अलौकिक और दिव्य दिखा। करीब 5 मिनट तक रामलला के मस्तक पर सूर्य का तिलक बना रहा। इस समय रामलला का विग्रह दिव्य, भव्य और अलौकिक स्वरूप को धारण किए हुए था, जिनके दर्शन मात्र से भक्तों का जीवन धन्य हो जाता है।

रामलला का कैसे हुआ सूर्य तिलक, यह जानना भी बहुत दिलचस्प है। पहले चरण में सबसे पहले मंदिर के पहले हिस्से पर लगे दर्पण पर सूर्य की रोशनी गिरती है फिर यहां से रोशनी परावर्तित होकर पीतल के पाइप में रोशनी का प्रवेश होता है। दूसरे चरण में फिर दूसरे चरण में पीतल की पाइप में लगे दूसरे दर्पण से सीधे रोशनी टकराकर 90 डिग्री में बदल जाती है। तीसरे चरण मे फिर लंबवत पीतल के पाइप में सूर्य किरणें तीन अलग-अलग लेंस से आगे बढती है। सूर्य तिलक के चौथे चरण में किरणें तीन लेंस से गुजरने के बाद गर्भगृह की सीध में लगे दर्पण से टकराती हैं और पांचवें चरण मे यहां से किरणें एक बार फिर 90 डिग्री के कोण में मुडक़र सीधी यानी क्षैतिज रेखा में आ जाती हैं। आखिरी चरण में किरणें सीधे रामलला के मस्तक पर टकराती है और सूर्य तिलक की प्रक्रिया पूर्ण होती हैं।◆◆◆

अवध में होली खेले रघुवीरा

श्री राम जन्मभूमि मंदिर में 500 वर्षों के बाद होली खेली गई और यह पर्व धूमधाम से मनाया गया। सौभाग्यशाली हैं वे रामभक्त जिन्होंने राम मंदिर आंदोलन को जीवंत बनाए रखा और 500 वर्षों की लंबी संघर्षपूर्ण यात्रा के बाद उनके योगदान से भव्य राम मंदिर का निर्माण हो सका। इस बार श्री रामलला मंदिर में शताब्दी के बाद होली का पर्व उल्लासपूर्वक मनाया गया। अबीर, गुलाब ने आसमान में इंद्रधनुषी रंग बिखेरे और लोगों ने प्रेमभाव से होली का पर्व मनाया। 'होली खेले रघुवीरा अवध में होली खेले रघुवीरा' ये भजन मंदिरों और सोशल मीडिया पर खूब सुनने को मिले और लोगों ने सामूहिक रूप से होली के पर्व को मनाया। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम सामूहिक रूप से हिंदू मेले पर्व त्योहारों को मनाएं। बिना किसी भेदभाव के सभी मिलकर मेलों का आनंद उठाएं। खुशियां बांटे और युवाओं, महिलाओं तथा नई पीढ़ी के बालक बालिकाओं के साथ अपने इन पारंपरिक मेलों की सांस्कृतिक विरासत एवं परंपरा का ज्ञान सांझा करें।◆◆◆

भारतीय कालगणना
पंचांग एवं नव संवत्सर परंपरा

''तिथि, वार, नक्षत्र, योग की प्रामाणिक जानकारी के लिए ऋषि-मुनियों ने खगोलीय घटनाओं के आधार पर ऐसी वैज्ञानिक विधि की खोज की है, जिसके आधार पर कालगणना का अध्ययन किए जाने की परंपरा है''

- डॉ. विवेकानंद तिवारी

प्रत्येक ऋतु के चक्र को वत्स कहते हैं। इसके उत्पादक पिता सूर्य हैं। इसी वत्स से वत्सर या संवत्सर नाम पड़ा। पाश्चात्य जगत में पहले 10 महीने का ही वर्ष होता था। महीनों के दिनों में भी साम्यता नहीं है। प्रारंभ में उनका वर्ष 304 दिन का ही होता था। 48 ई. में इसे बढ़ाकर 355 दिन का कर दिया गया। राजा इंपोरियम ने वर्ष के महीनों को 10 से बढ़ाकर 12 माह करके जनवरी और फरवरी दो नए महीने जोड़े। राजा जूलियस सीजर ने पूर्व में प्रचलित 'पेटेंबर' महीने को अपने नाम पर 'जुलाई' नाम दिया और पहले के शासकों से अपने को बड़ा दिखाने के लिए 31 दिन का महीना निर्धारित किया। रोम के शासक ऑगस्टक का जन्म छठे मास में हुआ था। इसीलिए पूर्व के महीने 'हैक्सेंबर को अपने नाम पर अगस्त' कर दिया। 1582 ई. में रोम के पोष ग्रेगरी अष्टम ने पुन: रोम कैलेंडर में सुधार किया। उनके पहले यहां नववर्ष 25 मार्च को मनाया जाता था। पोप ने 25 मार्च के स्थान पर 1 जनवरी को पहला दिन घोषित किया, जिसका विश्वभर में प्रबल विरोध हुआ। इंग्लैंड तथा अमेरिका के उपनिवेशों में 1732 ई. तक नववर्ष 25 मार्च को ही प्रारंभ होता था। ग्रेगेरियन कैलेंडर में 10 मास (दिसंबर) अब बारहवां मास बन गया। 8वीं शताब्दी के मध्यकाल तक ब्रिटेन तथा उसके औपनिवेशिक राज्य में उसे 10वां मास ही माना गया। 1923 ई. में रूस के ग्रीक चर्च तथा बाल्कन राज्यों में वर्ष मार्च से फरवरी तक ही चलता रहा। 25 दिसंबर को प्राचीन रोम में सूर्य पूजा का महानता महोत्सव मकर संक्रांति मनाया जाता था। भारत में इसे दो प्रकार का माना गया-एक, धरती द्वारा सूर्य की परिक्रमा के आधार पर सौर वर्ष और दूसरा, चंद्रमा द्वारा धरती की 12 परिक्रमा पूर्ण करने के आधार पर चांद्र वर्ष। रोम में पूर्व में चांद्र वर्ष मनाया जाता रहा है। अरब में अब भी चांद्र वर्ष ही चलता है। कुल 60 संवत्सर परिगणित हैं। इसका चक्रभ्रमण होता है। प्रारंभ 20 ब्रह्मा के, 20 विष्णु के और 20 महेश के निर्धारित हैं। वर्तमान कलियुग के आरंभ के संदर्भ में यूरोप के प्रसिद्ध खगोलवेत्ता बेली का कथन है, **हिंदुओं की खगोलीय गणना के अनुसार विश्व का वर्तमान समय यानी कलियुग का आरंभ ईसा के जन्म से 3,102 वर्ष पूर्व 20 फरवरी को 2 बजकर 27 मिनट तथा 30 सेकेंड पर हुआ था।** इस प्रकार यह कालगणना मिनट तथा सेकेंड तक की गई। एक दिन-रात में 86,400 सेकेंड हिंदू कालगणना का सूक्ष्मतम अंश परमाणु है तथा महत्तम अंश ब्रह्मा आयु है। जो इस प्रकार है- 2 परमाणु = 1 अणु, 3 अणु = 1 त्रसरेणु, 1 त्रसरेणु = 1 त्रुटि, 100 त्रुटि =1 वेध, 3 वेध = 1 लव, 3 लव = 1 निमेष, 1 निमेष = 1 क्षण, 5 क्षण = 1 काष्ठा, 5 काष्ठा =1 लघु, 15 लघु को ही एक दंड कहते हैं। दो दंडों को एक मुहूर्त तथा 6 तथा 7 दंडों का एक प्रहर होता है। एक दिन-रात में 3280500000 परमाणु काल तथा 86,400 सेकेंड होते हैं। इसका अर्थ सूक्ष्मतम माप यानी। परमाणु काल। सेकेंड का 37968वां हिस्सा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नवंबर, 1952 में वैज्ञानिकों और औद्योगिक परिषद द्वारा 'पंचांग सुधार समिति' की स्थापना की गई। समिति ने 1955 में सौंपी अपनी रपट में विक्रमी संवत् को भी स्वीकार करने की सिफारिश की थी, किंतु तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू के आग्रह पर ग्रेगरियन कैलेंडर को ही राष्ट्रीय कैलेंडर के रूप में स्वीकार किया गया। ग्रेगेरियन कैलेंडर की कालगणना मात्र 2,000 वर्ष के अति अल्प समय को दर्शाती है, जबकि यूनान की 'कालगणना 1,582 वर्ष, रोम की 2,757 वर्ष, यहूदी 5,768, मिस्र की 28,691, पारसी 1,98,875 तथा चीन की 9,60,02,305 वर्ष पुरानी है।

इन सबसे अलग यदि भारतीय कालगणना की बात करें तो हमारे ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी की आयु एक अरब 97 करोड़ 39 लाख 49 हजार 110 वर्ष है जिसके व्यापक प्रमाण उपलब्ध हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में एक-एक पल की गणना की गई है। जिस प्रकार ईस्वी सन् का संबंध ईसा से है, इसी प्रकार हिजरी का संबंध मुस्लिम जगत और हजरत मोहम्मद से है। किंतु विक्रमी संवत् का संबंध किसी भी धर्म से न होकर सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धांत और ब्रह्माण्ड के ग्रहों और नक्षत्रों से है। इसलिए भारतीय कालगणना पंथनिरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना और राष्ट्र की गौरवशाली परंपराओं को दर्शाती है। इतना ही नहीं, सबसे पुरातन ग्रंथ वेदों में भी इसका वर्णन है। नव संवत् यानी संवत्सरों का वर्णन यजुर्वेद के 27वें और 30वें अध्याय के मंत्र क्रमांक क्रमश: 45 और 15 में विस्तार से दिया गया है। सौर मंडल के ग्रहों और नक्षत्रों की चाल, निरंतर बदलती उनकी स्थिति पर ही हमारे दिन, महीने और साल आधारित हैं। भारत में अभी प्रचलित सभी संवतों में विक्रमी संवत् को सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्रमाणित माना गया है। इस संवत् को शकों को पराजित करने के उपलक्ष्य में राजा विक्रमादित्य ने 58 ईसा पूर्व प्रारंभ किया था। यह संवत् प्रकृति में बदलाव का संकेत करता है। भारतवर्ष के लगभग सभी प्रांतों में किसी स्थान पर इसका वर्षारंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है, तो कहीं-कहीं कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से भी होता है। नर्मदा नदी के उत्तरी भाग गुजरात प्रांत को छोड़कर भारत में सर्वत्र यह संवत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से चलता है। महान गणितज्ञ भास्कराचार्य ने प्रतिपादित किया है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से दिन-मास-वर्ष और युगादि का आरंभ हुआ है। युगों में प्रथम सतयुग का आरंभ भी इसी दिन से हुआ है। चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा वर्ष प्रतिपदा कहलाती है। इस दिन से ही नया वर्ष प्रारंभ होता है।◆◆◆

अंतिम चरण में हिमाचल में लोस-विस चुनाव का दिलचस्प मुकाबला

... हितेन्द्र शर्मा

हिमाचल प्रदेश में लोकसभा की चार और विधानसभा की छ: सीटों के लिए अंतिम चरण में चार जून को चुनाव हो रहे हैं। अब की बार लोकसभा में चार की चार और विधानसभा में भी छ: सीटें जीतने का दावा दोनों प्रमुख दलों द्वारा किया जा रहा है। वास्तव में लोकसभा की चार और विधानसभा की छह सीटें किसे मिलती हैं या किसको कितनी-कितनी मिलती हैं, यह निर्णय तो मतदाताओं को ही करना है। लोकसभा के चुनाव के लिए भाजपा ने मंडी से कंगना रणौत, कांगड़ा से डॉ राजीव भारद्वाज, हमीरपुर से केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर और शिमला से पूर्व सांसद सुरेश कश्यप को मैदान में उतारा है जबकि कांग्रेस की ओर से मंडी में लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह और शिमला में विधायक विनोद सुल्तानपुरी मैदान में है। कांग्रेस की वर्तमान अध्यक्ष एवं पूर्व सांसद प्रतिभा सिंह ने स्थितियां अनुकूल न होने तथा कार्यकर्ताओं में निराशा होने के कारण चुनाव लड़ने से मना कर दिया और पार्टी को उनके बेटे विक्रमादित्य सिंह को चुनाव में उतारना पड़ा।

हालांकि मंडी लोकसभा क्षेत्र की प्रत्याशी कंगना रणौत राजनीति में नई है परंतु राष्ट्रवाद के लिए उनका समर्पण, स्पष्टवादिता तथा संघर्षशील व्यक्तित्व उन्हें राजनीति में स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव हो सकता है। कंगना रणौत 'अबकी बार चार की चार' का नारा बुलंद करके नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए केंद्र सरकार की उपलब्धियों, सनातन एवं भारत माता तथा विकसित भारत के लिए वोट मांग रही है जबकि विक्रमादित्य सिंह एक दमदार युवा प्रत्याशी के रूप में पूर्व सांसद के कार्यक्रमों तथा वर्तमान सरकार की योजनाओं के आधार पर मतदाताओं को आकर्षित करने में लगे हैं।

यद्यपि कुछ भारत विरोधी अंतर्राष्ट्रीय ताकतें प्रधानमंत्री का पुरजोर विरोध करने के लिए कई तरह की साजिशें रच रहे हैं। विश्व समुदाय की भी इस चुनाव पर पैनी नजर बनी हुई है। परंतु नरेंद्र मोदी इन चुनौतियों का सामना करने के लिए पूरी तरह से सजग और तैयार दिखते हैं तथा पूरे देश में धुआंधार चुनावी जनसभाओं को संबोधित करने में कड़ी मेहनत भी कर रहे हैं जबकि विपक्ष राष्ट्रीय स्तर पर बिखरा हुआ नजर आता है और क्षेत्रीय दलों के प्रदर्शन पर ही केंद्र की राजनीति निर्भर करेगी। हिमाचल में लोकसभा चुनाव प्रधानमंत्री के नाम पर लड़ा जा रहा है जबकि कांग्रेस भी चुनाव में बराबर की टक्कर देने के लिए तैयार है। अभी तक सभी चुनाव पूर्व सर्वेक्षण यही बता रहे हैं कि नरेंद्र मोदी तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं और बिखरा हुआ विपक्ष उनके मुकाबले में काफी पिछड़ता जा रहा है। इस दृष्टि से यह चुनाव सीधा प्रधानमंत्री के नाम पर केंद्रित हो गया है जबकि विपक्ष के पास कोई एक सर्वमान्य चेहरा अभी तक सामने नहीं आया है। इंडी गठबंधन के दल एक दूसरे का विरोध करते हुए नजर आ रहे हैं। ऐसे में अगर हिमाचल में बीजेपी चारों सीट जीत जाती है तो केन्द्र की सरकार में हिमाचल का भी प्रतिनिधित्व निश्चित हो सकेगा। केंद्र में कांग्रेस की सरकार बनने पर हिमाचल को कोई खास प्रतिनिधित्व मिलने की उम्मीद फिलहाल तो नहीं लगती। हिमाचल में मतदाता के पास एक विकल्प भाजपा के पिछले 10 वर्षों की मोदी सरकार की उपलब्धियां का मूल्यांकन करते हुए राष्ट्र के चहुंमुखी तीव्र विकास एवं विकसित भारत के लिए वोट करने का है और दूसरा विकल्प कांग्रेस सरकार की केन्द्र में पहले की कारगुजारियों और अपने समय के शासन तथा उपलब्धियां के पक्ष में अपना मतदान करने का है। अब यह तो मतदान के नतीजे ही तय करेंगे कि हिमाचल का जागरूक मतदाता किसे चुनता है। मतदाताओं को केंद्र के साथ-साथ प्रदेश के उपचुनावों पर भी मतदान करना है जिसमें केंद्र और प्रांतीय सरकार की कारगुजारी एवं उपलब्धियां भी मुख्य मुद्दा हो सकता है।

कांग्रेस को हमीरपुर और कांगड़ा में लोकसभा तथा विधानसभा के लिए प्रत्याशी ढूंढने में भारी मशक्कत करनी पडी और चुनाव प्रचार के लिए कम समय मिल पाया। उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री की पुत्री आस्था अग्निहोत्री ने भी हमीरपुर संसदीय क्षेत्र और गगरेट विधानसभा से चुनाव लड़ने से मना कर दिया है जो कि कांग्रेस के लिए संगठन और चुनाव की दृष्टि से एक अच्छा संकेत नहीं कहा जा सकता है। इन परिस्थितियों में निर्णय जागरूक मतदाताओं को लेना है कि वे केंद्र में किसे प्रधानमंत्री चुनना चाहते हैं तथा विधानसभा के चुनाव में किसको अपना समर्थन देते हैं। केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की स्वच्छ छवि, कर्मठता और विकसित भारत का सपना है, तो विपक्ष में इंडी गठबंधन के नेतृत्व का चयन चुनाव में होने वाली सफलता पर निर्भर करता है। फिलहाल फैसला जनता के हाथ में है जो चुनाव के नतीजों के बाद ही सामने आ सकेगा।

इधर कांग्रेस छोड़कर भाजपा में आए छ: विधायक भाजपा की टिकट पर विधानसभा का चुनाव लड़ रहे हैं। इन विधायकों द्वारा कांग्रेस में रहते हुए राज्यसभा के लिए भाजपा के प्रत्याशी हर्ष महाजन के पक्ष में मतदान करने पर अयोग्य करार दिया गया था। सरकार बचाने तथा बजट पारित करवाने के लिए भाजपा के पंद्रह विधायकों

को निलंबित करना पड़ा था। ऐसे हालात में एक मंत्री और एक विधायक को संसद का चुनाव लड़ाया जाना जोखिम भरा हो सकता है। इनकी जीत होने पर वर्तमान सरकार में दो विधायक कम हो जाएंगे और अगर भाजपा के छह विधायक जीत जाते हैं तो सरकार को बचाना कठिन हो जाएगा। यदि मंत्री और विधायक चुनाव हार जाते हैं तो उनकी साख जरूर गिरेगी और उन्हें अपनी पार्टी के भीतर ही फिर से संघर्ष करना पड़ सकता है। क्योंकि वर्तमान नेतृत्व की नीति और नीयत अब स्पष्ट होने लगी हैं कि वे संभवत: पूर्व मुख्यमंत्री के हिमायतियों को किनारे करने में लगे हैं। उनके लिए सरकार को बनाए रखने के लिए खुद को स्थापित करना अधिक जरूरी लगता है।

इधर यदि मंत्री विक्रमादित्य सिंह और विधायक विनोद सुल्तानपुरी जीत जाते हैं तो उन्हें विधायक पद से इस्तीफा देना पड़ेगा। ऐसे में कांग्रेस सरकार अल्पमत में आ जाएगी। उस स्थिति में तीन निर्दलीय विधायकों के त्यागपत्र स्वीकार करके सरकार बचाने के अलावा कांग्रेस के पास कोई और विकल्प नजर नहीं आता।

विक्रमादित्य के स्थान पर उनकी माता प्रतिभा सिंह को शिमला ग्रामीण से तथा विनोद सुल्तानपुरी के स्थान पर उनके किसी परिवारजन को चुनाव लड़ा कर जीतकर आना और तीन निर्दलीय विधायकों का आगामी छह महीने के अंदर उपचुनाव करवाना और तीनों सीट जीत पाना, यदि संभव होता है तभी सरकार सुख चैन की सांस ले सकेगी अन्यथा राजनीतिक उठा पटक की इन विपरीत परिस्थितियों में ठाकुर जय राम फिर से मुख्यमंत्री के पद के लिए संभावित दावेदारी जताने के लिए प्रयत्नशील हो सकते हैं।

नतीजा कुछ भी हो हिमाचल में यह वर्ष चुनाव के लिए जाना जाएगा। पहले लोकसभा और विधानसभा का पहला उपचुनाव और फिर उसके बाद विधानसभा के दूसरे उपचुनाव में पूरा साल बीत जाने का अंदेशा है जिससे सरकारी कामकाज तो ठप रहेगा ही, राजनीति में उठा पटक का दौर भी बखूबी चलता रहेगा। हिमाचल में भाजपा और कांग्रेस दोनों के लिए आगामी छह सात महीनों तक खींचतान का माहौल बना रहेगा। ऐसे में कटेगा तो खरबूजा ही, नुकसान जनता का ही होगा। यह निश्चित है। जो भी सरकार बने, वह अपना कार्यकाल पूरा करे, जनता के कल्याण के लिए काम करे और राष्ट्रवाद तथा आत्मनिर्भर प्रदेश और भारत के लिए समर्पित हो।◆◆◆

राज्य सभा सदस्य श्रीमति सुधा मूर्ति

साहित्य सृजन में अहम योगदान

मशहूर लेखिका और समाज सेविका सुधा मूर्ति को राज्यसभा के लिए नॉमिनेट किया गया है। सुधा मूर्ति मशहूर बिजनेसमैन और इंफोसिस के को-फाउंडर नारायण मूर्ति की पत्नी हैं। ब्रिटेन के पीएम ऋषि सुनक उनके दामाद हैं।

नरेंद्र मोदी ने 8 मार्च को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी पोस्ट में लिखा- भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सुधा मूर्ति को राज्यसभा के लिए मनोनीत किया है। राज्यसभा में उनकी मौजूदगी नारी शक्ति का शक्तिशाली प्रमाण है। सामाजिक कार्य, परोपकार और शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान प्रेरणादायक रहा है। राज्यसभा में नॉमिनेट होने के बाद सुधा मूर्ति ने कहा- **''मैं खुश हूं, लेकिन अब मुझे लग रहा है कि मुझ पर बड़ी जिम्मेंदारी दी गई है। मुझे खुशी है कि अब मुझे गरीबों की मदद करने के लिए बड़ा प्लेटफॉर्म मिल रहा है।''** सुधा पद्म भूषण और पद्मश्री से सम्मानित हो चुकी हैं। सुधा को कन्नड़ और अंग्रेजी साहित्य में उनके योगदान के लिए जाना जाता है। उन्होंने विभिन्न शैलियों में 30 से अधिक किताबें लिखी हैं। उनकी किताबों का कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है। उनकी कुछ प्रसिद्ध किताबों में द मदर आई नेवर न्यू, थ्री थाउजेंड स्टिचेस, द मैन फ्रॉम द एग और मैजिक ऑफ द लॉस्ट टेम्पल शामिल हैं।

सुधा लेखिका के अलावा एक टीचर और इंफोसिस फाउंडेशन की पूर्व अध्यक्ष रह चुकी हैं। सुधा मूर्ति को सामाजिक कार्यों के लिए 2006 में पद्म श्री और 2023 में भारत के तीसरे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म भूषण से सम्मानित किया जा चुका है।

सुधा मूर्ति ने साल 1978 में नारायण मूर्ति से शादी की थी। इनके दो बच्चे- अक्षता मूर्ति और रोहन मूर्ति हैं। अक्षता मूर्ति ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक की पत्नी हैं। रोहन मूर्ति अमेंरिका बेस्ड सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट फर्म सोरोको के फाउंडर हैं। इंफोसिस का कारोबार अमेंरिका, इंग्लैंड सहित कई देशों में हैं। जब नारायण मूर्ति ने कंपनी शुरु करने का प्लान बनाया था, तब वे पत्नी सुधा मूर्ति के साथ एक कमरे के मकान में रहते थे। 1981 में नारायण मूर्ति ने अपने 6 साथियों के साथ मिलकर इंफोसिस की शुरुआत की थी। कंपनी का नाम इंफोसिस तय हो चुका था, लेकिन पैसों की तंगी बनी हुई थी। नारायण मूर्ति ने अपना हिस्सा देने के लिए पत्नी से उस समय 10,000 रुपए उधार लिए थे।◆◆◆

जनजातीय क्षेत्र पांगी का त्यौहार जुकारू

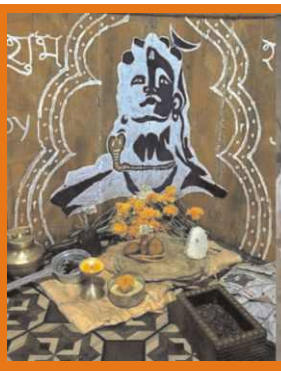

... राजेन्द्र कुमार शर्मा

हिमाचल प्रदेश को 'देवभूमि' भी कहा जाता है क्योंकि ऐसी मान्यता है कि यहां के कण-कण में देवताओं का वास है।

हिमाचल एक पहाड़ी और प्राचीन सभ्यता से जुड़ा हुआ स्थल रहा है। यहां पर त्यौहार और मेलों को स्थानीय लोग बड़े ही धूमधाम से मनाते हैं। जिला चंबा के जनजातीय क्षेत्र पांगी में 12 दिवसीय 'जुकारू उत्सव' का शुभारंभ माघ माहीने की मौनी अमावस्या से होता है और इसके बाद पांगी घाटी में 12 दिन तक जुकारू उत्सव की धूम रहती है। इस उत्सव को आपसी भाईचारे का प्रतीक माना जाता है। आगामी मध्यरात्रि को घाटी के लोग अपने घरों की दीवारों पर बली राजा का चित्र उकेरते हैं। इसकी प्राण प्रतिष्ठा की जाती है। वहीं पड़ीद के पहले दिन सिलह के रूप में मनाया जाता है। इस दिन पंगवाल समुदाय अपने घरों में लिपाई पुताई करते हैं। शाम को घर के मुखिया 'भरेस' 'भंगड़ी' और आटे के बकरे बनाता है जिसे बनाते समय कोई किसी से बातचीत नहीं करता है। पूजा सामग्री अलग कमरे में रखी जाती है। रात्रि भोजन के बाद गोबर की लिपाई की जाएगी।

वहीं, सुबह करीब तीन बजे बलीराज की गंगाजल के छिड़काव व विशेष पूजा अर्चना के बाद प्राण प्रतिष्ठा की जाती है। इसके बाद 12 दिनों तक पांगी घाटी के लोग बलीराज की पूजा करते हैं। वहीं बाली राज के समक्ष चौका लगाया जाता है। गोमूत्र और गंगाजल छिड़कने के बाद गेहूं के आटे और जौ के सत्तुओं से मंडप लिखा जाता है जिसे पंगवाली भाषा में %चौका% कहते हैं। मंडप के सामने दीवार पर बली राजा की मूर्ति स्थापित की जाती है। इसे स्थानीय बोली में %जन बलदानों राजा% कहते हैं। आटे से बने बकरे, मेंढ़े आदि मंडप में तिनकों के सहारे रखे जाते हैं। मंडप बनाने वाला बली राजा की पूजा करता है। घाटी के बाशिंदे आटे के बकरे (चौक) तैयार कर राजा बलि को अर्पित करते हैं। धूप-दीये और चौक लगाकर 12 दिन तक राजा बलि की ही पूजा की जाती है। इस दौरान कुलदेवता से लेकर अन्य देवी-देवताओं की पूजा नहीं की जाती। लोग एक-दूसरे के घरों में जाकर बड़े-बुजुर्गों का आशीर्वाद लेते है जिसे स्थानीय भाषा में %पड़ीद% कहते हैं।

प्रात: ब्रह्म मुहूर्त में उठकर लोग स्नानादि करके राजा बलि के समक्ष नतमस्तक होते हैं। इसके पश्चात् घर के छोटे सदस्य बड़े सदस्यों की चरण वंदना करते हैं। बड़े उन्हें आशीर्वाद देते हैं। राजा बलि के लिए पनघट से जल लाया जाता है। इस अवसर पर लोग जल देवता की पूजा भी करते हैं। इस दिन घर का मुखिया 'चूर' की पूजा भी करता है क्योंकि वह खेत में हल जोतने के काम आता है। पडीद की सुबह होते ही 'जुकारू' आरंभ होता है। जुकारू का अर्थ है- बड़ों का आदर। लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं इस त्यौहार का एक अन्य अर्थ यह है कि सर्दी तथा बर्फ के कारण लोग अपने घरों में बंद थे, इसके बाद सर्दी कम होने लग जाती है। लोग इस दिन एक दूसरे के गले मिलते हैं तथा कहते हैं 'तकडा थिया' और जाने के समय कहते हैं 'मठे' 'मठे' विश। लोग सबसे पहले अपने बड़े भाई के पास जाते हैं उसके बाद अन्य संबंधियों से मिलने जाते हैं।

तीसरा दिन मांगल या पन्हेई के रूप में मनाया जाता है। 'पन्हेई' किलाड़ परगने में मनाई जाती है, जबकि साच परगने में 'मांगल' मनाई जाती है। 'मांगल' तथा 'पन्हेई' में कोई विशेष अंतर नहीं होता मात्र नाम की ही भिन्नता है। मनाने का उद्देश्य एवं विधि एक जैसी ही है, फर्क सिर्फ इतना है कि साच परगने में मांगल जुकारू के तीसरे दिन मनाई जाती है तथा पन्हेई किलाड़ परगने में पांचवें दिन मनाई जाती है। मांगल तथा पन्हेई के दिन लोग भूमि पूजन के लिए निर्धारित स्थान पर इकट्ठा होते हैं। इस दिन प्रत्येक घर से सत्तू घी शहद 'मंण्डे' आटे के बकरे तथा जौ, गेहूं आदि का बीज लाया जाता है। कहीं-कहीं शराब भी लाई जाती है। अपने-अपने घरों से लाई गई इस पूजन सामग्री को आपस में बांटा जाता है। भूमि पूजन किया जाता है। कहीं-कहीं नाच-गान भी किया जाता है। इस त्यौहार के बाद पंगवाल लोग अपने खेतों में काम करना शुरु कर देते हैं। इस मेले को 'उवान' 'ईवान' आदि नामों से भी जाना जाता है। यह मेला किलाड़ तथा धरवास पंचायत में तीन दिन तक मनाया जाता है। पहले दिन मेला राजा के निमित्त, दूसरे दिन प्रजा के लिए और तीसरा दिन नाग देवता के लिए माघ और फागुन मास में मनाया जाता है। उवान के दौरान स्वांग नृत्य भी होता है इस दिन नाग देवता के कारदार का स्वांग बनाया जाता है। लंबी-लंबी दाढ़ी मूंछ, सिर पर मुकुट पहनें तथा लंबी-लंबी जटाएं हाथ में कटार लिए स्वांग को मेले में लाया जाता है। दिन भर नृत्य के बाद स्वांग को उसके घर पहुंचाया जाता है। इसी के साथ 'ईवान मेला' समाप्त हो जाता है। जुकारू से संबंधित जीत भी गए जाते हैं-

पांगी रे देशा जुकारू मेला, खाणी पीणी मौज मनाणी हो।
सिल्हे रा मेला बलिराज जातरा, अपणा घर बी सजाणा हो।
पडीद मेले गेल असां मिलणा, भुल चुक सारी भुलाणी हो।
पडीद मेला खाणी पाणी जातरा, असां रज्जी रज्जी खाणी पीणी हो।

◆◆◆ लेखक क्षेत्रीय अध्ययन केंद्र धर्मशाला में सहायक आचार्य हैं।

सनातन पर ही चोट क्यों?

... वासुदेव शर्मा

भारत में सदियों से विचारों की स्वतंत्रता रही है। इसी के परिणाम स्वरुप यहां आस्तिक और नास्तिक दोनों तरह की विचारधाराएं साथ-साथ पलती रही हैं। इनमें वैचारिक संघर्ष भी होता रहा। जिसको राजनीतिक संरक्षण मिलता रहा वह धड़ल्ले से फलता फूलता रहा। बहुसंख्यक हिंदुओं को कभी राजनीतिक संरक्षण वर्तमान दौर में तो नहीं मिला। जहां अन्य समुदाय के लोग बहुसंख्यक हैं और उनकी आबादी कई गुना बढ़ गई है, वहां भी हिंदुओं को ही बहुसंख्यक माना जाता है, यह एक राजनीतिक विवशता और षड्यंत्र ही कहा जा सकता है। **यह कैसी विडम्बना है कि अफगानिस्तान और पाकिस्तान से भारत में आने वाले हिंदू शरणार्थियों को नागरिकता देने का विरोध किया जाता है और उसके विपरीत रोहिंग्या और बांग्लादेशी करोड़ों घुसपैठिए मुसलमानों को नागरिकता देने की वकालत की जाती है और उन्हें यहां से वापिस भेजे जाने का विरोध किया जाता है।** उन्हीं के वोटों के बलबूते कुछ राजनीतिक दलों का अस्तित्व बना हुआ है। पंथनिरपेक्षता के स्थान पर धर्मनिरपेक्षता संशोधन भी किसी षड्यंत्र से कम नहीं लगता है। वोट की राजनीति के चलते अल्पसंख्यकों को सभी सुविधाएं दी जाने लगीं है। देश के संसाधनों पर उनका पहला हक माना जाना और बहुसंख्यक हिंदू समुदाय की उपेक्षा को किसी भी आधार पर सही नहीं ठहराया जा सकता है। अल्पसंख्यकों को सुविधाएं दी जानी चाहिए, परंतु बहुसंख्यकों के साथ भी भेदभाव नहीं होना चाहिए। वर्तमान में जहां कुछ प्रदेशों में हिंदू विरोधी मानसिकता को राजनीतिक संरक्षण पूरी तरह से मिला है, वहां सत्य सनातन हिंदू धर्म का अपमान किया जा रहा है। ममता बनर्जी, अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव, केजरीवाल कुछ ऐसे नेता हैं जो खुलेआम इस्लाम का समर्थन करते हैं तथा हिंदुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का काम करते हैं। हिंदुओं के त्योहारों पर पाबंदियां लगाना, धार्मिक जुलूसों पर पथराव करना और अल्पसंख्यकों को खुली छूट देना इनकी राजनीति का मकसद है। पहले स्टालिन द्वारा सनातन को डेंगू मलेरिया कहा गया। ओवैसी द्वारा भगवान श्री राम के संबंध में गलत बयानबाजी की गई। हाल ही में चारा चोर लालू यादव के वारिस तेजस्वी यादव ने नवरात्रि में **मछली खाने की वीडियो सोशल मीडिया पर चलाकर जानबूझ कर हिंदुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का काम किया है।** आजादी की अभिव्यक्ति के नाम पर वामपंथी चीनी माओवाद का समर्थन और सनातन का खुला विरोध इसी मानसिकता का प्रतिफल है। राम मंदिर के निर्माण एवं प्राण प्रतिष्ठा के समय कांग्रेस सहित जिन राजनीतिक दलों ने प्राण प्रतिष्ठा समारोह में निमंत्रण मिलने के बाद भी कार्यक्रम का बायकाट किया, यह सब हिंदू विरोधी मानसिकता की ही उपज नहीं तो और क्या है? राम मंदिर का निर्माण, काशी विश्वनाथ, ज्ञानवापी के मुद्दे विपक्ष को राजनीतिक रूप से आंखों में खटकते रहे हैं और इन महत्वपूर्ण कार्यों के पूर्ण होने से हिंदू जनों में राष्ट्रवादी पार्टी भाजपा से जुड़ने की भावना मजबूत हुई है। कांग्रेस की श्री राम मंदिर और सनातन धर्म की विरोधी सोच के कारण हिंदुत्व का सम्मान करने वाले बहुत सारे कांग्रेसी नेता पार्टी को छोड़कर भाजपा तथा अन्य दलों में शामिल हो चुके हैं अथवा कांग्रेस से किनारा कर रहे हैं। इधर आज विश्व समुदाय, योग, आयुर्वेद और भारतीय ज्ञान परंपरा तथा पारंपरिक खान-पान के प्रति आकर्षित होकर हिंदू जीवन पद्धति को अपनाने के लिए लालायित है, उधर विदेश में जाकर सनातन का विरोध किया जाना भी भारत का ही विरोध है। इसलिए सत्य सनातन हिंदू धर्म की विशेषताओं को अपनाते हुए और इसमें व्याप्त कुछ सामाजिक कुरीतियों का सुधार करते हुए आगे बढ़ने की आवश्यकता है। हाल ही में हिमाचल प्रदेश में चुनाव के दौरान सनातन के प्रति निष्ठा पर उस पार्टी द्वारा प्रश्न उठाए जाने लगे हैं जो मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम को काल्पनिक बताने के लिए न्यायालय में वकीलों की फौज खड़ी करती रही है तथा उसके द्वारा रामसेतु को नष्ट करने के लिए भी असफल प्रयास किए गए हैं। जिस कांग्रेस पार्टी के अपने घोषणा पत्र में जिन्ना की कट्टरपंथी सोच झलकती हो, उनसे सनातन धर्म के सम्मान की बात सुनना भी गले से नहीं उतरता। जो राजनीतिक दल हिन्दू विचारधारा को पुष्ट करने वाला है, हिंदू मानसिकता द्वारा उसके साथ जुड़कर राष्ट्र को समृद्ध बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। **मतदान उसी के पक्ष में किया जाना चाहिए जो भारत के गौरवपूर्ण इतिहास, परंपराओं, धर्म, दर्शन,संस्कृति, समाजवाद और सत्य सनातन हिंदू धर्म को संरक्षण देते हुए इसके प्रचार प्रसार के लिए संकल्पबद्ध हो।** समर्थन उस राजनीतिक दल का होना चाहिए जो हमारे मेले पर्व त्यौहार मंदिर और धार्मिक स्थलों का संरक्षण करने के लिए वचनबद्ध हो तथा सनातन का हिमायती हो, तभी सनातन की रक्षा हो सकेगी और भारत की ज्ञान परंपरा विश्व का मार्गदर्शन कर सकेगी। पंथनिरपेक्षता का सम्मान तभी संभव होगा जब विभिन्न मत मतमतांतरों के साथ-साथ हिंदू धर्म का भी बराबर सम्मान होगा। तभी सामाजिक सद्भाव, सौहार्द एवं समरसता का मार्ग भी प्रशस्त हो सकेगा।◆◆◆

हिमाचल में फूलों से लदे कचनार के वृक्ष बढ़ा रहे हैं जंगलों की शोभा, आयुर्वेद में सबसे उत्तम औषधि

जुन्गा क्षेत्र के जंगलों में इन दिनों फूलों से लदे कचनार के वृक्ष जंगलों की शोभा बढ़ा रहे है। कचनार की सब्जी स्वादिष्ट होने के साथ-साथ औषधीय गुणों से भरपूर है। आयुर्वेद में कचनार का उपायोग विभिन्न रोगों की दवाई बनाने के लिए किया जाता है। कचनार के वृक्ष जंगलों में स्वत: ही उगे होते हैं, जिसमें बसंत ऋतु में लगने वाली पंखुडियां व फूल का उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों में सब्जियों के लिए किया जाता है। जोकि विषैले तत्त्व से रहित व जैविक गुणों से भरपूर है। कचनार को लोग स्थानीय भाषा में करयालटी भी कहते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में इसका उपयोग सब्जी व रायता बनाने के लिए किया जाता है। कचनार की कलियों का आचार बहुत ही स्वादिष्ट होने के साथ-साथ औषधि का काम भी करता है। आयुर्वेद विशेषज्ञ डॉ. विश्वबंधु जोशी के अनुसार कचनार की सब्जी औषधीय गुणों से भरपूर है और कचनार की छाल का उपयोग आयुर्वेदिक दवाओं के

बनाने में भी किया जाता है। कचनार की छाल शरीर के किसी भाग की गांठ को गलाने में सबसे उत्तम औषधि है। इसके अतिरिक्त रक्त विकार, त्वचा रोग जैसे खाज-खुजली, एग्ज़िमा, फोड़े-फुंसी के उपचार में इसकी छाल उपयोग में लाई जाती है।◆◆◆

इस खाद से उपजाऊ भूमि को नहीं होगा नुकसान

आईआईटी मंडी के शोधकर्ताओं के सफल परीक्षण में हुआ बड़ा खुलासा

आईआईटी मंडी के शोधकर्ताओं ने स्थायी खेती के लिए बहुक्रियाशील स्मार्ट माइक्रोजेल का विकास किया है। इससे उर्वरक धीरे-धीरे अब भूमि में खुलेंगे और इससे न सिर्फ उत्पादक क्षमता बढ़ेगी बल्कि भूमि और भूजल को भी नुकसान नहीं पहुंचेगा। इस माइक्रोजेल को विस्तारित अवधि में नाइट्रोजन एन और फास्फोरस पी उर्वरकों की धीमी रिहाई के लिए तैयार किया गया है, जो पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए फसल के पोषण को बढ़ाने के लिए सफल सिद्ध हुए हैं। इस व्यापक शोध के निष्कर्ष अमरीकन केमिकल सोसायटी के प्रतिष्ठित जर्नल एसीएस एप्लाइड मैटेरियल्स एंड इंटरफेसेस में प्रकाशित हुए हैं।

आईआईआईटी मंडी की डा. गरिमा अग्रवाल सहायक प्रोफेसर स्कूल ऑफ केमिकल साइंसेज का कहना है कि जैसे-जैसे वैश्विक आबादी 2050 तक ओर बढ़ेगी, तो खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाएगा।

यह माइक्रोजेल पौधों के लिए फॉस्फोरस के संभावित स्त्रोत के रूप में काम करते हैं और लागत प्रभावी, बायोडिग्रेडेबल और पर्यावरण के अनुकूल हैं। यह प्राकृतिक पॉलिमर से बना है। इसे मिट्टी में मिलाकर या पौधों की पत्तियों पर छिडक़ कर लगाया जा सकता है।◆◆◆

कब तक गुड़िया...

कब तक बेरहमी से बिटिया पीटी, काटी जाएगी!
बेजुबान अबला, गुड़िया कब तक रौंदी जाएगी।
कन्या पूजन की रीति का नीति से कोई मेल नहीं।
बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ नारा कोई खेल नहीं।
कब तक यह आधी आबादी पूरी रोटी खाएगी?
बच्चों को भरपेट खिलाकर खुद भूखी सो जाएगी।
खुद बदमाशी अय्याशी कर, औरत पर गुर्राएंगे।
सखी सहेली ननद भौजाई सास कहां गुण गाएंगे!
बाबा के आंगन की तुलसी दुनिया नई बसाएगी।
न जाने गुड़िया की किस्मत कैसी लिखी जाएगी!
खेत-खलिहानों सड़कों में बस अड्डों बागानों में
कैसे महिला रहे सलामत घर गांवों, वीरानों में।
कब तक उनसे बच पाएगी जो नंगे दराट ले घूम रहे।
उन्हें किसी का खौफ नहीं कानून हाथ में मसल रहे।
जिसकी चाहत उसने काटा घाव दिए कुछ अपनों ने अश्रुधारा
कैसे रोके दिल के ज़ख्म कहां भरते हैं?
जब तक जनता जागेगी, ममता मैली हो जाएगी।
कुछ दिन का रोना धोना गुड़िया भुला दी जाएगी।

आचार्य कर्म सिंह

◆◆◆

बलिदान दिवस

कैसे भूलूँ सुखदेव, राजगुरु और वीर भगत,
देश की ख़ातिर हँसते-हँसते छोड़ गए जो ये जगत।
इन वीरों ने कभी न माना दुष्ट अंग्रेज़ो के राज को,
कभी न झुकने दिया बेटों ने भारत माँ के ताज को...
इस आयु में दुनिया ने जवानी के सपने संजोए...
इन वीरो ने निर्मोही बनकर देशभक्ति के बीज बोये,
कभी न फलने फूलने दिया दुष्ट अंग्रेज़ो के धंधे को...
सबको देशभक्ति का पाठ पढ़ाया खुद
हँसकर चूमा था फंदे को।
ये शहीद मेरे हृदय में हैऔर आत्मा में,
मैं माँगू ऐसी ही वीरता हर प्रार्थना में।

सौरव

◆◆◆

व्यक्ति गत

कक्ष व्यक्तिगत हो गए;
मोबाइल व्यक्तिगत हो गए; लैपटॉप व्यक्तिगत हो गए;
व्यक्ति व्यक्तिगत हो गया;
कमरे व्यक्ति से अधिक प्रिय हो गए;
हम व्यक्तियों से अधिक कमरों के होकर रह गए;
नहीं हुए तो मां नहीं हुई; पिता नहीं हुए;
भाई नहीं हुए रिश्ते नहीं हुए;
वास्तुएं ही व्यक्तिगत हुई रिश्ते नहीं हुए;
दुख सुख की सांझ किस से करनी है वस्तुओं से; रिश्तों से ?

जीतू, अपराजेय

◆◆◆

होली

होलिया दे रंगां च रंगोई लेया मितरो
दिलड़ू रे दाग जऱा धोई लेया मितरो...
मिलणा नीं मौका भिरि पुच्छा परमेसरे
जाणदा ए कुण भाऊ इत्थू रंग तेस रे
वक्के री छानणीं छणोई लेया मितरो
होलिया दे रंगां च रंगोई लेया मितरो ...
रंगां आली दौड़ बड़ी औखी अज दौडनी़
मुश्किल आई कुत्थू सौखी कदी मोडनी़ मूंढेयां ते कितणा
टंगोई लेया मितरो
होलिया दे रंगां च रंगोई लेया मितरो ...
रंग न सियासती दे कच्चे अज लगदे दरिया
वी किनारेयां जो छड्डी छड्डी बगदे
चुणी लेया कितणे चणोई लेया मितरो
होलिया दे रंगां च रंगोई लेया मितरो ...
दूर सारे दुःख भाऊ होई जाणे ज़िन्दगी़ दे
वक्के दे जख़्म भरोई जाणे ज़िंदगी़ दे
अवध बिहारी दे तां होई लेया मितरो होलिया दे रंगां च
रंगोई लेया मितरो ...
एक ताज़ा गीत माँ वीणा वादिनि के श्री चरणों में समर्पित
फागुन के रंग साजन के संग महके महके खिलते हैं
चांद चकोरी चुपके चुपके
रात अकेले मिलते हैं... फागुन के रंग
रंग फिज़ा में मिल जाते घुल जाता इश्क हवाओं में
खनक कहां अब वो पहले सी
उनकी आज सदाओं में घाव लगे जो पतझड़ में कब
फसले-गुल में सिलते हैं... फागुन के रंग
बुलबुल, कोयल मोर पपीहे
गाते मस्त फिज़ाओं में
सज धज कर लो निकले सजनी पहन के पायल पांओं में
ताक में बैठे कलियों की फिर
भंवरों के दिल हिलते हैं ...फागुन के रंग

शक्ति चन्द राणा 'शक्ति'
मलघोटा बैजनाथ, हिमाचल प्रदेश।

चूल्हे से चौराहे तक खान-पान

पवना शर्मा

हम 21वीं सदी में जी रहे हैं, जिसमें पूर्व पश्चिम का सांस्कृतिक एवं सामाजिक संघर्ष, विभिन्न मत वादों के विवाद, सामाजिक संरचना का पतन, संयुक्त पारिवारिक व्यवस्था का चरमराना, प्रकृति के विरुद्ध आचरण करना आदि जो बहुत सारी संवेदनहीन गतिविधियां पूरे विश्व भर में व्याप्त हैं,उनके परिवेश में जीने वाला हर व्यक्ति, समाज, समुदाय, राष्ट्र इस भौतिक विकास की आड़ में हर किसी को पछाडकर आगे निकलना चाहता है। अब के नए जमाने में एक चलन बढा है फैशन और खानपान का। जिस से सामाजिक जीवन पूरी तरह से तेजी से बदलता जा रहा है। पारंपरिक खान-पान ऋतुओं के अनुसार मिलने वाली साग सब्जियां, अब कहीं गुम हो गई हैं। न कोई उगाता है न पकाता है तो खाने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता है। आधुनिकता के इस दौर में फास्ट फूड का चलन जिस तेजी से बढ़ रहा है इस तेजी से स्वास्थ्य की भी गिरावट होने लगी है। अब मेहनत बिल्कुल कम, चलना फिरना, खेती बाड़ी, शरीर का श्रम कम हो गया है और फास्ट फूड के नाम पर खानपान का चलन बढ़ता जा रहा है। पहले माता-पिता, नानी दादी, बहनें प्यार से खाना पकाती थीं, साथ बैठकर इज्जत मान से परोसती खिलाता थीं, तो उसमें उनका प्यार, उनकी संवेदनाएं मिलती थीं और वह भोजन स्वाद के साथ-साथ स्वास्थ्य की रक्षा करने वाला भी होता था। अब सडक़ों चौक चौराहों, गली मोहल्लों में सहज में मिलने वाला फास्ट फूड केवल पैसे के बल पर मिलता है। उसमें प्यार, अपनापन, संवेदनाएं भावनाएं गायब हैं।

सोशल मीडिया पर जिस तरह सडक़ों, गलियों, चौक चौराहों पर फास्ट फूड का प्रचार हो रहा है, उससे हम जीभ का स्वाद पूरा कर रहे हैं। जंक फूड खाने से हमारा स्वास्थ्य गिरता जा रहा है। कई तरह की बीमारियां शरीर को जकड़ रही हैं। अन्न और सब्जियों में जिस तरह से यूरिया और कीटनाशक दवाइयों का धड़ल्ले से प्रयोग हो रहा है जो हमारे शरीर की स्वभाविक पाचनक्रिया को पूरी तरह से तहस-नहस कर रहा है और नई-नई बीमारियां होने लगी हैं। अब बीमारी की कोई उम्र नहीं होती। वह कभी भी, कहीं भी, किसी को भी अपनी चपेट में जकड़ लेती है। इसलिए समय रहते अपने पारंपरिक खान-पान को फिर से जीवन का हिस्सा बनाए जाने की जरूरत है।

आज पूरा विश्व भारत के पारंपरिक खान-पान,रहन- सहन को बेहतर मानकर उसका अध्ययन कर रहा है, उसको अपना रहा है और हम खान-पान और रहन-सहन की पश्चिम की उन आदतों को अपनाने के लिए भाग रहे हैं जिनको वे लोग छोड़ रहे हैं। क्योंकि अभी तक जिस परिवार व्यवस्था, खान-पान, रहन-सहन को उन्होंने अपनाया था उसके परिणाम बहुत भयानक निकले हैं। परिवार टूट गए हैं, सामाजिक व्यवस्था चरमराने लगी है। इसलिए वह धीरे-धीरे अपनी इन बातों में सुधार करते हुए भारत की परंपराओं, संस्कृति, सभ्यता, रहन-सहन और परिवारवाद को अपनाने के लिए आगे आ रहे हैं, केवलमात्र इसलिए कि भारत की पारिवारिक व्यवस्था, खानपान, रहन-सहन हमारे ऋषि मुनियों की ऐसी देन है, जो सदियों के अनुभव और चिंतन तथा शोध के बाद जीवन में अपनाई जाती रही हैं। इसलिए अभी भी समय है कि हम चूल्हे की संस्कृति को अपनाएं, हर शाम पूरा परिवार मिल बैठ करके आनंद के साथ भोजन करे और जितना संभव हो सके फास्ट फूड, जंक फूड से बचने का प्रयास करें इसी में सब का कल्याण है।◆◆◆ **लेखिका हैदराबाद विश्वविद्यालय में शोधार्थी है।**

जंक फूड की दीवानगी का खतरा

आधुनिकता के इस दौर में फास्ट फूड का चलन तेजी से बढ़ रहा है। पहले खानपान ऋतुओं और प्रकृति के अनुसार होता था। गर्मियों, सर्दियों, बरसात के लिए अलग-अलग तरह की चीजें बनाई जाती थीं जिसमें परिश्रम भी खूब होता था। अब मेहनत बिल्कुल कम, चलना फिरना, खेती बाड़ी, शरीर का श्रम कम हो गया है। अन्न, सब्जियां के माध्यम से जो जहर शरीर में पहुंच रहा है उससे अनेकों जानलेवा बीमारियां पैदा हो रही हैं। **पहले माता-पिता, नानी दादी, बहनें प्यार से खाना पकाती थीं, साथ बैठकर इज्जत मान से परोसती खिलाता थीं, तो उसमें उनका प्यार, उनकी संवेदनाएं मिलती थीं और वह भोजन स्वाद के साथ-साथ स्वास्थ्य की रक्षा करने वाला भी होता था।** अब सड़कों चौक चौराहों, गली मोहल्लों में सहज में मिलने वाला फास्ट फूड केवल पैसे के बल पर मिलता है। उसमें प्यार, अपनापन, संवेदनाएं भावनाएं गायब हैं, फिर ऐसे तामसिक भोजन से अच्छे स्वास्थ्य की कामना करना खुद को धोखा देने जैसा ही है।

सोशल मीडिया पर जिस तरह सड़कों, गलियों, चौक चौराहों पर फास्ट फूड का प्रचार हो रहा है। अन्न और सब्जियों में जिस तरह से यूरिया और कीटनाशक दवाइयों से हमारे शरीर में नई-नई बीमारियां होने लगी हैं। इसलिए समय रहते अपने पारंपरिक खान-पान को फिर से जीवन का हिस्सा बनाए जाने की जरूरत है।

... शिवा पंचकरण

भारतवर्ष में कुछ चीज़ें जन्म से ही अधिकार दिलाती हैं। डॉक्टर का बेटा डॉक्टर, इंजीनियर का बेटा इंजीनियर, वकील का बेटा वकील और अध्यापक का बेटा अध्यापक हो, यह कोई जरूरी तो नहीं है। क्योंकि वर्तमान में भारत में जाति का निर्णय जन्म के आधार पर ही होता है। सामाजिक समरसता के नाम पर विभिन्न अनुसूचित जातियों से संबंधित और जनजातीय होने का लाभ एवं आरक्षण भी जन्म के आधार पर ही मिलता है, परंतु केवल राजनेता होने का लाभ एवं आरक्षण किसी विशिष्ट राजनैतिक परिवार में जन्म लेने पर मिल जाता है, यह भारत की नियति है।

पिछले कुछ वर्षों से भारत की राजनीति में रजवाड़ाशाही, परिवारवाद के वर्चस्व की लड़ाई जारी है। स्वतंत्रता के समय विभिन्न रियासतों का विलय होने पर कुछ राजा रजवाड़े अपने भव्य महलों को अपने पास रखने में कामयाब रहे और उन्होंने कोई व्यवसाय शुरु कर दिया। कुछ राजनीति में भी भाग्य आजमाने में सफल रहे। इसमें भी कोई संदेह नहीं कि राजाओं के कुछ महल, बहुत बड़ी-बड़ी संपत्तियां सरकार के अधीन चली गईं, जहां आज शिक्षण संस्थान और सरकारी कार्यालय संचालित हैं। पिछले कुछ वर्षों से भारतीय राजनीति में परिवारवाद अत्यंत हावी है और कुछ राजनीतिक दल राजनीतिक आधार पर इस परिवारवाद का विरोध करके लोकतंत्र की दुहाई देते हैं जबकि **कुछ राजनीतिक दल पैतृक संपत्ति की तरह परिवारवाद का पालन पोषण करने में जुटे हुए हैं तथा राजनीति में परिवार की ही विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं।** जिन्होंने नेहरू गांधी परिवार के वर्चस्व को चुनौती दी उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया गया और भारतीय राजनीति में इस दिल के टुकड़े हजार हुए कोई यहां गिरा कोई वहां गिरा इस तर्ज पर समय-समय पर कांग्रेस के टुकड़े-टुकड़े होते रहे जिससे विभिन्न क्षेत्रीय दलों का प्रादुर्भाव हुआ। ये दल जैसे-जैसे विस्तार प्राप्त करते गए वैसे-वैसे कांग्रेस सिकुड़ती गई और अब कांग्रेस को अपना अस्तित्व बचाए रखने के लिए इन क्षेत्रीय दलों के आगे कुछ सीटें लेने के लिए झुकना पड़ रहा है।

कुछ नेता अपने परिवार रिश्तेदारों को अपनी-अपनी पार्टी में स्थापित कर चुके हैं और अपने परिवार की अगली पीढ़ियों के लिए राजनीतिक जुगाड़ करने में व्यस्त हैं। इसी कारण एक ही परिवार के विधानसभा और संसद में दर्जनों सदस्य देखे जा सकते हैं। कुछ पद दलगत राजनीति के नाम पर अन्य नजदीकी लोगों में बांट दिए जाते हैं और लोकतंत्र की दुहाई दी जाती है। अगर कोई इस परिवारवादी मानसिकता का विरोध करता है तो संविधान खतरे में है ऐसा हल्ला होने लगता है। देश की भोली भाली जनता आसानी से इनके षड्यंत्रों का शिकार हो जाती है। इधर वामपंथी रुझान वाले लोगों की कांग्रेस में योजनाबद्ध घुसपैठ होने पर कांग्रेस का मूल चरित्र ही बदलता हुआ दिखाई दे रहा है। संतुष्टीकरण की राजनीति अब खुलेआम होने लगी है। इसकी प्रतिक्रिया में हिंदू बहुल समाज एकजुट होने लगा है और भाजपा इसका नेतृत्व कर रही है। इस तरह यह कहा जा सकता है कि **भारत की राजनीति राष्ट्रवाद और परिवारवाद अथवा अवसरवाद इन खेमों में बंट गई है। कुछ दल भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयास कर रहे हैं तो कुछ दल विदेशी शत्रु मानसिकता वाले देशों के साथ मिलकर भारत के विरुद्ध षड्यंत्र रचने में भी शामिल होते हुए दिखाई देने लगे हैं।** हाल ही में लालू प्रसाद यादव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर टिप्पणी की है कि उनका तो अपना परिवार ही नहीं है। इसकी स्वभाविक प्रतिक्रिया में नरेंद्र मोदी ने 140 करोड़ देशवासियों को ही अपना परिवार घोषित कर दिया। मेरा भारत मेरा परिवार, मैं हूं नरेंद्र मोदी का परिवार, यह नारा सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में सब जगह सुनाई देने लगा।

वास्तव में धारा 370 को हटाए जाने के बाद जम्मू कश्मीर में जो विकास की रफ्तार तेजी से आगे बढ़ रही है उससे विपक्ष को कोई कारगर मुद्दा नहीं मिल पा रहा है। राम मंदिर का बहुप्रतीक्षित निर्माण संपन्न होने तथा प्राण प्रतिष्ठा के बाद विपक्ष जितना राम मंदिर और भारतीय धर्म एवं संस्कृति का विरोध कर रहा है उतना ही नरेंद्र मोदी एवं भाजपा के पक्ष में ध्रुवीकरण होता हुआ दिखाई दे रहा है।

संतुष्टीकरण के स्थान पर विकास को सर्वाधिक महत्व दिया जाना, धन कुबेरों के पास अथाह संपत्ति का बरामद होना विपक्ष के लिए खतरा बन गया है। अब विपक्ष के पास संतुष्टीकरण और जाति के आधार पर भाजपा को सत्ता में आने से रोकने का एकमात्र विकल्प बच गया है जो धरातल पर नहीं है जिससे सत्ता में राष्ट्रीय स्तर पर इतना परिवर्तन किया जा सके। मोदी की बात लोगों तक सीधी पहुंच पा रही है। मोदी अपनी 10 वर्षों की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने में कामयाब होते हुए दिखाई पड़ रहे हैं। देश के विभिन्न वर्गों, जातियों, धर्मों, संप्रदायों में भी मोदी की लोकप्रियता भाजपा के लिए संजीवनी का काम कर रही है। भ्रष्टाचार मुक्त समाज व्यवस्था, दंगामुक्त देश ये कुछ ऐसे प्रशासनिक सुधार हैं जो सामने दिख रहे हैं।

◆◆◆लेखक हिमाचल केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला इतिहास विभाग में शोधार्थी हैं।

नागरिकता संशोधन कानून से मिलेगी हिंदू शरणार्थियों को नागरिकता

महात्मा गांधी ने कहा था कि 'पाकिस्तान से प्रताड़ित होकर आनेवाले अल्पसंख्यकों को भारत में नौकरी सहित अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराना चाहिए।' जवाहरलाल नेहरु ने कहा था कि प्रधानमंत्री आकस्मिक निधि का उपयोग पाक से आनेवाले अल्पसंख्यकों के लिए किया जाना चाहिए। कांग्रेस के दो पूर्व अध्यक्ष पट्टाभि सीतारमैया, जे.बी. कृपलानी ने भी इस तरह की बात कही थीं। इंदिरा गांधी ने कहा था कि पूर्वोत्तर के राज्यों में भ्रमण कर बांग्लादेश व पाक से आये अल्पसंख्यकों के दुख को साझा करना चाहती हूँ। सन् 2003 में मनमोहन सिंह ने विपक्ष के नेता के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार से मांग की थी कि बांग्लादेश जैसे देशों से प्रताड़ित होकर आ रहे अल्पसंख्यकों को नागरिकता देने में हमें ज्यादा उदार होना चाहिए। मैं उम्मीद करता हूं कि नागरिकता कानून को लेकर भविष्य की रूपरेखा तैयार करते समय वह ध्यान देंगे। जब वह 2003 में भाषण दे रहे थे तब उच्च सदन में आसन पर उपसभापति नजमा हेपतुल्ला की मौजूदगी में तत्कालीन उप प्रधानमंत्री और गृहमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा था कि विपक्ष के नेता ने जो कहा, उसका वह पूरा समर्थन करते हैं।

एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने बहुचर्चित नागरिकता (संशोधन) अधिनियम, 2019 (सी.ए.ए.-2019) को लागू करने की दिशा में एक निर्णायक कदम उठाया है। 11 मार्च, 2024 को भारत सरकार के गृह मंत्रालय ने सीएए-2019 के तहत नियमों की अधिसूचना की घोषणा की, जिससे पात्र व्यक्तियों के लिए भारतीय नागरिकता के लिए आवेदन करने का मार्ग प्रशस्त हो गया।

नागरिकता (संशोधन) अधिनियम, 2019 भारत की संसद द्वारा पारित एक अधिनियम है जिसके द्वारा सन् 1955 के नागरिकता कानून को संशोधित करके यह व्यवस्था की गयी है कि **31 दिसम्बर सन् 2014 के पहले पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से भारत आए हिन्दू, बौद्ध, सिख, जैन, पारसी एवं ईसाई को भारत की नागरिकता प्रदान की जा सकेगी।** इस विधेयक में भारतीय नागरिकता प्रदान करने के लिए आवश्यक 7 वर्ष तक भारत में रहने की शर्त में भी ढील देते हुए इस अवधि को केवल 5 वर्ष तक भारत में रहने की शर्त के रूप में बदल दिया गया है।

नागरिकता संशोधन कानून को भारतीय संसद में 11 दिसंबर, 2019 को पारित किया गया था, जिसमें 125 वोट इसके पक्ष में पड़े थे और 105 वोट इसके खिलाफ थे। राष्ट्रपति द्वारा इस विधेयक को 12 दिसंबर को मंजूरी भी दे दी गई थी। गृहमंत्री अमित शाह ने नागरिकता संशोधन कानून को लेकर संसद में बताया था कि अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश मुस्लिम देश हैं। वहां धर्म के नाम पर बहुसंख्यक मुस्लिमों का उत्पीडन् नहीं होता है, जबकि इन देशों में हिंदुओं समेत अन्य समुदाय के लोगों को धर्म के आधार पर प्रताड़ित किया जाता है। इसलिए इन देशों के मुस्लिमों को नागरिकता कानून में शामिल नहीं किया गया है। हांलाकि, इसके बाद भी वह नागरिकता के लिए आवेदन कर सकते हैं, जिस पर सरकार विचार कर फैसला लेगी। नागरिकता देने का अधिकार पूरी तरह से केंद्र सरकार के पास होगा। जो लोग 31 दिसंबर 2014 से पहले भारत में आकर बस गए थे, उन्हें ही नागरिकता मिलेगी। इस कानून के तहत उन लोगों को अवैध प्रवासी माना गया है, जो भारत में वैध यात्रा दस्तावेज (पासपोर्ट और वीजा) के बगैर घुस आए हैं या फिर वैध दस्तावेज के साथ तो भारत में आए हैं, लेकिन तय अवधि से ज्यादा समय तक यहां रुक गए हों। पात्र विस्थापितों को सिर्फ ऑनलाइन पोर्टल पर जाकर अपना आवेदन करना होगा। जिसके बाद गृह मंत्रालय आवेदन की जांच करेगा और आवेदक को नागरिकता जारी कर दी जाएगी।

डॉ. कर्म सिंह

इसके अलावा, विधेयक में कहा गया है कि अवैध प्रवासियों के लिए नागरिकता के प्रावधान असम, मेघालय, मिजोरम या त्रिपुरा के आदिवासी क्षेत्रों पर लागू नहीं होंगे, जैसा कि संविधान की छठी अनुसूची में शामिल है। इन जनजातीय क्षेत्रों में कार्बी आंगलोंग (असम में), गारो हिल्स (मेघालय में), चकमा जिला (मिजोरम में), और त्रिपुरा जनजातीय क्षेत्र जिला शामिल हैं। यह बंगाल ईस्टर्न फ्रंटियर रेगुलेशन, 1873 के तहत इनर लाइन के तहत आने वाले क्षेत्रों पर भी लागू नहीं होगा। **इनर लाइन परमिट भारतीयों की अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम और नागालैंड की यात्रा को नियंत्रित करता है। भारत के मुस्लिमों या किसी भी धर्म और समुदाय के लोगों की नागरिकता को इस कानून से कोई खतरा नहीं है।** नागरिकता (संशोधन) अधिनियम (नागरिकता संशोधन कानून) 2019 के लिए अधिसूचना जारी कर दी है। इसके साथ ही देशभर में नागरिकता संशोधन कानून कानून लागू हो गया है।

नागरिकता संशोधन कानून को नागरिकता संशोधन कानून के नाम से जाना जाता है। इससे पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से बिना दस्तावेजों के आने वाले गैर-मुस्लिम शरणार्थियों को नागरिकता देने का रास्ता साफ हो गया है। 31 दिसंबर 2014 तक बांग्लादेश, पाकिस्तान और अफगानिस्तान से भारत आए प्रताड़ित गैर-मुस्लिम प्रवासियों (हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध, पारसी और ईसाई) को भारतीय नागरिकता दी जाएगी। अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश मुस्लिम देश हैं। वहां धर्म के नाम पर बहुसंख्यक मुस्लिमों का उत्पीडन् नहीं होता है, जबकि इन देशों में हिंदुओं समेंत अन्य समुदाय के लोगों को धर्म के आधार पर प्रताड़ित किया जाता है। इसलिए इन देशों के मुस्लिमों को नागरिकता कानून में शामिल नहीं किया गया है। हांलाकि, इसके बाद भी वह नागरिकता के लिए आवेदन कर सकते हैं, जिस पर सरकार विचार कर फैसला लेगी। भारतीय नागरिकों को नागरिकता (संशोधन) अधिनियम 2019 से कोई सरोकार नहीं है। संविधान के तहत भारतीयों को नागरिकता का अधिकार है, यह कानून भारतीय नागरिकता नहीं छीन सकता।◆◆◆

विश्व पटल पर नए भारत की दस्तक

... डॉ. राजेश शर्मा

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केंद्र सरकार द्वारा विगत 10 वर्षों में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में सरकारी योजनाओं का सफलतापूर्वक पर संचालन किया गया है जिससे करोड़ों देशवासी नागरिकों को लाभ प्राप्त हुआ है जैसे-

भ्रष्टाचार मुक्त सरकार- सरकार के मंत्री भ्रष्टाचार से दूर रहे हैं। जिस तरह पिछली सरकार 2-जी स्कैम, कोयला स्कैम, कॉमनवेल्थ स्कैम, चॉपर स्कैम, आदर्श स्कैम के आरोपों में घिरी रही, उससे उलट वर्तमान सरकार में भ्रष्टाचार के मामले कम आए। हालांकि कुछ राज्य सरकारों पर घोटालों के आरोप लगे।

जन-धन योजना- प्रधानमंत्री ने साल 2014 में जन-धन योजना की घोषणा स्वतंत्रता दिवस के मौके पर की थी। इस योजना का मकसद देश के हर नागरिक को बैंकिंग सुविधा से जोड़ना है और इस योजना के तहत 31.31 करोड़ लोगों को फायदा भी मिला है। बताया जाता है कि आर्थिक जगत के क्षेत्र में ये दुनिया की सबसे बड़ी योजना है. इसने एक सप्ताह में सबसे अधिक 1,80,96,130 बैंक खाते खोलने के लिए गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड भी बनाया।

जीएसटी- जीएसटी का मतलब है एक राष्ट्र, एक टैक्स। इस नए टैक्स सिस्टम में सभी वस्तुओं के अलग अलग टैक्स नहीं देना होगा और पूरे देश में एक ही टैक्स व्यवस्था लागू की गई है। अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के बाद वित्तीय क्षेत्र में सुधार को लेकर सबसे बड़ा कदम है, जिसे लागू करने के लिए पिछली सरकार प्रयासरत थी। केंद्र सरकार ने 1 जुलाई, 2017 को सामान और सेवा टैक्स (जीएसटी) संसद के सेंट्रल हॉल में आधी रात को संसद के विशेष सत्र में शुरू किया।

उज्जवला योजना- यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले उन परिवारों के लिए वरदान साबित हुई है। जिनके पास गैस कनेक्शन नहीं था और उन्हें खाना बनाने के लिए कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता था. इस योजना के माध्यम से उन परिवारों तक एलपीजी कनेक्शन पहुंचाया गया और ग्रामीण महिलाओं को सशक्त भी किया गया। इस योजना के तहत ग्रामीण इलाकों में रहने वाले बीपीएल राशन कार्ड धारकों को मुफ्त में सेलेंडर दिया जाता है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार 3 करोड़ परिवार इसके लाभार्थी हैं।

डिजिटल इंडिया - सरकार ने पिछले चार सालों में डिजिटाइजेशन पर काफी जोर दिया है। अब बैंकिंग क्षेत्र से लेकर अन्य सरकारी कार्यों में डिजिटाइजेशन को बढ़ावा मिला है, जिससे लोगों को काफी राहत मिली है। इसमें मोदी सरकार की डिजिटल भुगतान को आसान बनाने बनाने वाली भीम एप भी शामिल है। इस एप के तहत पैसे सीधे बैंक अकाउंट में ट्रांसफर किए जा सकते हैं।

मुद्रा योजना- प्रधान मंत्री मुद्रा योजना (पीएमएमवाई) एक गैर-कार्पोरेट, गैर-कृषि लघु-लघु उद्यमों को 10 लाख तक की ऋण प्रदान करने के लिए शुरू की गई योजना है। ये लोन पीएमएमवाई के तहत वर्गीकृत किए गए हैं, ये ऋण वाणिज्यिक बैंक, आरआरबी, लघु वित्त बैंक, सहकारी बैंक, एमएफआई और एनबीएफसी द्वारा दिए गए हैं। उम्मीदवार इन संस्थानों से लोन ले सकते हैं. सरकारी आंकड़ों के अनुसार 23 मार्च 2018 तक कुल 2,28,144,.72 करोड़ रुपए के कुल 4,53,51,509 कर्ज आवंटित किए गए हैं. योजना के तहत कुल 2,20,596.05 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। आपको बता दें कि इस योजना को 8 अप्रैल 2015 को लॉन्च किया गया था।

उड़ान- यह सरकार की अहम योजनाओं में से एक है, जिसका उद्देश्य आम आदमी को हवाई सेवा उपलब्ध कराना है। इसकी शुरुआत 2016 में की गई और करीब 128 रूट पर सस्ती दरों पर फ्लाइट उपलब्ध करवाई जा रही है।

स्वच्छ भारत अभियान- इसकी शुरुआत प्रधानमंत्री ने अपने कार्यकाल के पहले साल से ही की थी और उसे कामयाबी भी मिली। इस योजना के तहत पूरे देश में सफाई के लिए विशेष कार्य किए हैं, जिसमें शौचालय निर्माण से लेकर कचरा निस्तारण भी शामिल है।

पहल योजना- डायरेक्ट बेनीफिट ट्रांसफर्स के रूप में सब्सिडी सीधे बैंक खातों में जमा कराए जाने को लेकर फैसला किया गया है। इससे लीकेज और किसी हेराफेरी की गुंजाइश खत्म हुई है। पहल योजना के तहत एलपीजी सब्सिडी सीधे बैंक खातों में जमा कराई जाती है, जिसका गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड में भी नाम दर्ज है। इस योजना के तहत 14.62 करोड़ से अधिक लोगों को सीधे नकद सब्सिडी मिल रही है। इस योजना ने करीब 3.34 करोड़ नकली या निष्क्रिय खातों की पहचान करने और उन्हें बंद करने में भी मदद की, जिससे हजारों करोड़ रुपये की बचत हुई।

पारदर्शिता- सरकार में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए भी कई काम किए गए, जिसमें कोयला ब्लॉक आंवटन में पारदर्शी नीलामी, पर्यावरण संबंधी मंजूरियों के लिए ऑनलाइन आवेदन, कई

निविदाओं के लिए ऑनलाइन व्यवस्था की शुरुआत की गई. साथ ही सब्सिडी जैसी सुविधाओं में पारदर्शिता की गई।

कौशल विकास- प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय की ओर चलाई जाती है। इस स्कीम का उद्देश्य है देश के युवाओं को उद्योगों से जुड़ी ट्रेनिंग देना है जिससे उन्हें रोजगार पाने में मदद मिल सके। इसमें ट्रेनिंग की फीस सरकार खुद भुगतान करती है। सरकार इस स्कीम के जरिए कम पढ़े लिखे या 10वीं, 12वीं कक्षा ड्रॉप आउट युवाओं को कौशल प्रशिक्षिण देती है। सरकार ने 2020 तक एक करोड़ युवाओं को कौशल प्रशिक्षण देने का लक्ष्य रखा था।

मेक इन इंडिया- सरकार ने भारत के निर्माण क्षेत्र को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मेक इन इंडिया पहल की शुरुआत की। इसके तहत कैपिटल गुड्स के साथ नई तकनीक और आधुनिकता को बढ़ावा दिया जाता है। इस स्कीम के लिए 930 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया।

तीन तलाक और हज यात्रा- तीन तलाक पर सरकार ने ऐतिहासिक कदम उठाया है, जिसका लंबे समय से विरोध किया जा रहा था। सरकार ने लोकसभा में कई संशोधन प्रस्ताव खारिज होने के बाद **'मुस्लिम वीमेन प्रोटेक्शन ऑफ राइट्स ऑन मैरिज बिल'** पास करवाने का अहम कार्य किया है। वहीं सरकार ने हज पर दी जाने वाली वाली सब्सिडी खत्म कर दी है, यानी 2018 से हज पर जाने वालों को पूरा खर्च खुद ही वहन करना पड़ रहा है।

धारा 370 हटाना-विगत कई वर्षों से धारा 370 को हटाने का संकल्प था जो सरकार के दृढ़ संकल्प से पूर्ण हुआ। जम्मू कश्मीर तथा लेह लद्दाख को को केंद्र शासित प्रदेश बनाकर विकास चहुंमुखी विकास के लिए प्रयास किए गए जिसके परिणामस्वरुप वर्तमान में जम्मू कश्मीर और लेह लद्दाख में विकास को गति मिल सकी है।

राम मंदिर निर्माण- विगत 500 वर्षों की लंबे संघर्ष एवं विभिन्न आंदोलन तथा कार सेवा की संघर्षशील यात्रा के बाद न्यायालय के आदेशों की पालना से केंद्र सरकार द्वारा ट्रस्ट का गठन करके भव्य राम मंदिर निर्माण करके प्राण प्रतिष्ठा का कार्य संपन्न किया गया है अब श्री राम लाल भव्य दिव्य मंदिर में विराजमान होकर पूजित हो रहे हैं।

काशी विश्वनाथ मंदिर परिसर- प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केंद्र सरकार द्वारा काशी विश्वनाथ मंदिर परिसर का जीर्णोद्धार करते हुए भव्य परिसर का निर्माण किया गया है।

नारी शक्ति वंदन बिल-आधी आबादी को प्रतिनिधित्व देने के लिए नारी शक्ति वंदन विधायक के माध्यम से केंद्र सरकार द्वारा चुनाव में 33 फीसदी सीटों का आरक्षण महिलाओं के लिए किया जाना एक ऐतिहासिक कदम है।

समान नागरिक संहिता - सभी नागरिकों के लिए समान अधिकार और कर्तव्य की भावना को मजबूत करने के लिए समान नागरिक संहिता की उत्तराखंड में अधिसूचना जारी की गई है असम तथा अन्य प्रदेशों में भी इस प्रक्रिया को अपनाए जाने का संकल्प है।

नागरिकता संशोधन अधिनियम - अफगानिस्तान और पाकिस्तान से भारत में आने वाले हिंदू सिख तथा अन्य संप्रदायों के शरणार्थियों को नागरिकता देने के लिए नागरिकता कानून संशोधन अधिनियम पारित करके नरेंद्र मोदी सरकार द्वारा एक ऐतिहासिक उपलब्धि अर्जित की गई है इससे देश में रहने वाले अन्य संप्रदायों के अधिकारों को और किसी भी प्रकार से नागरिकता छीनने का कोई भी विधान नहीं है।

स्टार्ट अप- युवाओं को रोजगार उपलब्ध करवाने तथा नए उद्योगों को स्थापित करने के लिए स्टार्टअप योजना प्रारंभ की गई जिसके माध्यम से अनेक योजनाओं को क्रियान्वित किया जा सकता है।

लखपति दीदी - महिलाओं को अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा अनेक प्रोत्साहन योजनाओं का शुभारंभ किया गया है जिनके परिणाम में स्वरूप महिलाओं की आय में वृद्धि हुई है तथा उनके व्यवसाय स्थापित होने के साथ-साथ अन्य महिलाओं को भी रोजगार मिल सका है। इस प्रकार केंद्र सरकार द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों के प्रोत्साहन, सम्मान, व्यवसाय एवं विभिन्न योजनाओं को अम्ल में लाने से आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है तथा देश आत्मनिर्भरता के मार्ग पर तेजी से आगे बढ़ता जा रहा है।

विदेश नीति की सफलता - भारत ने अपनी पूर्व विदेश नीति को कायम रखते हुए कुछ नए देशों के साथ मधुर संबंध कायम किए हैं तथा विश्व के ताकतवर देशों से आंखें मिलाकर बात करने की हिम्मत हासिल की है। जरूरतमंद देशों को दवाइयां तथा अन्न और रक्षा उपकरण आदि की आपूर्ति करके इन वर्षों में सब देशों का दिल जीतने में भारत कामयाब रहा है।

जी-20 शिखर सम्मेलन- भारत को जी-20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता मिलने पर जी-20 समिट के माध्यम से भारत के विभिन्न भागों में पर्यटन तथा भारतीय सांस्कृतिक विरासत का विश्व समुदाय के सामने सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया तथा अनेक ऐतिहासिक कार्यों को अंजाम दिया गया जिससे पूरे विश्व में भारत की छवि में आशातीत सुधार हुआ है।

हिमाचल में केंद्र की योजनाएं- प्रधानमंत्री की अगुवाई में केन्द्र सरकार तथा हिमाचल प्रदेश में डबल इंजन की सरकार द्वारा ऊना से बंदे भारत रेल और बिलासपुर में एम्ज तथा मंडी में अटल मैडिकल कॉलेज और फोरलेन सड़कों का निर्माण आदि योजनाओं की सौगात देकर पहाड़ी राज्य हिमाचल प्रदेश के चहुंमुखी विकास को प्राथमिकता प्रदान की है। वर्तमान में केन्द्र सरकार के साथ सही तालमेल न होने तथा प्रदेश सरकार के पास वित्तीय संसाधनों का अभाव होने के कारण विकास कार्यों में शिथिलता आई है। यदि आगामी समय में पुन: डबल इंजन की सरकार का संयोग बनता है तो फिर से विकास की परियोजनाओं को गति मिल सकेगी। ◆◆◆

भारतीय अर्थव्यवस्था में हो रहे बदलाव की ब्यार

... प्रहलाद सबनानी

भारत में पिछले एक दशक में, विशेष रूप से आर्थिक क्षेत्र में, अतुलनीय सुधार दृष्टिगोचर है और भारतीय अर्थव्यवस्था आज विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के साथ ही विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था भी बन गई है। आगे आने वाले लगभग पांच वर्षों के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगी, ऐसा आकलन विश्व के कई वित्तीय एवं आर्थिक संस्थान कर रहे हैं। आज विश्व के कई देश पूंजीवादी मॉडल से निराश होकर भारतीय आर्थिक मॉडल को अपनाने की बात करने लगे हैं क्योंकि सनातन संस्कृति पर आधारित भारतीय आर्थिक मॉडल पश्चिमी आर्थिक मॉडल की तुलना में बेहतर माना जा रहा है। परंतु, दुर्भाग्य से भारत में कुछ राजनैतिक दल एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते हुए भारत में हाल ही के समय में हुई आर्थिक प्रगति को कमतर आंकते हुए भारतीय अर्थव्यवस्था में हो रहे बदलाव की ब्यार पर ही प्रश्न चिन्ह लगाते दिखाई दे रहे हैं। भारत आज अर्थ के विभिन्न क्षेत्रों में नित नई ऊंचाईयां छू रहा है। दिसम्बर 2023 के प्रथम सप्ताह में भारत ने फ्रान्स एवं ब्रिटेन को पीछे छोड़ते हुए शेयर बाजार के पूंजीकरण के मामले में पूरे विश्व में पांचवा स्थान हासिल किया था। भारत से आगे केवल अमेंरिका, चीन, जापान एवं हांगकांग थे। परंतु, अब दो माह से भी कम समय में भारत ने शेयर बाजार के पूंजीकरण के मामले में हांगकांग को पीछे छोड़ते हुए विश्व में चौथा स्थान प्राप्त कर लिया है। अब ऐसा आभास होने लगा है कि भारत अर्थ के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर खोई हुई अपनी प्रतिष्ठा को पुन: प्राप्त करता हुआ दिखाई दे रहा है। एक ईसवी से लेकर 1750 ईसवी तक आर्थिक दृष्टि से पूरे विश्व में भारत का बोलबाला था। इस खंडकाल में विश्व के कुल विदेशी व्यापार में भारत की हिस्सेदारी 32 प्रतिशत से भी अधिक की रही है क्योंकि उस समय पर भारत में सनातन संस्कृति का पालन करते हुए व्यापार किया जाता था। विदेशी निवेश के साथ साथ आज लगभग 50 देश भारत के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौता करना चाहते हैं, क्योंकि भारत वैश्विक स्तर पर विभिन्न उत्पादों के लिए एक बहुत बड़े बाजार के रूप में विकसित हो रहा है। जब किसी भी देश की अर्थव्यवस्था पर निवेशकों का भरोसा बढ़ता हुआ दिखाई देता है तो विशेष रूप से विदेशी निवेशक एवं विदेशी संस्थागत निवेशक उस देश में विभिन्न कम्पनियों के शेयर में अपनी निवेश बढ़ाते हैं। चूंकि विदेशी संस्थानों को आगे आने वाले समय में भारतीय अर्थव्यवस्था पर एवं भारतीय कम्पनियों की विकास यात्रा पर भरपूर भरोसा है अत: भारतीय शेयर बाजार में निवेश भी रफ्तार पकड़ रहा है। पिछले 10 वर्षों के खंडकाल में भारत न केवल आर्थिक क्षेत्र बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में भी मजबूत हुआ है और भारत ने पूरे विश्व में अपनी धाक जमाई है। आज भारतीय मूल के लगभग 3.20 करोड़ लोग विश्व के अन्य देशों में निवास कर रहे हैं। भारतीय मूल के इन नागरिकों ने भारतीय सनातन संस्कृति का पालन करते हुए इन देशों के स्थानीय नागरिकों को भी प्रभावित किया है।

अंतरिक्ष के क्षेत्र में आज भारत एक वैश्विक ताकत बनाकर उभरा है। भारत आज न केवल अपने लिए सेटेलाईट अंतरिक्ष में भेज रहा है बल्कि विश्व के कई अन्य देशों के लिए भी सेटेलाईट अंतरिक्ष में स्थापित करने में सक्षम हो गया है। योग एवं आध्यात्म के क्षेत्र में तो भारत अनादि काल से विश्व गुरु रहा ही है, परंतु हाल ही के समय में भारत एक बार पुन: योग एवं आध्यात्म के क्षेत्र में विश्व का मार्गदर्शन करने की ओर अग्रसर है। योग को सिखाने के लिए तो यूनाइटेड नेशन्स ने प्रति वर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर योग दिवस मनाने का निर्णय लिया है और इसे पूरे विश्व में लगभग सभी देशों द्वारा बहुत ही उत्साह से मनाया जाता है।

आज भारत डिजिटल इंडिया के माध्यम से क्रांतिकारी परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। पिछले 10 वर्षों के दौरान भारत ने डिजिटलीकरण के क्षेत्र में अतुलनीय प्रगति की है एवं आज भारत में 120 करोड़ से अधिक इंटरनेट, 114 करोड़ से अधिक मोबाइल एवं 65 करोड़ से अधिक स्मार्टफोन उपयोगकर्ता हैं। इस प्रकार भारत ने एक नए डिजिटल युग में प्रवेश कर लिया है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में भी डिजिटल इंडिया ने कमाल ही कर दिया है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता बढ़ाई गई है। अब तो ड्रोन के लिए भी नए डिजिटल प्लेटफार्म का उपयोग हो रहा है एवं ड्रोन के माध्यम से कृषि का और कीटनाशकों का किस प्रकार सहयोग किया जा सकता है। ड्रोन के माध्यम से बीजों का छिडक़ाव आदि जैसे कार्य किए जाने लगे हैं। कृषि क्षेत्र, रक्षा उत्पादों, फार्मा, नवीकरण ऊर्जा, डिजिटल व्यवस्था के साथ ही प्रौद्योगिकी, सूचना तकनीकी, आटोमोबाईल, मोबाइल उत्पादन, बुनियादी क्षेत्रों का विकास, स्टार्ट अप्स, ड्रोन, हरित ऊर्जा और अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रों में भी भारत अपने आप को तेजी से वैश्विक स्तर पर एक लीडर के रूप में स्थापित करने की ओर अग्रसर हो गया है। इस प्रकार आर्थिक प्रगति के बल पर भारत एक बार पुन: अपने आप को विश्व गुरु के रूप में स्थापित करने जा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने कहा है कि वर्ष 2024 में वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में भारत का योगदान 16 प्रतिशत से भी अधिक का रहने वाला है। जब अन्य देशों की विकास दर कम हो रही है तब भारत में आर्थिक विकास दर तेज हो रही है। केंद्र सरकार द्वारा देश में लागू की जा रही आर्थिक नीतियों एवं देश में मंदिर अर्थव्यवस्था एवं धार्मिक पर्यटन के बढ़ते आधार के चलते यह संभव हो पा रहा है। ◆◆◆ **लेखक भारतीय स्टेट बैंक से उप महाप्रबंधक पद से सेवानिवृत्त है।**

किशोरावस्था में नशे की लत से बचाव

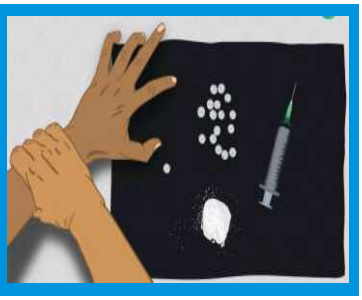

... डॉ. राकेश पंडित

किशोरावस्था बालक बालिकाओं के जीवन काल का अति महत्त्वपूर्ण एवं नाजुक समय होता है। बालक बालिकाओं में नयी ऊर्जा का संचार होने से नए नए विचार, शरीर एवं मन का विकास तथा शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक बदलाव दिखलाई पड़ता है। 10-12 वर्ष से लेकर 18-19 वर्ष के बालक बालिकाएं इन नयी ऊर्जाओं और परिवर्तनों को स्वीकार करने में असहज महसूस करते है। मानसिक और भावनात्मक परिवर्तन से गुजरते हुए किशोर एवं किशोरियां अपने को छोटे से बड़े होने की दुविधा में उलझा अनुभव करते हैं। इस अवस्था में वह नशा या व्यसन जैसे मकडज़ाल में फँस सकते है ऐसी अवस्था में माता-पिता, अभिभावक एवं अध्यापकों का विशेष दायित्व बन जाता है कि उन पर पैनी नजऱ रखते हुए अच्छे बुरे का बोध करवाते रहे।

नशे की लत के कारण: स्टेटस सिंबल दिखाने कि लिए, कृत्रिम आनंद प्राप्ति कि लिए, तथाकथित प्रसिद्ध/सेलिब्रिटी लोगों की नशे के सेवन को मान्यता, भविष्य उन्मुख दृष्टिकोण से बढ़ता मानसिक एवं आर्थिक तनाव, सदाचार एवं सांस्कृतिक मूल्यों का पतन आदि करणों से भी लोग धीरे-धीरे ड्रग्स की ओर खींचते जा रहे हैं। नशा लेने के कारणों में मानसिक आघात, युवाओं में ब्रेकअप, नौकरी का चले जाना, व्यापार में घाटा, आर्थिक तंगी या गरीबी और अत्यधिक सम्पन्नता, पढ़ाई में कमजोर रहना आदि भी प्रमुख हैं।

किशोर/किशोरियों के साथ मित्रवत खुले वातावरण में बातचीत करें। उनको अच्छे-बुरे, नशे के बारे में समझाएं। इसके साथ साथ उन पर पैनी नजऱ रखें, ड्रग्स के पहुँच से दूर रखने का प्रयास, बच्चों/ किशोर/किशोरियों को खेलकूद, स्वस्थ-मनोरंजक पारिवारिक / सांस्कृतिक/सामाजिक, सकारात्मक एवं रचनात्मक एक्टिविटीज में भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करें।

किशोरों एवं युवाओं में कम उम्र में ही नशे की लत की रोकथाम के लिए समुदाय आधारित हम-उम्र के लोगों का सहयोग लेना अधिक लाभकारी रहेगा। उपदेश या भाषण के स्थान पर साहित्य, पोस्टर, नुक्ड़ नाटिका, लघु नाटिका, डॉक्यूमेंट्री आदि के माध्यम से समझाना अधिक कारगर है।

नशे की लत का समाधान : मादक पदार्थ किसी भी आयु वर्ग के व्यक्ति को अपनी गिरफ्त में ले सकता है। नशा करने वाले व्यक्ति को एक 'खलनायक' के रूप में नहीं बल्कि एक 'मानसिक रोगी' समझकर उसके प्रति व्यवहार विचार एवं उपचार करना होगा। नशे के दुष्प्रभावों के प्रति लोगों को जागरुक करना प्रमुखता से होना चाहिए। आत्म विश्वास के साथ अपने बच्चों को परिवार के सदस्यों को सिखाना पड़ेगा कि नशे को 'ना' मतलब 'ना'। यह 'ना' कहने का भाव प्रारंभ से ही विकसित करना होगा। परिवार, विद्यालय तथा समाज के अन्य लोगों की तरफ से कड़ा संदेश देना होगा। टीवी, सिनेमा, मीडिया, विज्ञापन एवं अन्य साधनों से मादक पदार्थों का प्रचार प्रसार एवं प्रदर्शन रोकने के लिए कड़े नियम बनाने होंगे और उनका कड़ाई से पालन भी करना होगा। नशे में लिप्त तथाकथित 'सेलिब्रिटी' लोगों के अधिक महिमामंडन करने पर प्रतिबंध लगाना होगा। मादक पदार्थों के उत्पादक, व्यापारी, प्रचार प्रसार तथा निर्माण में संलिप्त लोगों पर कड़े कानून बनाकर कड़ी सजा का प्रावधान करना होगा। बार-बार बात करना, अच्छे -अच्छे उदाहरणों एवं 'सक्सेस स्टोरीज' को प्रचारित करना, परिवार से ही नशा ना करने का संदेश मिले ऐसा जन जागरण करना और कड़ी निगरानी आदि उपाय करने से नशे की सुनामी को रोका जा सकेगा। समाज के प्रत्येक व्यक्ति एवं वर्ग, शासन-प्रशासन, अध्यापकों, जन-प्रतिनिधियों, नीति निर्धारकों आदि का दायित्व एवं भागीदारी अधिक महत्वपूर्ण है। सभी भागीदारों को समस्या की गहराई के बारे में बार बार जागरूक करना, संवेदनशील बनना एवं नशा मुक्ति अभियान से जोड़ कर जन अन्दोलन के रूप में आगे बढऩा पड़ेगा। मादक द्रव्यों के व्यसन की समस्या में चिकित्स्कों की महर्वपूर्ण भूमिका है। कुछ विशेष दवाओं जैसे पेन किलर्स, सिरुपस, एंटी एलर्जिक, साइकोट्रॉपिक आदि को लिखते समय रोगी की मनोस्थिति का ध्यान रखना आवश्यक है।

नशे की लत की पहचान, बचाव एवं उपचार में भी चिकित्स्कों का विशेष योगदान रहता है। नशे की लत के शिकार रोगियों के लिए मनोरंजन सुविधाओं के साथ नशा मुक्ति और पुनर्वास केंद्रों की संख्या बढ़ानी चाहिए। बेरोजगार नशे करने वालों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण और अन्य रोजगार कार्यक्रम शुरू करने के लिए प्रशासन, विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों और गैर-लाभकारी संगठनों को शामिल किया जा जाना चाहिए। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग की रोकथाम और पुनर्वास गतिविधियों की प्रबंधन हेतु चिकित्स्कों, काउंसिलरों, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, सामुदायिक नेताओं, धार्मिक नेताओं और शिक्षकों को शामिल करना चाहिए। समाज और सभी स्कूलों, कॉलेजों, अन्य व्यवसायिक संस्थानों में नशीली दवाओं के दुरुपयोग विरोधी गतिविधियों के लिए समय-समय पर जागरूकता शिविर लगाये जाने चाहिए।

जागरूकता सबसे प्रमुख उपाय है। युवा पीढ़ी को व्यस्त रखने के लिए खेलकूद, योग- व्यायाम, कौशल विकास, संयमित प्यार एवं देखभाल, सकारात्मक वातावरण आदि के माध्यम से इस गंभीर समस्या को आगे बढऩे से रोका जा सकेगा। योगआसन, सूर्यनमस्कार, प्राणायाम, डीपब्रीदिंग, अनुलोमविलोम, मुद्राएं, ज्ञानमुद्रा, त्राटक.ध्यान (मैडिटेशन), कुंजल क्रिया, शंख प्रक्षालन आदि का अभ्यास नशानिवारण में सहयोगी हो सकता है।

◆◆◆**लेखक आरोग्य भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।**

भारत रत्न भीमराव अंबेडकर के क्रांतिकारी विचारों की प्रासंगिकता

सुखिया सब संसार है खावै अरु सोवे,
दुखिया दास कबीर है जागै अरु रोवै।'

कबीरदास की ये पंक्तियां केवल कबीरदास पर ही लागू नहीं होतीं, बल्कि उन सभी से इसका सरोकार है, जो भूखे, भयभीत और वांछित समाज के साथ खड़े होते हैं और उनकी मुक्ति के लिए स्वयं जगते और उन्हें जगाते हैं। बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर उन्हीं में से एक थे, जिनका पूरा जीवन दलित और वंचित समाज को न्याय दिलाने में व्यतीत हुआ। उन्हीं के भगीरथ प्रयासों से भारत के संविधान में मुख्यधारा से पिछड़ चुके समाज के लिए स्वतंत्र भारत के संविधान में अनेक प्रावधानों के अंतर्गत सामाजिक न्याय को सुनिश्चित किया गया। न केवल वंचित और दलित अपितु प्रत्येक भारतीय नागरिक के लिए गरिमा व आत्मसम्मान के साथ जीवन जीने के लिए मौलिक अधिकारों की व्यवस्था की गई।

डॉ. चेतराम गर्ग
निदेशक शोध संस्थान नेरी हमीरपुर

धारा 370, समान नागरिक संहिता, नागरिकता संशोधन बिल, मातृशक्ति विधेयक इत्यादि ऐसे कार्य हैं, जिनकी कल्पना कभी डॉ. भीमराव अंबेडकर ने की थी। सामाजिक न्याय और महिला अधिकारों के विषय पर ही तत्कालीन सरकार के साथ उनका विरोध था। जब उनकी बात को सुना नहीं गया तो उन्होंने नेहरू सरकार से त्याग पत्र देना ही बेहतर समझा।

भारतीय संविधान न्याय, समता, स्वतंत्रता और बंधुता पर आधारित है और समतामूलक समाज के निर्माण पर बल देता है। संविधान निर्माण में डॉ. अंबेडकर के योगदान को देखते हुए ही उन्हें संविधान निर्माता के रूप में स्मरण किया जाता है। डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन आजादी के 75 वर्ष बाद भारत में हो रहे सकारात्मक बदलावों के तौर पर देखा जा सकता है। आर्य भारत के मूल निवासी हैं और आर्य भाषा बोलने वाले ही आर्य हैं। जिस समय उन्होंने इस बात को सिद्ध किया, वह ब्रिटिश शासनकाल था। अंग्रेजों को इस सिद्धांत की जरूरत नहीं थी, पर स्वतंत्र भारत भी इस बात को 70 वर्ष तक समझ न सका। हम इस बात से अंदाजा लगा सकते हैं कि भारतीय राजनैतिक मानस किस हद तक यूरोपीय विचार का गुलाम था। आज बड़े स्तर पर इतिहास की विकृतियों पर विमर्श खड़ा हुआ है। इस सारे विचार के पीछे अंबेडकर की भूमिका महत्त्वपूर्ण दिखती है। अंबेडकर ने 1940 में 'भारत विभाजन और पाकिस्तान' पुस्तक लिखी। उसकी भूमिका में वे लिखते हैं 'मैं अनेक महत्वपूर्ण कार्यों को छोड़कर राष्ट्र के महत्वपूर्ण मुद्दे से देश को अवगत करवाना चाहता हूं। कोई भ्रम में न रहे। नारे-नारे रह जाएंगे। एकता और अखंडता की बात राजनीतिक गलियारों से आती रहेगी और जनता खुद अपने को ठगा सा महसूस करेगी। देश का विभाजन हो जाएगा। अब विभाजन रोक पाना मुश्किल है। अंग्रेजों की सांप्रदायिकतापूर्ण नीतियों के सामने हमारे नेताओं ने हथियार डाल दिए हैं। यदि आप यह समझते हैं कि स्वतंत्रता के बाद सांप्रदायिकता का विष कम हो जाएगा, ऐसा होने वाला नहीं है। भारत के लोकतंत्र और विकास के लिए विभाजन हो जाना ही लाभकारी सिद्ध होगा। अंबेडकर को संदेह की दृष्टि से देखने वाले ये भूल जाते हैं कि भारत की एकता और अखंडता के प्रति वे कितने सजग थे। 1942 में उन्होंने कहा था 'यदि भारत के लिए खून बहाने की आवश्कयता पड़ेगी तो उसके लिए अंबेडकर पहला व्यक्ति होगा।' भारत की राजनीति को सांप्रदायिक तुष्टिकरण की दिशा में ले जाने का काम अंग्रेजों ने किया। हम केवल भौगोलिक दृष्टि से भी सुसंगठित नहीं हैं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक एकता भी अविच्छिन्न और अटूट है। भारत की संस्कृति जोड़ने में विश्वास करती है। बहु-देववाद हमारी विशिष्टता है, कमजोरी नहीं। भारत की सहन क्षमता अपार है। सब कुछ सहन करते हुए भारत उभरा ही नहीं, बल्कि आज दुनिया के केंद्र में आ खड़ा हुआ है।

आज की युवा पीढ़ी को बाबा साहेब के जीवन, संघर्ष और उनके विचारों की गहराई एवं महता से भलीभांति अवगत होकर प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्हें मालूम होना चाहिए कि देश में लोकतंत्र, समाजवादी, आर्थिक व्यवस्था, समानता का अधिकार व सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने में डॉ. भीमराव अंबेडकर की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण थी। वास्तव में बाबा साहेब के चिंतन-दर्शन में हर जाति, वर्ग, समुदाय की मुक्ति और उत्थान के बीज समाहित हैं, लेकिन अफसोस इस बात का है कि उन्हें केवल दलित वर्ग के मसीहा के रूप में ही स्थापित कर दिया गया है। आज जरूरत इस बात की है कि अंबेडकर के विचारों को इस देश का हर तबका अपनाए, तभी सम्यक विकास और समरसता स्थापित हो सकती है। विश्व में भारत विश्वास और अटूट सामर्थ्य का पर्याय बन चुका है। अर्थव्यवस्था के स्तर पर भी भारत की मजबूत स्थिति बनी हुई है। भारत विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। वर्तमान सरकार ने 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य निर्धारित किया है। भारत की वर्तमान विकास दर और नेतृत्व क्षमता को देखते हुए यह कार्य अधिक कठिन नहीं प्रतीत होता, किंतु वर्तमान में प्रचलित रेवड़ी संस्कृति, राजनीतिक भ्रष्टाचार, लोकतंत्र में विचार-विमर्श का गिरता स्तर, सकारात्मक विपक्ष की भूमिका का अभाव इत्यादि ऐसे मुद्दे हैं, जिनका समय रहते हल ढूंढना आवश्यक है, तभी भारत समयबद्ध अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल हो पाएगा और यही बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के क्रांतिकारी विचारों की प्रासंगिकता सिद्ध हो सकेगी। ◆◆◆

शुद्ध अंत:करण ही असल तीर्थ

महामुनि अगस्त्य जी श्रीशैल पर्वत पर अपनी पत्नी लोपामुद्रा से धर्म चर्चा कर रहे थे। लोपामुद्रा परम विदुषी थीं। एक दिन उन्होंने महामुनि से पूछा - धर्मशास्त्रों में पवित्र तीर्थों की महिमा भरी पड़ी है। तीर्थयात्रा व तीर्थ निवास को अनेक पुण्यों का प्रदाता माना जाता है। जो साधनहीन व्यक्ति, वृद्ध और अपाहिज तीर्थ न कर पाएं, उन्हें इस कर्तव्य का पालन कैसे करना चाहिए?

महर्षि अगस्त्य ने बताया, तीर्थ भ्रमण में मानसी तीर्थों की महिमा सर्वोपरि है। साधनहीन व्यक्ति घर बैठे ही सदाचार का पालन कर तीर्थयात्रा का पुण्य प्राप्त कर सकता है। सत्य और क्षमा तीर्थ हैं। इंद्रियों को वश में रखना भी तीर्थ का पुण्य देता है। जो व्यक्ति दयावान होता है और जिसका अंत:करण शुद्ध-सात्विक होता है, वह घर बैठे ही तीर्थों का पुण्य प्राप्त कर लेता है। यदि मन का भाव शुद्ध न हो, तो दान, यज्ञ, तप, शास्त्रों का श्रवण, स्वाध्याय-सभी व्यर्थ हैं। ज्ञान रूपी जल से स्नान करके पवित्र नदियों के स्नान का पुण्य प्राप्त होता है।

ज्ञान रूपी जल राग-द्वेषमय मल को दूर करने की क्षमता रखता है। जिसका मन डावांडोल रहता है, वह तीर्थ का फल नहीं प्राप्त कर पाता। असंयमी, अश्रद्धालु व संशयात्मा कितने ही तीर्थों की खाक छान ले, उसे पुण्य नहीं मिलता। अपने महामुनि पति के श्रीमुख से सच्चे तीर्थों की महिमा जानकर लोपामुद्रा भाव विभोर हो उठीं। ◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

1. त्रिगर्त का कौन सा राजा महाभारत में कौरवों की तरफ से लड़ा था?
   (क) भूमी चंद (ख) संसार चंद (ग) सुशर्मा चंद्र (घ) इनमें कोई नही।
2. गुरु गोविंद व पहाड़ी राजाओं के बीच भंगानी में युद्ध कब लड़ा गया था?
   (क) 1684 (ख) 1686 (ग) 1688 (घ) इनमें कोई नहीं
3. झुग्गा सत्याग्रह किस रियासत में हुआ था?
   (क) बिलासपुर (ख) सिरमौर (ग) बुशहर (घ) इनमें कोई नहीं
4. हिमाचल दिवस कब मनाया जाता है?
   (क) 15 अप्रैल (ख) 25 जनवरी (ग) 1 नवम्बर (घ) इनमें कोई नहीं
5. किस चम्बा के राजा ने मुगल बादशाह औरंगजेब के मंदिर गिराने के आदेश को मानने से मना कर दिया?
   (क) चतर सिंह (ख) पृथ्वी सिंह (ग) उदय सिंह (घ) इनमें कोई नहीं
6. निम्न में से किसे पहाड़ी गांधी के नाम से जाना जाता है?
   (क) बाबा रामदेव (ख) बाबा कांशी राम (ग) बाबा बड़भाग सिंह
7. हिमाचल में किस जिले को मशरूम जिले के रूप में जाना जाता है?
   (क) सिरमौर (ख) शिमला (ग) सोलन (घ) लाहौल-स्पिति
8. हिमाचल की कौन सी रियासत भारतीय संघ में सबके बाद विलय हुई थी?
   (क) जुब्बल (ख) क्योंथल (ग) बिलासपुर (घ) भज्जी
9. चंद्रधर शर्मा गुलेरी अपनी किस कहानी के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं?
   (क) उसने कहा था (ख) बुद्धू कांटा (ग)सुखमय जीवन (घ) इनमें कोई नहीं
10. हिमाचल प्रदेश का राज्य पक्षी कौन है?
    (क) मोनाल (ख) जुजुराना (ग) मोर (घ) इनमें कोई नहीं

उत्तर : प्रश्न 1 (ग-सुशर्मा चंद्रा) प्रश्न 2 (ख- 1686)
प्रश्न 3 (क- बिलासपुर) प्रश्न 4 (क-15 अप्रैल) प्रश्न 5 (क- चतर सिंह)
प्रश्न 6 (ख- बाबा कांशी राम) प्रश्न 7 (ग- सोलन) प्रश्न 8 (ग- बिलासपुर)
प्रश्न 9 (क- उसने कहा था) प्रश्न 10 (ख-जुजुराना)

चुटकुले

एक नया चित्रकार जब भी कोई पेंटिंग बनाता था उनमें वह पशुओं को हमेशा पानी में खड़े दिखाता था।

किसी ने कारण पूछा,' आपकी पेंटिंग में पशु हमेशा पानी में खड़े क्यों दिखाई देते हैं?'

चित्रकार बोला, 'दरअसल, बात यह है कि अभी तक मुझे पशुओं के खुर बनाने नहीं आए।'

◆◆◆

एक पेटू किसी बड़े शहर में रिश्तेदारों के घर गया। गृहिणी ने चार सब्जियां बनाईं और एक कटोरी में थोड़ी-थोड़ी दे दी। पेटू एक-एक निवाले के साथ सब सब्जियां खाकर बोला, 'बहन जी, अब सब्जी भी डालेंगी या सैंपल ही दिखाती रहेंगी।'

◆◆◆

एक नेता जी एक गांव में गए और ग्रामीणों से पूछा,'' आपको कोई समस्या है तो मुझे बताएं, मैं तुरंत हल कर दूंगा?''

गांव वाले, जी, हमारी दो समस्याएं हैं?

नेता, 'बताएं?' ग्रामीण, 'हमारे गांव में कोई डॉक्टर नहीं है।'

नेता जी ने तुरंत मोबाइल पर किसी से बात की और फिर बोले, 'लो ये काम तो हो गया..... अब दूसरा बताओ?'

ग्रामीण, 'हमारे गांव में कोई मोबाइल नेटवर्क भी नहीं है।' नेता जी बगले झांकने लगे।

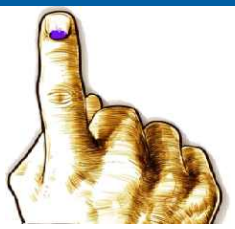

विकसित भारत
की ओर बढ़ते कदमों के निशान

सड़क नेटवर्क	भ्रष्टाचारमुक्त शासन	सशक्त विकास	सार्वजनिक क्षेत्र का सुदृढीकरण	हस्तशिल्प को बढ़ावा	इलेक्ट्रिक वाहन, शहरी परिवहन	उत्तर पूर्वी (एनई) विकास
राजकोषीय अनुशासन	महिलाओं को 33 फीसदी सीटें	गरीबों को आवास	कर सरलीकरण	विश्वकर्मा सम्मान योजना	आयुर्वेद परंपरा का पुनरुद्धार	वन रैंक वन पेंशन
व्यापक हवाई अड्डे	दीर्घकालिक दृष्टि	जन-धन बैंक खाते	गैस कनेक्शन	कर दरों में कमी	अनुच्छेद 370, 35-ए	जवाबदेह नौकरशाही
आतंकवाद में कमी	नक्सलवाद पर नकेल	अंतरिक्ष क्रांति	सेना को सशक्त करना	गरीबों के लिए नल पर जल	बैंक सुदृढ़ीकरण	महँगाई पर नियंत्रण
व्यापार करने में आसानी	उद्योग के लिए वित्तीय प्रोत्साहन	सामाजिक न्याय	वैश्विक सम्मान एवं मान्यता	सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़कें	विद्युतीकृत घर	फास्ट ट्रैक पर रेलवे
चीन को मात	विश्वभर में मैत्री संबंध	जी20 में अफ्रीका को न्याय	स्टार्टअप इकोसिस्टम	सशक्त जल नौसेना	प्रत्यक्ष लाभ अंतरण	गरीबों के लिए अनाज
सतत् कृषि विकास	श्रीराम मंदिर	स्वच्छ गंगा मिशन	वैक्सीन क्रांति, कूटनीति	घरेलू रक्षा उद्योग	पाकिस्तान उपद्रव पर लगाम	वैश्विक सौर गठबंधन
कृषक से लेकर ऊर्जा उत्पादक तक	वैश्विक मंच पर योग	जीएसटी कार्यान्वयन	तीन तलाक रोकना	राष्ट्रव्यापी सीएनजी नेटवर्क	निर्णयों में दृढ़ विश्वास	ग्रीन हाइड्रोजन
शौचालय क्रांति	नई शिक्षा नीति	नेताजी के योगदान को न्याय	'शरियाना' बाजरा पर फोकस	गरीबों के लिए स्वास्थ्य बीमा	जैव ईंधन क्रांति	कुशल विदेश नीति
सबका साथ सबका विकास	2016 में नकली नोटों पर रोक	सक्रिय शासन	देश में पर्यटन अवसर	भुगतान क्रांति	आत्मनिर्भरता पर ध्यान	मेक इन इंडिया
खादी क्षेत्र में क्रांति	सूचनादायी वेब-पोर्टल	कृषि उत्पादों के लिए ई-बाजार	न्यूनतम सरकार	प्राचीन धार्मिक परिपथों का विकास	डिजिटल इंडिया	स्वच्छ भारत
नि:स्वार्थ निरंतर प्रयास	नया संसद भवन	जरूरतमंद देशों की मदद	जी20 की सफलता	जनता की भागीदारी	नया कानूनी ढांचा	औपनिवेशिक अवशेष हटाना
राज्यों का निधि विकास बढ़ाना	सांस्कृतिक पुनर्जागरण	आधुनिक हवाई अड्डे	सी.ए.ए	दिवालियापन विनियमन	कोविड में उत्कृष्ट प्रबंधन	घरेलू खरीद को प्राथमिकता
कौशल विकास मिशन	निजी उद्योगों को बढ़ावा	MSME के लिए समर्थन : मुद्रा	प्रतिष्ठित रेलवे स्टेशन	समान नागरिक संहिता	बेनामी कंपनियों पर कार्रवाई	सशक्त विदेशी निवेश
पूर्वोत्तर आतंकवाद समूह मुख्यधारा में लाना	रोजगार सृजन में तीव्रता	जनता से निरंतर संवाद				

संकलनकर्ता
डॉ. अभिजीत फडनीस
(राष्ट्रीय रैंकधारक सीए, सीएमए, सीएस सीएफए (भारत), पीएचडी (आईआईटी बॉम्बे)

प्रचालनाधीन परियोजनाएंः

- 1500 मेगावाट नाथपा झाकड़ी जल विद्युत स्टेशन
- 412 मेगावाट रामपुर जल विद्युत स्टेशन
- 47.6 मेगावाट खिरवीरे पवन विद्युत स्टेशन
- 5.6 मेगावाट चारंका सौर पींवी विद्युत स्टेशन
- 50 मेगावाट साडला पवन विद्युत स्टेशन
- एनजेएचपीएस में 1.31 मेगावाट ग्रिड कनैक्टिड सौर विद्युत स्टेशन
- 75 मेगावाट परासन सौर विद्युत स्टेशन
- 400 केवी, डी/सी क्रास बार्डर ट्रासमिशन लाईन (भारतीय हिस्सा)

विकासाधीन परियोजनाएंः

- भारत के विभिन्न राज्यों में जल विद्युत परियोजनाएं
- नेपाल में जल परियोजनाएं
- बिहार में ताप परियोजना
- भारत के विभिन्न राज्यों में सौर विद्युत परियोजनाएं
- ट्रांसमिशन लाइनों का निष्पादन

एसजेवीएन लिमिटेड

SJVN Limited

(भारत सरकार एवं हिमाचल प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)

एक 'मिनी रत्न' एवं शेड्यूल 'ए' पीएसयू। एक आईएसओ 9001:2005 प्रमाणित कम्पनी

पंजीकृत कार्यालय : एसजेवीएन लिमिटेड, शक्ति सदन, कॉरपोरेट मुख्यालय, शनान, शिमला–171006, हिमाचल प्रदेश (भारत)

एक्सीपीडाइटिंग कार्यालय : ऑफिस ब्लाक, टॉवर–1, 6वीं मंजिल, एनबीसीसी कॉम्पलैक्स, ईस्ट किदवई नगर, नई दिल्ली–110023 (भारत)

वेबसाइट : www.sjvn.nic.in

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेस - 9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित।

follow us on :